RNI-PUNMUL/2013/56306 L-6/PB/LDC/0749/2015-17

SEPTEMBER 2015
Vol. 1, Issue-16

ਸਿਹਤ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਜਾਗਰੁਕਤਾ ਦਾ ਤ੍ਰੈਭਾਸ਼ੀ ਮਾਸਿਕ ਮੈਗਜ਼ੀਨ

Punarjot Guldasta

ਪੁਨਰਜੋਤ ਗੁਲਦਸਤਾ | पुनरजोत गुलदस्ता

Journalism of Humanity

I make candles
to bring light to your life

Can you do the same for me?

ENLIGHT SOMEONE'S WORLD BY DONATING YOUR EYES

ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ (ਰਜਿ.), ਲੁਧਿਆਣਾ।

30ਵੇਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਜਲੰਧਰ ਵਿਖੇ ਹੋਏ ਸਮਾਗਮ ਦੌਰਾਨ ਸ੍ਰੀਮਤੀ ਵਿੰਨੀ ਮਹਾਜਨ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸੈਕਰੇਟਰੀ, ਸਿਹਤ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ ਪੰਜਾਬ, ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ (ਲੁਧਿਆਣਾ) ਦੀ ਐਂਬੂਲੈਂਸ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਲਈ ਰਵਾਨਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ। ਤਸਵੀਰ ਵਿੱਚ ਡਾ. ਰਕੇਸ਼ ਗੁਪਤਾ, ਸਟੇਟ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਅਫਸਰ (ਐਨ.ਪੀ.ਸੀ.ਬੀ.) ਅਤੇ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਸਕੱਤਰ ਸ੍ਰੀ ਸੁਭਾਸ਼ ਮਲਿਕ ਵੀ ਵਿਖਾਈ ਦੇ ਰਹੇ ਹਨ।

ਸ੍ਰੀ ਅਸ਼ੋਕ ਮਹਿਰਾ, ਕੋਆਰਡੀਨੇਟਰ ਪੁਨਰਜੋਤ ਬਰਾਂਚ ਫਗਵਾੜਾ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਹੇਠ 30ਵੇਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਫਗਵਾੜਾ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿਚ ਚੇਤਨਾ ਰੈਲੀ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ।

PUNARJOT GULDASTA -
- Trilanguage Monthly Magazine

Registered with
Registrar of Newspaper for India
Under No. PUNMUL/2013/56306
19-01-2013
September - October, 2015
Volume 1 Issue 15

Editor
Dr. Ramesh Chand
M.D. (Eye Specialist), State Awardee

Sub-Editor
Dr. Kuldeep Singh (Ph.D.)
(Hindi Section)

Jatinder Singh Pamal
Ex. DPRO

Ranjit Jhaner

Owner, Printer, Publisher & Editor
Dr. Ramesh Chand
Printed at:
FOIL Printers
2051, Gobind Nagar, Ludhiana

Registered Office
65-A, Bhai Randhir Singh Nagar, Ludhiana

Address for sending the matter:
'PUNARJOT GULDASTA'
65-A, Bhai Randhir Singh Nagar, Ludhiana
Contact:
0161-2464999, 98143-31433
Fax : 0161-2463999
Website : www.punarjot.com
E-mail: rameshpunarjot@yahoo.com

ਮੈਂਬਰਸ਼ਿਪ ਫੀਸ:

ਇੱਕ ਸਾਲ	250/-
ਦੋ ਸਾਲ	500/-
ਵਿਦੇਸ਼ ਇੱਕ ਸਾਲ	1000/-

ਕੀਮਤ 20/- ਰੁਪਏ Rs. 20/-

ਤੱਤਕਰਾ

सरदार भगत सिंह की कुर्बानी और नौजवानों का फर्ज़	डॉ. रमेश (संपादक)	4-6
ਸੰਦੇਸ਼		7-8
ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ	ਪੁਨਰਜੋਤ ਗੁਲਦਸਤਾ ਬਿਊਰੋ	9
How can I become an eye donor?	Punarjot Guldasta Bureau	10
ਡਾਇਬਿਟਿਕ ਰੈਟੀਨੋਪੈਥੀ	ਪੁਨਰਜੋਤ ਗੁਲਦਸਤਾ ਬਿਊਰੋ	11
ਸੇਵਾ ਦੇ ਫੁੱਲ ਅਤੇ ਸੈਲਫੀ ਕਲਚਰ	ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ (ਸੰਪਾਦਕ)	12-14
आओ! कुछ नया सोचें	डॉ. कुलदीप सिंह (सह–संपादक)	15-16
आँखें	रजनी विजय सिंगला	16
ਮਨੁੱਖਾ-ਜੀਵਨ ਦਾ ਮੂਲ ਮੰਤਵ	ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ	17-18
ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ (ਰਜਿ.) ਦੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦੀ ਰਿਪੋਰਟ	ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਸਹਿ ਸੰਪਾਦਕ)	19-22
ਦੀਦੋ (ਕਹਾਣੀ)	ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ (ਸੰਪਾਦਕ)	23-26
दिल का मामला है – विश्व हृदय दिवस पर विशेष	डॉ. कुलदीप सिंह (सह–संपादक)	27-28
ਦਾਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗਾ, ਚੰਗਾ ਹੈ ਜੇ ਨੇਤਰਦਾਨ	ਸਵ: ਚਰਨਜੀਤ ਸਿੰਘ ਦੋਸ਼ੀ	29
ਪੁਨਰਜੋਤ ਖਬਰਨਾਮਾ	ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਸਹਿ ਸੰਪਾਦਕ)	30-32
30ਵੇਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦੌਰਾਨ ਨੇਤਰਦਾਨੀਆਂ ਦੀ ਸੂਚੀ	ਪੁਨਰਜੋਤ ਗੁਲਦਸਤਾ ਬਿਊਰੋ	33
ਸਾਡੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਅਤੇ ਟੈਲੀਜ਼ਿਨ	ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ (ਸੰਪਾਦਕ)	34
ਕੰਪਿਊਟਰ ਵੀਜ਼ਨ ਸਿਨਡ੍ਰੋਮ (ਸੀ ਵੀ ਐਸ) ਤੋਂ ਬਚਣ ਲਈ ਦਸ ਸੁਝਾਅ	ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ (ਸੰਪਾਦਕ)	35
ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ - ਪਿੰਡ ਭੱਠਾ ਧੂਹਾ ਹੈ ਮਹਾਨ	ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਸਹਿ ਸੰਪਾਦਕ)	36
ਪਤਿਤਪੁਣੇ ਤੇ ਨਸ਼ਿਆਂ ਖ਼ਿਲਾਫ ਜ਼ੋਰਦਾਰ ਪ੍ਰਚਾਰ ਹੈ (ਫਿਲਮ ਸੋਚ)	ਰਵੀ ਦੇਵਗਨ	37
नेत्रदान संस्था नवांशहर की रिर्पोट	पुनरजोत गुलदस्ता ब्यूरो	38

ਬੇਨਤੀ

ਲੇਖਕਾਂ ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਨਾਲ ਸੰਪਾਦਕ ਦਾ ਸਹਿਮਤ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਨਹੀ, ਇਹ ਲੇਖਕਾਂ ਦੇ ਨਿਜੀ ਵਿਚਾਰ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਪੁਨਰਜੋਤ ਨੂੰ ਹਰ ਘਰ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਬਨਾਉਣ ਲਈ ਪਾਠਕਾਂ ਅਤੇ ਲੇਖਕਾਂ ਨੂੰ ਬੇਨਤੀ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਨੂੰ ਹੋਰ ਬਿਹਤਰ ਬਨਾਉਣ ਲਈ ਆਪਣੇ ਸੁਝਾਅ ਅਤੇ ਰਚਨਾਵਾਂ ਭੇਜਣ। – ਸੰਪਾਦਕ

For more Information and our Magazines please visit our official web site/facebook pages.
https://www.facebook.com/ramesh077ludhiana?fref=ts
https://www.facebook.com/RameshPunarjot?fref=ts
our website : www.rameshvision.com

सरदार भगत सिंह की कुर्बानी और नौजवानों का फर्ज़

डॉ. रमेश

हम रूखा सूखा खायेंगे
भारत पर वारे जायेंगे
हम सूखे चने चबायेंगे
भारत की बात बनाएँगे
हम नंगे उम्र बितायेंगे
भारत पर जान मिटायेंगे

ये जोशीली, पंक्तियां स. भगत सिंह एवं उनके अन्य क्रान्तिकारी वीर हर समय गुनगुनाते रहते थे। महज 23 साल की उमर में देश की खातिर हंसते–हंसते फांसी का फंदा चूम कर देश की आजादी के लिए, हमारे बेहतर जीवन के लिए, हमारे सुनहरे भविष्य के लिए अपने आप को देश के लिए कुर्बान कर देना बहुत बड़ी बात है।

हम हर साल 28 सितम्बर को शहीद–ए–आजम स. भगत सिंह का जन्मदिन मनाते हैं। शायद हम में से बहुत सारे यह समझते होंगे कि इस दिन सरकारी छुट्टी हो गई है चलो मौज मनाएँ, लेकिन यह नहीं सोचते कि स. भगत सिंह को अपने यौवन में कुर्बानी देने की जरूरत क्यों पड़ी होगी? वह भी तो हमारी तरह अपनी जिंदगी का आनन्द ले सकते थे। ऐसी लासानी शख्सियत का जन्म उस समय हुआ जब हमारा देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा था। उनके जन्म के दिन ही उनके चाचा अजीत सिंह अंग्रेजों की जेल से रिहा हुए थे। उस दिन घर में जैसा खुशी का माहौल रहा होगा। उसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। देश पर कुर्बान होने का जज़्बा उन्हें विरासत में मिला था। भगत सिंह बचपन से ही अपने साथियों में एक अद्भुत नेता के रूप में प्रसिद्ध थे।

1919 के जलियाँवाला बाग के नरसंहार के समय भगत सिंह की उमर 12 साल की रही होगी जब वह वहां की खून से भिगी मिट्टी को अपनी मुठ्ठी में भर लाया था। उस समय उसके मन पर क्या बीती होगी। कितना दुःख महसूस किया होगा इसका हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते।

भगत सिंह के परिवार वालों ने जब शादी के लिए उसकी राय जाननी चाही तो उसने शादी करने से साफ इनकार कर दिया और कहा कि मैं नहीं चाहता आपकी बहू गुलाम देश की बहू बने। पहले मैं अपने देश को आजाद करवाना चाहता हूँ। ऐसा जज़्बा एवं उदाहरण शायद ही दुनिया में कहीं मिल सके।

भगत सिंह की सोच, उनकी कुर्बानी का उदाहरण हमारे युवा वर्ग एवं समूह समाज के लिए एक महान् प्रेरणा का स्रोत है। उनका विचार था कि इस भौतिक शरीर की इतनी अहमियत नहीं है जितनी की मनुष्य की सोच और विचारों की अहमियत है। क्रांति तो विचार ही ला सकते हैं। शरीर तो महज क्रांतिकार करने के लिए नींव का काम करते हैं। हमारी कुर्बानी देश की आजादी के लिए नींव का काम करेगी। हमारी कुर्बानी के बाद देश के नौजवान उठेंगे। गुलामी की जंजीरों को तोड़ देंगे और आजादी हासिल कर लेंगे तथा हमारा देश खुशहाल होगा। ऐसी कल्पना करके उन्होंने एक नई विचारधारा की शुरूआत

की। उन्हें आशा थी कि आने वाली पीढियां उनके नक्शे कदम पर चल कर हमारे देश की काया पलट देंगी। ऐसा हुआ भी। आजादी का अन्दोलन तीव्र हुआ और कुर्बानियाँ हुईं। देश भक्तों ने यातनाएं सहीं और आखिर देश आजाद हुआ। आजादी के बाद भी हमारे पूर्वजों ने देश को आत्म निर्भर करने में अनथक मेहनत करके भारत वर्ष को दुनिया के प्रगतिशील देशों की कतार में ला कर खडा कर दिया।

स. भगत सिंह ने भरी जवानी में अपनी जिंदगी की कुर्बानी देकर गुलामी के खेत में आजादी का बीज बोया। उस बीज को हमारे देश भक्तों ने और कुर्बानियां एवं यातनाएँ सह कर हमारे लिए खुशहाली एवं आजादी के वृक्ष के रूप में पाला पोसा। आज इस वृक्ष में जो फल लग रहे हैं उनका आनन्द हम उठा रहे हैं।

लेकिन अफसोस के साथ यह कहना पड़ रहा है कि हमारे नौजवान जो इस फल का आनन्द ले रहे हैं शायद हमारे देश भक्तों द्वारा दी गई कुर्बानियां के बारे में बहुत कम जानकारी रखते हैं।

जीवन में थोड़ी–सी कठिनाई या असुविधा हो जाने पर आज का नौजवान बहुत व्याकुल एवं असहज महसूस करता है वह देश में आई खुशहाली एवं उन्नति से मिली ऐशो आराम, तकनीक एवं संचार के माध्यमों जैसे मोबाईल एवं इंटरनेट जैसी सुविधाओं को भोगने में ही अपनी भलाई महसूस करता है। वह देश की तरक्की को ऐशो आराम एवं बिलासिता के रूप में सिर्फ उसे भोगना चाहता है। उसे बाई प्रोडक्ट के रूप में इस्तेमाल कर रहा है तथा स्वयं ईमानदारी एवं मेहनत से देश की सेवा में कोई योगदान नहीं कर रहा है।

आज का नौजवान सोचता है कि मुझे क्या लेना है? मेरे अकेले से क्या होगा? भगत सिंह ने जब अपनी कुर्बानी के बारे में मन बनाया होगा उसने सोचा होगा कि जब वह खुद एक मिसाल बनेगा तब देश के और नौजवान एवं जनता भी आजादी के अन्दोलन में शामिल होंगे। यदि वह भी हमारी तरह सोच लेता कि मेरे अकेले से क्या होगा तो शायद आज हम भी गुलामी के नर्क में जी रहे होते।

यदि हम अपने देश भक्तों एवं शहीदों की सोच का सम्मान करना चाहते हैं तो हमें अपने आप में बदलाव लाना होगा सबसे पहले हमें जीवन के प्रति नाकारत्मक रवैये को दूर करना पड़ेगा।

हमें अपनी जीवन शैली में ईमानदारी एवं मेहनत को अपनाना पड़ेगा। शुरुआत हमें पढाई से करनी होगी। बिना नकल किए सफलता के बारे सोचें, बहुत से नौजवानों ने नकल करने को जिन्दगी का अहम हिस्सा बना लिया है। नकल से मिली नकली कामयाबी ज्यादा देर नहीं टिकती।

हम समाज के किसी भी क्षेत्र में काम करें, सदा लगन से ईमानदारी से करें जिससे सब का फायदा हो, देश का फायदा हो। हम अपने देश वासियों के साथ दुर्भावना, चोरी एवं ठगी तथा धोखे से दूसरों से आगे निकलने की कोशिश न करें, जिन्दगी में कुछ भी बनें, बनें तो एक मिसाल, चाहे डॉक्टर, इंजीनियर या राजनेता। बस मन में एक ही तमन्ना हो। जैसे भरी जवानी में शहीदे–ए–आजम भगत सिंह एवं उनके साथियों ने हमारे लिये कुर्बानी देकर हमें आज आराम पहुंचाया है हम भी ऐसा ही काम अपनी मेहनत से अपने देश के बेहतर भविष्य के लिए करें ताकि हमारी आने वाली पीढियों हमें याद करें। सोचें कि भगत सिंह ने जो सपना अपने दिल में संजोया था वैसा ही हमारा देश बन पाया है? उन्होंने अपनी हस्ती मिटा कर एक नई सोच को जन्म दिया था जो आज भी जिंदा है और हमने उसे सिर्फ आगे जिंदा

ही नहीं रखना बल्कि उस सपने को साकार कर एक खुशहाल देश के निर्माण में अपना अहम योगदान करना है। भगत सिंह ने हमारे लिए संदेश दिया था –

मेरी हवा में रहेगी खियाल की खुश्बू
या मुशते–खाक है फानी, रहे न रहे।
दिल से निकलेगी ना, मर कर भी वतन की उलफत
मेरी मिट्टी से भी खुशबू–ए–वतन निकलेगी।।

भारत का नौजवान आज मानसिक हीन भावना, नशे, जैसी सामाजिक कुरीतियों का शिकार बन चुका है। उसके लिए स. भगत सिंह का एक संदेश है कि जो हसंते–हंसते निस्वार्थ हो कर देश की खातिर फांसी के फंदे पर झूल गया। यह काम सिर्फ अपने शीश की कुर्बानी देने वाला युद्धवीर का ही हो सकता है।

आज के नौजवानों को अपने व्यक्तिव के कमजोर पहलुओं को काबू करके एक जुट हो कर देश की तरक्की में शामिल होना चाहिए जो संदेश हमें भगत सिंह दे कर गया उनके जन्म दिन के लिए हमारी तरफ से यही तोहफा भगत सिंह की सोच के लिए होगा।

नौजवान वर्ग को राजनीतिक स्तर पर भी ईमानदारी से शामिल होना चाहिए। हम देश वासियों को एक वोटर की हैसियत से बिल्कुल सजग एंव ईमानदार होना चाहिए। हम सब की जिम्मेवारी बनती है कि हमें अपने आप में बदलाव या क्रांति लानी चाहिए तभी समूह समाज में बदलाव आएगा। तथा हमारा देश तरक्की करेगा। हम दूसरे से उम्मीद न रखें हम खुद एक पहल करें। यदि हमने अपने आप में बदलाव कर लिया तो कम से कम इस संसार में दिमागी तौर पर, एक नया भगत सिंह का जन्म अपने आप में पैदा कर भगत सिंह की सोच की लहर का हिस्सा बन समाज में बदलाव ला सकेगा।

अपने महान देश को आगे ले जाने के लिए चुस्त दुरूस्त नौजवानों की जरूरत है। लेकिन अफसोस है कि हमारा युवा वर्ग शायद रास्ते से भटक गया है। अपने कंधों पर जिम्मेदारी न उठा कर लड़खड़ा कर चलने में ही अपनी भलाई समझ रहा है। अब गहरी नींद से उठने का समय आ गया है क्योंकि भगत सिंह द्वारा दी गई सोच से हमारे देश का सर्वपक्ष विकास सिर्फ अब युवावर्ग के ऊपर ही निर्भर है। आओ हम शहीदे–ए–आजम भगत सिंह के जन्मदिन पर उनकी पवित्र सोच पर, अपनी सोच, मेहनत, लगन, आदर्श का उपहार देकर एक नये युग का आगाज करके अपने देश को समूह संसार में पहली पंक्ति में ला कर भारत माता को खुशहाल कर और शहीदों की कुर्बानियों का कुछ तो मूल्य उतारें।

डॉ. रमेश
एम.डी. (स्टेट अवार्डी)

नेत्रदान का संकल्प ले, ताकि किसी का अंधेरा जीवन उजाले से भर जाए।

ਸੰਦੇਸ਼

ਮੈਨੂੰ ਇਹ ਜਾਣਕੇ ਖੁਸ਼ੀ ਹੋਈ ਹੈ ਕਿ ਅਦਾਰਾ ਪੁਨਰਜੋਤ ਗੁਲਦਸਤਾ ਤ੍ਰੈ-ਭਾਸ਼ੀ ਮਾਸਿਕ ਮੈਗਜ਼ੀਨ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਲਈ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਅੰਕ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਸ਼ਲਾਘਾਯੋਗ ਕਦਮ ਹੈ। ਇਸ ਮੈਗਜ਼ੀਨ ਰਾਹੀਂ ਆਪਜੀ ਵਲੋਂ ਜਿਥੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਿਹਤ ਸਿਖਿਆ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸਿੱਖਿਆ ਨਾਲ ਜੋੜਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਉਥੇ ਹੀ ਇਹ ਮੈਗਜ਼ੀਨ ਕੌਮੀ ਸਦਭਾਵਨਾ ਦਾ ਵੀ ਪ੍ਰਤੀਕ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ।

ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਵਲੋਂ ਵੀ ਰਾਜ ਅੰਦਰ ਬਿਹਤਰ ਸਿਹਤ ਸਹੂਲਤਾਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨ ਅਤੇ ਚੰਗੀ ਸਿਹਤ ਸਬੰਧੀ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਕਈ ਅਹਿਮ ਉਪਰਾਲੇ ਕੀਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ।

ਪੁਨਰਜੋਤ ਗੁਲਦਸਤਾ ਮੈਗਜ਼ੀਨ ਦੇ ਤਿੰਨ ਭਾਸ਼ਾਈ ਅੰਕ ਦੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨਾ ਲਈ ਮੁੱਖ ਸੰਪਾਦਕ ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਵਧਾਈ ਦੇ ਪਾਤਰ ਹਨ ਅਤੇ ਮੈਂ ਆਸ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਆਣ ਵਾਲੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਉਹ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਮੁੱਚੀ ਟੀਮ ਮਨੁੱਖਤਾ ਦੀ ਵੱਧ ਚੜ੍ਹ ਕੇ ਸੇਵਾ ਕਰਦੇ ਰਹਿਣਗੇ।

ਸੁਰਜੀਤ ਕੁਮਾਰ ਜਿਆਣੀ
ਸਿਹਤ, ਪਰਿਵਾਰ ਭਲਾਈ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸੁਰੱਖਿਆ
ਤੇ ਇਸਤਰੀ ਤੇ ਬਾਲ ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ, ਪੰਜਾਬ।

ਅੱਖਾਂ ਕਰ ਦਿਓ ਦਾਨ, ਮਰਨ ਬਾਅਦ, ਅੱਖਾਂ ਕਰ ਦਿਓ ਦਾਨ
ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਲੋਕੋ, ਹੈ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਨੁਕਸਾਨ।

ਸੰਦੇਸ਼

ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਪਿਛਲੇ 22 ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਵਿਚ ਅਹਿਮ ਰੋਲ ਅਦਾ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਸਦਕਾ ਇਹ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਵਿਚ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਪਹਿਲੇ ਨੰਬਰ ਤੇ ਹੈ।

ਇਸ ਵਾਰ ਸੁਸਾਇਟੀ ਵਲੋਂ ਸਿਹਤ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸਿੱਖਿਆ ਤੇ ਅਧਾਰਿਤ ਆਪਣਾ ਤ੍ਰੈ-ਭਾਸ਼ਈ ਮੈਗਜ਼ੀਨ "ਪੁਨਰਜੋਤ ਗੁਲਦਸਤਾ" ਦਾ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਸਬੰਧੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਅੰਕ ਕੱਢਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਅੰਕ ਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਤ ਹੋਣ ਨਾਲ ਆਮ ਲੋਕ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਗਰੂਕ ਹੋਕੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚੋਂ ਨੇਤਰਹੀਣਤਾ ਦੂਰ ਕਰਨ ਵਿਚ ਸਹਾਈ ਹੋਣਗੇ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਏਕਤਾ, ਅਖੰਡਤਾ ਅਤੇ ਆਪਸੀ ਭਾਈਚਾਰਾ ਮਜ਼ਬੂਤ ਹੋਵੇਗਾ।

ਸੁਭਾਸ਼ ਮਲਿਕ
ਆਨਰੇਰੀ ਸਕੱਤਰ
ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ (ਰਜਿ.), ਲੁਧਿਆਣਾ

PUNARJOT EYE BANK SOCIETY (Regd.)

WORK DONE REPORT
AFTER REGISTRATION UNDER HOTA
2008 to 2015

Sr. No	Year	Free Surgery (IOL & Simple)	Free Corneal Transplant Surgery	Cornea Procurement
1	2008	1501	475	525
2	2009	1394	678	783
3	2010	1147	666	866
4	2011	2038	392	603
5	2012	1873	405	617
6	2013	2506	195	401
7	2014	2404	193	433
8	2015	1035	102	295
Upto Sept. 2015		13898	3106	4523

PUNARJOT EYE BANK SOCIETY (Regd.)
Head off. 65-A, B.R.S. Nagar, Ferozepur Road, Ludhiana
Ph.: 0161-2464999, 98143-31433, 97800-15715
Website: www.punarjot.com Email: rameshpunarjot@yahoo.com
(Regd. with Punjab Govt. under HOTA Act.)

ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ

ਪੁਨਰਜੋਤ ਅੱਖ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਉੱਤਰੀ ਭਾਰਤ ਦੀ ਨੰਬਰ ਇਕ ਅੱਖ ਬੈਂਕ ਵਜੋਂ, ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਮਨੁੱਖੀ ਸੇਵਾ ਤਹਿਤ ਅੱਖਾਂ ਦੀ ਪੁਤਲੀ ਕਾਰਨ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਹੀਣਤਾ ਦੂਰ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਵਿਲੱਖਣ ਛਾਪ ਬਣਾਈ ਹੈ।

ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਬਾਰੇ ਜ਼ਰੂਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ

1. ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਸਿਰਫ ਮੌਤ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹੀ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ।
2. ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮੌਤ ਤੋਂ 6 ਘੰਟੇ ਵਿੱਚ ਹੋਣੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਹਨ, ਜੇਕਰ ਕਿਸੇ ਕਾਰਨ ਦੇਰੀ ਹੋ ਜਾਵੇ ਤਾਂ 24 ਘੰਟੇ ਤੱਕ ਅੱਖਾਂ ਵਿੱਚ ਜਾਨ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ।
3. ਕਿਸੇ ਵੀ ਉਮਰ, ਚਾਹੇ ਐਨਕਾਂ ਲੱਗੀਆਂ ਹੋਣ, ਅੱਖਾਂ ਦੇ ਅਪਰੇਸ਼ਨ ਹੋਏ ਹੋਣ ਜਾਂ ਅੱਖਾਂ ਵਿੱਚ ਲੈਨਜ਼ ਪਏ ਹੋਣ, ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਹੋ ਸਕਦੀਆ ਹਨ।
4. ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਨਾਲ ਇੱਕ ਇਨਸਾਨ ਦੋ ਇਨਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਰੌਸ਼ਨੀ ਦੇ ਸਕਦਾ ਹੈ।
5. ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਲੈਣ ਲਈ ਅੱਖ ਬੈਂਕ ਦੀ ਟੀਮ ਅੱਖ ਦਾਨੀ ਦੇ ਘਰ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।
6. ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਲੈਣ ਮਗਰੋਂ ਨਕਲੀ ਅੱਖਾਂ ਲਗਾ ਦਿੱਤੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆ ਹਨ ਤਾਂ ਜੋ ਅੰਤਿਮ ਦਰਸਨ ਕਰਨ ਵੇਲੇ ਬੁਰਾ ਨਾ ਲੱਗੇ।
7. ਸਧਾਰਨ ਮੌਤ ਵਿਚ ਵੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਹੋ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ।
8. ਏਡਜ਼, ਪੀਲੀਆ, ਬਲੱਡ ਕੈਂਸਰ, ਦਿਮਾਗ ਬੁਖਾਰ, ਸੈਪਟਸੀਮੀਆਂ, ਹਲਕਾ ਆਦਿ ਵਿੱਚ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀਆਂ।
9. ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਲੈਣ ਲਈ ਟੀਮ 24 ਘੰਟੇ ਸਮੁੱਚੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਤਿਆਰ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ।
10. ਅੱਖਾਂ ਦੀ ਪੁਤਲੀ ਬਦਲਣ (ਕੋਰਨੀਆਂ ਟਰਾਂਸਪਲਾਂਟ) ਦੇ ਅਪਰੇਸ਼ਨ **ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਸੁਪਰਸਪੈਸ਼ਲਟੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਅਤੇ ਲੇਜ਼ਰ ਸੈਂਟਰ,** 65-ਏ, ਭਾਈ ਰਣਧੀਰ ਸਿੰਘ ਨਗਰ, ਲੁਧਿਆਣਾ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਖੇ ਬਿਲਕੁਲ ਮੁਫਤ ਕੀਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਸਹੂਲਤਾਂ:

1. ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਤੋਂ ਕੋਈ ਫੀਸ ਨਹੀਂ ਲਈ ਜਾਂਦੀ। ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਦੀ ਮੌਤ ਹੋ ਜਾਣ ਤੇ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੋਸਾਇਟੀ ਉਸਦੇ ਘਰ ਡਾਕਟਰੀ ਟੀਮ ਭੇਜੇਗੀ। ਲੋਕ ਹਿੱਤ ਲਈ ਇਹ ਇੱਕ ਮੁਫਤ ਸੇਵਾ ਹੈ।
2. ਅੱਖਾਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਵਿਅਕਤੀ ਨੂੰ ਪ੍ਰਵਾਰ ਵੱਲੋਂ ਕੋਈ ਖਰਚਾ ਨਹੀਂ ਦੇਣਾ ਪੈਂਦਾ।ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਸਾਡੀ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੁਆਰਾ ਮੁਫਤ ਦਿੱਤੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਦਾਨ ਕੀਤੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਕਦੇ ਵੀ ਖ੍ਰੀਦੀਆਂ ਜਾਂ ਵੇਚੀਆਂ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦੀਆਂ।
3. ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰਾਂ ਲਈ ਸਾਵਧਾਨੀਆਂ:- ਮੌਤ ਦਾ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਤੁਰੰਤ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰੋ ਅਤੇ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੋਸਾਇਟੀ ਨਾਲ ਸੰਪਰਕ ਕਰੋ। ਪੱਖੇ ਨੂੰ ਬੰਦ ਕਰ ਦੇਵੇ। ਏ.ਸੀ. ਨੂੰ ਖੁੱਲ੍ਹਾ ਰਹਿਣ ਦਿਉ। ਸਰ੍ਹਾਣੇ ਦੇ ਸਹਾਰੇ ਸਿਰ ਨੂੰ ਉਠਾਓ ਅਤੇ ਬੰਦ ਪਲਕ ਤੇ ਗਿੱਲਾ ਕੱਪੜਾ। ਰੂੰ ਰੱਖ ਦਿਓ।

ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ (Corneal transplant Recipient Patient), ਲਈ ਅੰਤਰ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਸਹੂਲਤਾਂ:-

1. 21 ਸਾਲਾਂ ਦੇ ਬਤੌਰ ਕੌਰਨਿਅਲ ਟਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਸਰਜਨ ਦਾ ਬੇਹਤਰੀਨ ਤਜਰਬਾ।
2. Optovue USA ਮਸ਼ੀਨ ਰਾਹੀਂ Pachymetery ਦਾ ਵਿਸੇਸ਼ ਟੈਸਟ।
3. ਕੋਰਨਿਆ (ਪੁਤਲੀ) ਦੀ ਜਾਂਚ ਲਈ ਅਤਿ ਆਧੁਨਿਕ Clinical Specular Microscope Nidek ਜਾਪਾਨੀ ਮਸ਼ੀਨ ਰਾਹੀਂ Endothelial Cell Count ਦੀ ਸਹੂਲਤ।
4. Sonomed USA B-Scan ਰਾਹੀਂ ਅੱਖ ਦੀ ਅੰਦਰੂਨੀ ਜਾਂਚ।
5. ਦਾਨ ਕੀਤੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਦੀਆਂ ਪੁਤਲੀਆਂ ਦੀ HAI USA Eye Bank Specular ਮਸ਼ੀਨ ਰਾਹੀਂ Endothelial Cell ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਜਾਂਚ।
6. ਪੁਤਲੀਆਂ ਦੇ ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਲਈ ਅਤਿ ਆਧੁਨਿਕ ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਥਿਏਟਰ ਅਤੇ ਮਸ਼ੀਨਾਂ ਦੀ ਸਹੂਲਤ।
7. ਅੱਖਾਂ ਦੀਆਂ ਪੁਤਲੀਆਂ ਬਦਲਣ ਲਈ Advanced Corneal transplantation ਦੀ ਵੀ ਸਹੂਲਤ।
8. ਅੱਖਾਂ ਦੀਆਂ ਪੁਤਲੀਆਂ ਬਿਲਕੁਲ ਮੁਫਤ ਬਦਲੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਸਿਰਫ ਟੈਸਟਾਂ ਅਤੇ ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਦਵਾਈਆਂ ਦਾ ਹੀ ਖਰਚਾ ਹੈ।
9. ਮਰੀਜਾਂ ਲਈ ਮੁਫਤ ਲੰਗਰ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ।

ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਅਤੇ ਸਹੂਲਤਾਂ ਲਈ ਸੰਪਰਕ ਕਰੋ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੋਸਾਇਟੀ ਦੇ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਟੈਲੀਫੋਨ ਨੰਬਰਾਂ ਤੇ ਸੰਪਰਕ ਕਰੋ ਜੀ: 0161-2464999, 98143-31433, 97800-15715

HOW CAN I BECOME AN EYE DONOR?

The most important action you can take is to tell your family and legal representative. Most states now require that families be offered the option of donation when a loved one dies. Families may give consent for donation. It is most helpful if they know how you feel in advance. A donor card can serve as an indication to your family, your legal representative and hospitals of your intention to be an eye donor.

You can help...

- By deciding to donate eyes, and giving someone the most precious gift of sight.
- By encouraging your family members to donate.
- Being a member of the eye donation centre
- Calling the nearest eye bank immediately when a death occurs in the family
- Motivating friends and relatives of the deceased to donate eyes
- Monetary support to the patient or to the eye bank.
- **Facts about eye donation**

- Eyes can be donated only after death
- Eyes must be removed within 4 - 6 hours after death
- Eyes can be removed by a registered medical practitioner only.
- The eye bank team will visit the home of the deceased or the hospital to remove the eyes.
- Eye removal does not delay the funeral since the entire procedure takes 20-30 minutes only
- A small quantity of blood will be drawn to rule out communicable diseases
- Eye retrieval does not cause disfigurement
- Religions are for eye donation
- The identities of both the donor and the recipient are kept confidential
- **Important points**

- (To donate eyes, the following procedures should be done by the relatives of the deceased)
- Close the eye lids of the deceased
- Switch off the fan
- Raise the head of the deceased slightly by placing a pillow underneath
- Contact the nearest eye bank as quickly as possible.
- Give the correct address with specific landmarks and telephone number to enable the eye bank team locate the place easily
- If the death certificate from the physician is available, keep it ready
- Eye donation can be done only with the written consent of the next of kin in the presence of two witnesses
- **After eye donation...**

- The donor's family receives a certificate of appreciation from the eye bank
- The eyes are taken to the eye bank and evaluated by a trained eye bank staff
- Tests are carried out and the tissue is sent to the corneal surgeon
- The waiting list is referred and the recipient is called for corneal transplant
- Corneal transplant is performed
- Periodic follow-up of the recipient is done over time to ensure that the graft is successful
- **Services of the eye bank**

- Availability of trained staff round the clock to attend the calls
- Evaluate and provide quality corneas to corneal surgeons
- Enable corneal research using eyes unsuitable for grafts, to find newer techniques, improve preservation methods and train corneal surgeons
- Increase public awareness on eye donation and eye banking
- Train doctors in eye removal procedures
- Develop and establish a network of eye donation centres

Dr. Ramesh Superspecialty Eye & Laser Centre

65 - A, B.R.S. Nagar, Ferozpur Road, Ludhiana. Ph.: 0161-2464999, 9780015715, 9814331433 Fax: 0161-2463999

Email ID : rameshpunarjot@yahoo.com, www.punarjot.com Lasik Helpline 84279-45983

One Eye Donation can make two blind people see. Let's make Eye Donation a family tradition.

ਡਾਇਬਿਟਿਕ ਰੈਟੀਨੋਪੈਥੀ

(ਅੱਖਾਂ ਤੇ ਸ਼ੂਗਰ ਦਾ ਅਸਰ)

Normal Vision

Vision with diobetic retinopathy

ਡਾਇਬੀਟਿਕ ਰੈਟੀਨੋਪੈਥੀ ਅੱਖ ਦੀ ਇੱਕ ਸਮੱਸਿਆ ਹੈ ਜਿਸਦੇ ਕਾਰਨ ਅੰਨਾਪਨ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਉਦੋਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਦੋ ਬਲੱਡ ਸ਼ੂਗਰ ਅੱਖ ਦੇ ਪਿਛਲੇ ਭਾਗ ਮਤਲਬ ਰੈਟਿਨਾਂ ਦੀਆਂ ਛੋਟੀਆਂ ਨਾੜੀਆਂ ਨੂੰ ਨੁਕਸਾਨ ਪਹੁੰਚਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਸ਼ੂਗਰ ਦੇ ਸਾਰੇ ਮਰੀਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਜੋਖ਼ਿਮ ਹੋਣ ਦਾ ਖ਼ਤਰਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਆਪਣੇ ਜੋਖਿਮ ਨੂੰ ਘੱਟ ਕਰਨ ਲਈ ਨਜ਼ਰ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਹੋਣ ਤੋਂ ਬਚਾਉਣ ਲਈ ਕੁੱਝ ਉਪਾਅ ਕੀਤੇ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਡਾਇਬੀਟਿਕ ਰੈਟੀਨੋਪੈਥੀ ਦੋਨੋਂ ਅੱਖਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਵਿਚ ਕੋਈ ਲੱਛਣ ਨਜ਼ਰ ਨਾ ਆਵੇ। ਹਾਲਾਤ ਵਿਗੜਨ ਨਾਲ ਖੂਨ ਦੀਆਂ ਨਾੜੀਆ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆ ਹਨ ਅਤੇ ਖੂਨ ਦੀਆ ਨਾੜੀਆਂ ਫੱਟ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਤੇ ਖੂਨ ਦਾ ਰਿਸਾਵ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਨਵੀਆਂ ਨਾੜੀਆਂ ਬਣਨ ਦੇ ਨਾਲ ਵੀ ਖ਼ੂਨ ਦਾ ਰਿਸਾਵ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਦੇਖਣ ਵਿਚ ਰੁਕਾਵਟ ਪੈਦਾ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ।

ਡਾਇਬਿਟੀਜ਼ ਰੈਟੀਨੋਪੈਥੀ ਦੇ ਲੱਛਣ:

1. ਤੈਰਦੇ ਹੋਏ ਧੱਬੇ ਨਜ਼ਰ ਆਉਣਾ
2. ਧੁੰਦਲਾ ਨਜ਼ਰ ਆਉਣਾ

ਆਪਣੀ ਦੇਖਭਾਲ

ਨਜ਼ਰ ਨੂੰ ਘੱਟਣ ਤੋਂ ਬਚਾਉਣ ਲਈ ਇਹ ਕਰੋ-

1. ਆਪਣੀ ਸ਼ੁਗਰ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਕੰਟਰੋਲ ਰੱਖੋ। ਇਹ ਤੁਹਾਡੀ ਨਜ਼ਰ ਨੂੰ ਬਚਾਉਣ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਤਰੀਕਾ ਹੈ।
2. ਆਪਣੀ ਸ਼ੁਗਰ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਤੇ ਖ਼ੂਨ ਦੇ ਵਿਚ ਕੋਲੈਸਟਰੋਲ ਮਤਲਬ ਚਰਬੀ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰ ਬਣਾਏ ਰੱਖੋ। ਤੁਹਾਨੂੰ ਦਵਾਈ ਲੈਣ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਵੀ ਪੈ ਸਕਦੀ ਹੈ।
   ਜੇ ਤੁਹਾਨੂੰ ਕਾਲਾ ਮੋਤੀਆ ਹੈ ਤਾਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਭਰ ਇਸਦਾ ਇਲਾਜ ਕਰਵਾਉਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ।

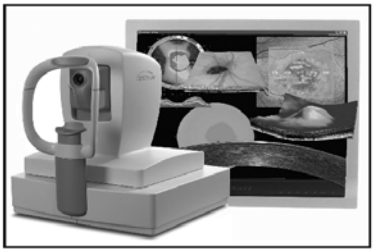

- ਕਿਸੇ ਅੱਖ ਦੇ ਡਾਕਟਰ ਦੁਆਰਾ ਹਰ ਸਾਲ ਚ ਇਕ ਵਾਰੀ ਆਪਣੀ ਅੱਖਾਂ ਦੀ ਜਾਂਚ ਕਰਵਾਉਂਦੇ ਰਹੋ ਜਿਸ ਵਿਚ ਅੱਖ ਦੀ ਪੁਤਲੀ ਫੈਲਾ ਕੇ ਟੈਸਟ ਕਰਨਾ ਸ਼ਾਮਲ ਹੈ। ਅੱਖ ਦੀ ਜਾਂਚ ਕਰਨ ਨਾਲ ਲੱਛਣ ਨਜ਼ਰ ਆਉਣ ਨਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਮੁੱਢਲੇ ਬਦਲਾਵਾਂ ਦਾ ਪਤਾ ਲੱਗ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
- ਅਗਰ ਤੁਹਾਡੀ ਨਜ਼ਰ ਵਿਚ ਕੋਈ ਬਦਲਾਵ ਆ ਰਹੇ ਹੋਣ ਤਾਂ ਆਪਣੇ ਡਾਕਟਰ ਨੂੰ ਮਿਲੋ।
- ਸ਼ੂਗਰ ਰੈਟੀਨੋਪੈਥੀ ਦਾ ਕੋਈ ਇਲਾਜ ਨਹੀਂ ਹੈ ਪਰ ਨਜ਼ਰ ਨੂੰ ਨੁਕਸਾਨ ਤੋਂ ਬਚਾਉਣ ਲਈ ਜਾਂ ਇਸ ਜੋਖਿਮ ਨੂੰ ਘੱਟ ਕਰਨ ਲਈ ਲੇਜ਼ਰ ਉਪਚਾਰ ਜਾਂ ਇਲਾਜ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਡਾਇਬਿਟਿਕ ਰੈਟੀਨੋਪੈਥੀ ਦੀ ਰੋਕਥਾਮ ਅਤੇ ਅੰਤਰ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਪੱਧਰ ਦੀਆਂ ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਸੁਪਰਸਪੈਸ਼ਲਟੀ ਅੱਖਾਂ ਅਤੇ ਲੇਸਕ ਲੇਜ਼ਰ ਸੈਂਟਰ ਵਿਖੇ ਉਪਲੱਬਧ ਸਹੂਲਤਾਂ :

1. 21 ਸਾਲਾਂ ਦੇ ਬੇਹਤਰੀਨ ਸਲਾਘਾਯੋਗ ਡਾਕਟਰੀ ਤਜਰਬੇ ਨਾਲ ਮੁਢੱਲੀ ਜਾਂਚ।
2. ਅੱਖਾਂ ਦੇ ਪਰਦੇ ਦੀ ਜਾਂਚ ਲਈ Zeies (German) ਕੰਪਨੀ ਦਾ Fundus Camera
3. ਅੱਖਾਂ ਦੇ ਪਰਦੇ ਉੱਤੇ ਮਾੜੇ ਅਸਰ ਦਾ Zeies (German) ਕੰਪਨੀ ਦੀ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਗਰੀਨ Laser ਮਸ਼ੀਨ ਨਾਲ ਇਲਾਜ।
4. ਅਮਰੀਕਨ ਕੰਪਨੀ Optovue ਕੰਪਨੀ ਦੀ OCT ਮਸ਼ੀਨ ਰਾਹੀਂ ਪਰਦੇ ਦੀ ਬੇਹਤਰ ਜਾਂਚ
5. ਅੱਖਾਂ ਦੇ ਪਰਦੇ ਦੇ ਮਾਹਿਰ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਵਲੋਂ ਸ਼ੂਗਰ ਦੇ ਅੱਖਾਂ ਉੱਤੇ ਮਾੜੇ ਅਸਰ ਦੀ ਜਾਂਚ ਅਤੇ ਬੇਹਤਰ ਇਲਾਜ।
6. ਸ਼ੂਗਰ ਕਾਰਨ ਗੰਭੀਰ ਮਾੜੇ ਅਸਰ ਲਈ ਸਰਜੀਕਲ ਇਲਾਜ ਦੀ ਸੇਵਾ ਉਪਲੱਬਧ

ਵਧੇਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਅਤੇ ਸਲਾਹ ਲਈ ਸਾਂਝ ਕੋਆਰਡੀਨੇਟਰ (ਸ਼ੂਗਰ) ਨਾਲ ਮੋ: 97800-15715 ਤੇ ਸੰਪਰਕ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹੋ।

ਸੇਵਾ ਦੇ ਫੁੱਲ ਅਤੇ ਸੈਲਫੀ ਕਲਚਰ

ਅੱਜ ਗੋਡੇ ਗੋਡੇ ਚਾਅ ਸੀ ਕਿ 30ਵੇਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦੇ ਆਖਰੀ ਦਿਨ ਦੀ ਸਮਾਪਤੀ ਸਮਾਰੋਹ ਵਿਚ ਇਕ ਬਹੁਤ ਹੀ ਉਚ ਕੋਟੀ ਦੀ ਸਖਸ਼ੀਅਤ ਦੀ ਅਸ਼ੀਰਵਾਦ ਨਾਲ ਪੁਨਰਜੋਤ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਨੂੰ ਕਾਮਯਾਬੀ ਲਈ ਨਵੀਂ ਉਡਾਨ ਭਰਨ ਦਾ ਸੁਨਹਿਰੀ ਮੌਕਾ ਮਿਲਣ ਵਾਲਾ ਸੀ। ਸਵੇਰ ਤੋਂ ਹੀ ਸਾਡੇ ਸਟਾਫ ਨੇ ਤਿਆਰੀਆਂ ਕਰ ਰੱਖੀਆਂ ਸਨ। ਕੁਦਰਤੀ ਉਸ ਦਿਨ ਸਵੇਰੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਲਾਭ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਤਾ ਮਰੀਜ ਕੁਲਦੀਪ ਕੌਰ (ਕਾਲਪਨਿਕ ਨਾਮ) ਉਮਰ 18 ਸਾਲ, ਜੋ ਬਚਪਨ ਤੋ ਹੀ ਦੁਨਿਆ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਅਸਮਰਥ ਸੀ। ਉਸ ਦੀ ਦੋ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਅੱਖਾਂ ਦੀ ਪੁਤਲੀ ਦਾ ਆਪ੍ਰੇਸ਼ਨ ਹੋਇਆ ਸੀ ਅਤੇ ਹੁਣ ਕੁਲ ਮਾਲਿਕ ਦੀ ਕਿਰਪਾ ਨਾਲ ਬਿਲਕੁਲ ਠੀਕ ਨਜਰ ਸੀ ਉਹ ਰੁਟੀਨ ਚੈੱਕਅੱਪ ਕਰਵਾਉਣ ਆਈ ਹੋਈ ਸੀ। ਉਸ ਨਾਲ ਉਸਦੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਜੋ ਕਿ ਇਕ ਮਿਹਨਤਕਸ਼ ਇਨਸਾਨ ਹਨ ਉਹ ਨਾਲ ਸਨ। ਮੈਂ ਚੈੱਕ ਅੱਪ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਨਾਂ ਨੂੰ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਪੁੱਛਿਆ ਕਿ ਅੱਜ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਮਨਾਇਆ ਜਾ ਰਿਹਾ 30ਵਾਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦਾ ਆਖਰੀ ਦਿਨ ਵਿਚ ਕੀ ਆਪ ਇਸ ਮਿਸ਼ਨ ਦੀ ਕਾਮਯਾਬੀ ਲਈ ਆਪਣੀ ਮਰਜ਼ੀ ਨਾਲ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੋ। ਇਕ ਕਾਮਯਾਬ ਉਦਾਹਰਨ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਸਮੁੱਚੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਇਕ ਵਧੀਆ ਸੁਨੇਹਾ ਜਾਵੇਗਾ।

ਕੁਲਦੀਪ ਕੌਰ ਨੇ ਬੜੀ ਉਤਸੁਕਤਾ ਨਾਲ ਹਾਮੀ ਭਰੀ, ਉਸ ਕਿਹਾ - ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਕਰਨਾ ਹੈ? ਮੈਂ ਕਿਹਾ ਬੇਟੀ ਤੁਸੀਂ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਜੀ ਨੂੰ ਫੁੱਲਾਂ ਦਾ ਗੁਲਦਸਤਾ ਪੁਨਰਜੋਤ ਮਿਸ਼ਨ ਵੱਲੋਂ ਭੇਂਟ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਉਸ ਬੱਚੀ ਦੇ ਚਿਹਰੇ ਤੇ ਜਿਹੜੀ ਉਸ ਸਮੇਂ ਖੁਸ਼ੀ ਅਤੇ ਆਤਮ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਦੀ ਝਲਕ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲੀ ਉਹ ਬਿਆਨ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਸੀ। ਉਸਨੇ ਅਤੇ ਉਸਦੇ ਪਿਤਾ ਨੇ ਝੱਟ ਹਾਂ ਕਰ ਦਿੱਤੀ।

ਉਸਦੇ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਕਿਹਾ, -"ਭਾਈ ਸਮਾਜਿਕ ਸਮਾਗਮ ਹੈ ਕੁਝ ਸਮਾਂ ਵੀ ਲੱਗ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਤੁਹਾਨੂੰ ਕੋਈ ਪਰੇਸ਼ਾਨੀ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ। ਉਸ ਕਿਹਾ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਤੁਸੀ ਸਾਡਾ ਐਨਾ ਕੀਤਾ ਹੈ ਸਾਡਾ ਮੁਫਤ ਆਪ੍ਰੇਸ਼ਨ ਕਰਕੇ ਸਾਡੀ ਕੁੜੀ ਨੂੰ ਰੌਸ਼ਨੀ ਦਿੱਤੀ ਹੈ ਅਸੀਂ ਐਨਾ ਵੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ। ਮੈਂ ਸ਼ੁਕਰੀਆ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਸਟਾਫ ਨੂੰ ਹਿਦਾਇਤ ਦਿੱਤੀ ਕਿ ਸਮਾਗਮ ਵਿਚ ਇਹ ਬੱਚੀ ਅਤੇ ਉਸਦੇ ਪਿਤਾ ਵੀ ਨਾਲ ਜਾਣਗੇ। ਤੁਸੀ ਤਿਆਰੀ ਕਰ ਲਵੋ। ਫੇਰ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਮਰੀਜ ਵੇਖਣ ਲੱਗ ਪਿਆ।

ਤਕਰੀਬਨ 12.30 ਵਜੇ ਮੈਨੂੰ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸਾਹਿਬਾਨ ਵਲੋਂ ਫੋਨ ਆਇਆ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਜਲਦੀ ਆ ਜਾਵੋ ਹੁਣ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਸਾਹਿਬ ਆਉਣ ਹੀ ਵਾਲੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਜਲਦੀ ਆਪਣੀ ਪੁਨਰਜੋਤ ਟੀਮ ਨਾਲ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ। ਮੌਕੇ ਤੇ ਸ਼ਹਿਰ ਦੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਸਤਿਕਾਰਯੋਗ ਪਤਵੰਤੇ ਸੱਜਣ ਆਏ ਹੋਏ ਸੀ ਉਹ ਵੀ ਸ਼ਾਇਦ ਮੇਰੇ ਵਾਂਗੂ ਕਿਸੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਮਿਸ਼ਨ ਜਾਂ ਮਿਲਣ ਦੀ ਤਾਂਘ ਵਿਚ ਸਨ। ਬਹੁਤ ਸਾਰਿਆਂ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਭਰੀ ਮਿਲਣੀ ਅਤੇ ਸਤਿਕਾਰ ਨਾਲ ਫਤਿਹ ਵੀ ਬੁਲਾਈ।

ਡਾ. ਰਮੇਸ਼

ਪੁਨਰਜੋਤ ਮਿਸ਼ਨ ਦੇ ਕਦਰਦਾਨ ਮੁਖ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਅਤੇ ਉਸ ਮੌਕੇ ਦੇ ਸਾਹਿਬਾਨ ਜੀ ਨੂੰ ਮੈਂ ਮਿਲਿਆ ਅਤੇ ਸੰਖੇਪ ਵਿਚ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਅੱਜ ਕੌਮੀ ਅੱਖਾ ਦਾਨ ਪੰਦਰਵਾੜਾ ਦੇ ਸਮਾਪਤੀ ਸਮਾਰੋਹ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ, ਬੇਟੀ ਕੁਲਦੀਪ ਕੌਰ ਵਲੋਂ, ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ 30 ਲੱਖ ਲੋੜਵੰਦ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਹੀਣ ਮਜਬੂਰ ਇਨਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਮੁੜ ਦੁਬਾਰਾ ਰੌਸ਼ਨੀ ਮਿਲੇ, ਇਕ ਸੰਕੇਤਕ ਰੂਪ ਵਿਚ ਫੁਲਾਂ ਦਾ ਗੁਲਦਸਤਾ ਇਕ ਕਾਮਯਾਬ ਲਾਭ ਪ੍ਰਾਪਤ ਮਰੀਜ ਵਲੋਂ ਭੇਂਟ ਕਰਕੇ ਇਕ ਨਰੋਆ ਸੰਦੇਸ਼ ਕੌਮ ਨੂੰ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ। ਸਾਡੇ ਮੁੱਖ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸਾਹਿਬਾਨ ਇਸ ਸੋਚ ਤੇ ਬੜੇ ਖੁਸ਼ ਹੋਏ ਕਹਿੰਦੇ ਡਾਕਟਰ ਬਹੁਤ ਚੰਗੀ ਸੋਚ ਹੈ। ਸਾਨੂੰ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਦੇ ਆਉਣ ਤਕ ਇੰਤਜਾਰ ਲਈ ਕਿਹਾ ਗਿਆ। ਸਾਡੀ ਟੀਮ ਨੇ ਬੜੀ ਸੰਤੁਸ਼ਟੀ ਮਹਿਸੂਸ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਬਾਕੀ ਸਾਰਿਆਂ ਵਾਂਗੂ ਇੰਤਜਾਰ ਵਿਚ ਬੜੇ ਬੀਬੇ ਬਣ ਬੈਠ ਗਏ।

ਜਦੋਂ ਥੋੜੀ ਦੇਰ ਬਾਅਦ ਬਾਹਰੋਂ ਸੰਦੇਸ਼ਾ ਆਇਆ ਕਿ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਬੱਸ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਹੀ ਹਨ। ਉਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਬੈਠੇ ਸਾਰੇ ਪਤਵੰਤੇ ਸੱਜਣ ਇਕ ਭੀੜ ਵਾਂਗੂ ਉਠ ਕੇ ਗੇਟ ਤੇ ਖੜੇ ਹੋ ਗਏ।

ਗੇਟ ਦੇ ਕੋਲ ਮੁੱਖ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸਾਹਿਬਾਨ ਵੱਲੋਂ ਕੀਤੇ ਇੰਤਜ਼ਾਮ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਫੁੱਲਾਂ ਦੇ ਗੁਲਦਸਤੇ ਅਤੇ ਹਾਰ ਲਈ ਹੋਰ ਵੀ ਸਵਾਗਤੀ ਟੀਮ ਵਿੱਚ ਸੱਜਣ ਖੜੇ ਸਨ। ਪੁਨਰਜੋਤ ਟੀਮ ਵੀ ਗੁਲਦਸਤਾ ਅਤੇ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦਾ ਲੋਗੋ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਲੈ ਕੇ ਨਾਲ ਖੜੀ ਹੋ ਗਈ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਇੰਤਜਾਰ ਕਰ ਰਹੇ ਮਹਿਮਾਨ ਅਤੇ ਪਤਵੰਤੇ ਸੱਜਣਾ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਹਰਮਨ ਪਿਆਰੇ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਦੀ ਥੋੜੀ ਬੇਚੈਨੀ ਜਿਹੀ ਵੇਖੀ ਗਈ। ਕੁਝ ਮਿੰਟਾਂ ਬਾਅਦ ਜਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਕੁਝ ਉੱਚ ਅਧਿਕਾਰੀ ਸਾਹਿਬਾਨ ਪਹਿਲਾਂ ਮੌਕਾ। ਵੇਖਣ ਲਈ ਆਏ। ਉਨਾਂ ਪੁੱਛਿਆ ਡਾਕਟਰ ਇਥੇ ਕਿਵੇਂ? ਮੈਂ ਕਿਹਾ ਅੱਜ ਸਾਡੇ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦਾ ਸਮਾਪਤੀ ਦਿਨ ਹੈ ਅਸੀਂ ਵੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਲਈ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ

ਲੈਣ ਲਈ ਆਏ ਹਾਂ। ਉਨਾਂ ਮੁਸਕਾਨ ਨਾਲ ਹੱਲਾ ਸ਼ੇਰੀ ਦਿਤੀ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਬੰਧਾਂ ਦੀ ਨਿਰੀਖਣ ਲਈ ਚਲੇ ਗਏ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਦੀ ਚੌਕਸੀ ਥੋੜੀ ਹੋਰ ਵੱਧ ਗਈ ਸੀ। ਇੰਤਜਾਰ ਦੇ ਮਾਹੌਲ ਦੀ ਚਰਮ ਸੀਮਾ ਵੱਧਦੀ ਜਾ ਰਹੀ ਸੀ। ਉਥੇ ਮੌਕੇ ਤੇ ਖੜੇ ਕੁਝ ਨੌਜਵਾਨ ਅਤੇ ਹੋਰ ਸੱਜਣ ਆਪਣੇ ਮੋਬਾਇਲ ਕੈਮਰੇ ਕੱਢੀ ਖੜੇ ਸੀ। ਆਪਣੀ ਪਰਮ ਸਤਿਕਾਰਯੋਗ ਸਖਸ਼ੀਅਤ ਨਾਲ ਮਿਲਣ ਲਈ। ਕੁਝ ਹੀ ਪਲਾਂ ਬਾਅਦ ਠਾਠਾਂ ਮਾਰਦਾ ਸਮੁੰਦਰ ਰੂਪੀ ਪਿਆਰੇ ਸੱਜਣਾਂ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਕਰਦਾ ਹੋਇਆ ਇੱਕ ਬੇਕਾਬੂ ਇੱਕਠ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕਾਫਿਲਾ ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਮੌਕੇ ਤੇ ਪਹੁੰਚਿਆ ਉਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਹਫੜਾ ਦਫੜੀ ਦਾ ਮਾਹੌਲ ਜਿਹਾ ਹੋ ਗਿਆ। ਬੱਸ ਬਿਆਨ ਤੋ ਬਾਹਰ, ਹਰ ਇੱਕ ਸੱਜਣ ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਜੀ ਨੂੰ ਮਿਲਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ, ਗੱਲ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਫੋਟੋ ਖਿਚਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਸੁਰੱਖਿਆ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਦੀਆਂ ਹਿਦਾਇਤਾਂ ਨੂੰ ਕੋਈ ਸੁਣ ਨਹੀਂ ਸੀ ਰਿਹਾ। ਬਸ ਸਮਝੋ ਕਿ ਧੱਕਾ-ਮੁੱਕੀ ਵਾਲਾ ਹੀ ਮਾਹੌਲ ਜਿਹਾ ਬਣ ਗਿਆ ਸੀ। ਅਸੀਂ ਇਕ ਪਾਸੇ ਖੜੇ ਸਾਰਾ ਦ੍ਰਿਸ਼ ਵੇਖ ਰਹੇ ਸੀ। ਮੈਨੂੰ ਇਕ ਪਿਛੇ ਸੱਜਣ ਨੇ ਕਿਹਾ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਧੱਕਾ ਮਾਰ ਕੇ ਅੱਗੇ ਹੋ ਜਾਵੋ ਮੈਂ ਕਿਹਾ ਨਹੀਂ ਵੀਰ ਮੈਂ ਐਵੇਂ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ। ਮੇਰੇ ਮਨ ਦਾ ਵਿਚਾਰ ਸੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ ਭੀੜ ਵਿਚ ਧੱਕਾ ਮਾਰ ਕੇ, ਅਗੁਵਾਈ ਕਰਨ ਦਾ ਨਹੀਂ ਇਹ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਹੀ ਪਵਿੱਤਰ ਮਿਸ਼ਨ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਪਿਛਲੇ 24 ਸਾਲ ਤੋਂ ਇਸ ਜਾਗਰੁਕਤਾ ਅਭਿਆਨ ਵਿਚ ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਹੋ ਕੇ ਲੱਗੇ ਹੋਏ ਹਾਂ ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਸਮਾਜ ਲਈ ਇਕ ਮਾਡਲ ਬਣਨਾ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਧੱਕੇ ਨਹੀਂ ਮਾਰ ਸਕਦੇ। ਸਾਡੇ ਹੱਥ ਤਾਂ ਕੁਲ ਮਾਲਿਕ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ ਦਾ ਸੰਦੇਸ਼ਾ ਦੇਣ ਦੀ ਸੇਵਾ ਦਿੱਤੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਧੱਕੇ ਮਾਰ ਕੇ ਭੀੜ ਵਿਚ ਅੱਗੇ ਵੱਧਣ ਲਈ ਨਹੀਂ। ਮੇਰੀ ਨਿਮਰਤਾ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਸਭ ਸਮੁੱਚਾ ਸਮਾਜ ਜੋ ਸ਼ਾਇਦ ਵਹਿਮਾਂ ਭਰਮਾਂ ਅਤੇ ਅਗਿਆਨਤਾ ਦੀ ਗੂੜੀ ਨੀਂਦ ਵਿਚ ਸੁੱਤਾ ਪਿਆ ਹੈ ਉਸਨੂੰ ਜਗਾ ਕੇ ਮੋਢੇ ਨਾਲ ਮੋਢਾ ਲਗਾ ਕੇ ਇੱਕਠੇ ਤੋਰਨ ਦੀ ਸੇਵਾ ਲਗਾਈ ਹੋਈ ਹੈ।

ਸਾਡੀ ਸਮੁੱਚੀ ਟੀਮ ਇਕ ਪਾਸੇ ਹੋ ਕੇ ਆਪਣੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਤਕਦੀ ਸੀ। ਹਾਂ ਉਹ ਸਾਰਾ ਇੱਕਠ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਜੀ ਨਾਲ ਪੰਡਾਲ ਵਿਚ ਚਲਾ ਗਿਆ। ਅਸੀਂ ਵੀ ਪਿਛੇ ਪਿਛੇ ਨਾਲ ਚਲੇ ਗਏ। ਸਾਡਾ ਵਿਚਾਰ ਸੀ ਜੇਕਰ ਮੁੱਖ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸਾਹਿਬਾਨ ਦੀ ਸਾਡੇ ਤੇ ਨਜ਼ਰ ਪੈ ਜਾਵੇਗੀ ਤਾਂ ਸ਼ਾਇਦ ਸਾਡੀ ਟੀਮ ਨੂੰ ਮੌਕਾ ਮਿਲ ਜਾਵੇਗਾ। ਪਰ ਸਾਡੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸ਼ੇਰ, ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਅਤੇ ਪਤਵੰਤੇ ਸੱਜਣਾਂ ਵਿਚ ਇੰਨਾ ਉਤਸ਼ਾਹ ਸੀ ਕਿ ਸੁਰੱਖਿਆ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਹੀ ਮੁੱਸ਼ਕਤ ਕਰਨੀ ਪੈ ਰਹੀ ਸੀ ਹਾਲਾਤ ਨੂੰ ਕੰਟਰੋਲ ਕਰਨ ਲਈ। ਉਥੇ ਜਿਆਦਾਤਰ ਸੱਜਣ ਆਪਣੇ ਪਿਆਰੇ ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਨਾਲ ਫੋਟੋ ਖਿਚਵਾਨ ਵਿਚ ਜਿਆਦਾ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਵਿਚ ਸਨ। ਸਾਡੇ ਮੁਖ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸਾਹਿਬਾਨ ਵੱਲੋਂ ਬਹੁਤ ਹੀ ਮਿਹਨਤ ਕਰਕੇ, ਬਹੁਤ ਹੀ ਵਧੀਆ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕੀਤੇ ਹੋਏ ਸਨ, ਖਾਣਾ ਖਵਾਉਣ ਲਈ। ਲੇਕਿਨ ਸਾਡੇ ਸਿਰਕੱਢ ਮੋਹਤਰ ਸੱਜਣਾ ਨੇ ਉਨਾਂ ਦੀ ਸੋਚ ਅਤੇ ਮਿਹਨਤ ਤੇ ਸੁਚੱਜੇ ਪ੍ਰਬੰਧਾਂ ਤੇ ਪਾਣੀ ਫੇਰ ਕੇ ਰੱਖ ਦਿੱਤਾ ਸੀ। ਉਹ ਵੀ ਬਸ ਸਿਰਫ ਸਾਡੇ ਵਾਂਗੂ ਵੇਖ ਹੀ ਰਹੇ ਸਨ। ਸਿਕਉਰਟੀ ਵਾਲੇ ਕੁਝ ਹੀ ਸਮੇਂ ਬਾਅਦ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਜੀ ਨੂੰ ਬੜੀ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਨਾਲ ਉਥੋਂ ਲੈ ਗਏ। ਲੇਕਿਨ ਧੰਨ ਸਨ ਸਾਡੇ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਜਿਨਾਂ ਦੇ ਚਿਹਰੇ ਤੇ ਹਰ ਸਮੇਂ ਮੁਸਕਾਨ ਅਤੇ ਖਿੱਚ ਸੀ ਸ਼ਾਇਦ ਉਹ ਵੀ ਆਪਣੇ ਮਿੱਤਰ ਪਿਆਰੇ, ਸੱਜਣ ਨੂੰ ਮਿਲ ਕੇ ਖੁਸ਼ੀ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰ ਰਿਹੇ ਸਨ। ਉਨਾਂ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਵੀ ਕੋਈ ਨਾ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਜਿਆਦਾ ਕਰ ਮੌਜੂਦ ਸੱਜਣ ਆਪਣੇ ਮੋਬਾਇਲ ਕੈਮਰੇ ਨਾਲ ਸੈਲਫੀ ਫੋਟੋ ਜਾਂ ਨਾਲ ਲਿਆਂਦੇ ਹੋਏ ਪ੍ਰੋਫੈਸ਼ਨਲ ਕੈਮਰੇ ਨਾਲ ਫੋਟੋ ਖਿਚਾ ਰਹੇ ਸਨ। ਅਜਿਹਾ ਨਜਾਰਾ ਅਸੀਂ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਵੇਖਿਆ ਸੀ। ਲੇਕਿਨ ਇੱਕ ਸਮਾਜਿਕ ਸਮਾਰੋਹ ਤੇ ਇਕ ਵਖਰੀ ਝੱਲਕ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲੀ ਸੀ ਕਿ ਸਾਡੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਸੰਸਕਾਰ ਵਿਚ ਅਜਿਹਾ ਤਾਂ ਕਿਤੇ ਨਹੀਂ। ਅਸੀਂ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਨੂੰ ਬੁਲਾ ਕੇ ਸਿਰਫ ਫੋਟੋਆਂ ਖਿਚਵਾ ਕੇ ਆਪਣਾ ਹੀ ਸਵਾਰਥ ਹੱਲ ਕਰ ਰਹੇ ਸੀ। ਅਸੀਂ ਉਨਾਂ ਦਾ ਸਤਿਕਾਰ ਤਾਂ ਕੀ ਕਰਨਾ ਉਨਾਂ ਨੂੰ ਸਮੂਚੀ ਭੀੜ ਰਾਹੀਂ ਧੱਕੇ ਮਾਰ ਰਹੇ ਸੀ। ਇਹ ਤਾਂ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਨਹੀਂ ਹੋਈ ਮਹਿਮਾਨ ਨਿਵਾਜੀ। ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕਿਧਰ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਸਾਡਾ ਸਮਾਜ।

ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਜੀ ਦੀ ਰਵਾਨਗੀ ਸਮੇਂ ਉਥੇ ਖੜੇ ਇਕ ਸੁਰੱਖਿਆ ਅਧਿਕਾਰੀ ਜੋ ਸ਼ਾਇਦ ਸਾਡੇ ਵੱਲ ਗੌਹ ਨਾਲ ਵੇਖ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਕੁਲਦੀਪ ਕੌਰ ਦੇ ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਫੁੱਲ ਦਾ ਗੁਲਦਸਤਾ ਫੜੀ ਖੜੀ ਵੇਖ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਉਸਨੇ ਸ਼ਾਇਦ ਸੋਚਿਆ ਹੋਵੇਗਾ, ਇਕ ਛੋਟੀ ਬੱਚੀ, ਕਾਲੀਆਂ ਐਨਕਾਂ ਲਾਈ ਧੁੱਪ ਵਿਚ ਬੜੀ ਦੇਰ ਤੋਂ ਖੜੀ ਹੈ। ਉਸ ਕਿਹਾ ਬੇਟਾ ਲਿਆ ਤੇਰਾ ਫੁੱਲਾਂ ਦਾ ਗੁਲਦਸਤਾ ਮੈਂ ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਜੀ ਕੋਲ ਪਹੁੰਚਾ ਦੇਵਾਂਗਾ। ਕੁਲਦੀਪ ਕੌਰ ਨੇ ਝੱਟ ਹਾਮੀ ਭਰ ਉਸ ਵੀਰ ਨੂੰ ਫੜਾ ਕੇ ਕੁਲਦੀਪ ਕੌਰ ਨੇ ਵੀ ਆਪਣੇ ਆਪ ਤੇ ਮਾਣ ਮਹਿਸੂਸ ਕੀਤਾ ਕਿ ਉਹ ਵੀ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਜੀ ਕੋਲ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ ਪਹਿਚਾਣ ਵਿਚ ਸਹਾਈ ਹੋ ਗਈ।

ਜਦੋਂ ਸਾਰਾ ਕਾਫਿਲਾ ਰਵਾਨਾ ਹੋਇਆ ਅਸੀਂ ਚੁੱਪ ਚਾਪ ਇੱਕ ਪਾਸੇ ਖੜੇ ਆਪਣੇ ਮੁਖ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸਾਹਿਬਾਨ ਨੂੰ ਲੱਭਣ ਦੇ ਯਤਨ ਵਿਚ ਸੀ।

ਉੱਥੋ ਲੰਘ ਰਹੀ ਭੀੜ ਵਿਚ ਕੁਝ ਨੌਜਵਾਨ ਬੜੇ ਸ਼ੋਕ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਮੋਬਾਇਲ ਵਿਚ ਕੈਦ ਕੀਤੀ ਸੈਲਫੀ ਰਾਹੀਂ

ਫੋਟੋਆਂ ਵੇਖਦੇ ਜਾ ਰਹੇ ਸੀ ਅਤੇ ਖੁਸ਼ ਹੋ ਰਹੇ ਸੀ। ਇਕ ਨੇ ਕਿਹਾ ਗੈਰੀ ਮੇਰੀ ਸੈਲਫੀ ਵਧੀਆ ਆਈ ਹੈ ਮੈਂ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਫੇਸ ਬੁਕ ਤੇ ਵੀ ਪਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਹੁਣੇ ਹੁਣੇ 24 ਲਾਇਕ ਅਤੇ 7 ਕਮੈਂਟ ਵੀ ਆ ਗਏ ਕਹਿੰਦੇ ਨੇ ਯਾਰ ਬੜਾ ਘੈਂਟ ਲਗਦਾ ਏ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਨਾਲ। ਛਾ ਗਿਆ ਗੈਰੀ ਅੱਜ ਤੂੰ। ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਇਕੋ ਸਾਹ ਵਿਚ ਉਤਸ਼ਾਹ ਨਾਲ ਕੀ ਕੀ ਕਹਿੰਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਸੀ।

ਗੈਰੀ ਦੀ ਸ਼ੈਲਫੀ ਤਾਂ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਤੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਤੇਜੀ ਨਾਲ ਪਸੰਦ ਕੀਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਸੀ। ਲੇਕਿਨ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ 10 ਲੱਖ ਨੌਜਵਾਨ ਅਤੇ ਬੱਚੇ ਜਿਹੜੇ ਅੰਧਕਾਰ ਮਈ ਜਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਜੀਉਣ ਲਈ ਮਜਬੂਰ ਸਨ। ਜਿਨਾਂ ਲਈ ਅੱਜ ਕੋਈ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦਿਵਸ ਮਨਾਉਣ ਲਈ ਅਸੀ ਸੰਦੇਸ਼ ਲੈ ਕੇ ਆਏ ਸੀ ਉਹ ਤਾਂ ਸ਼ਾਇਦ ਭੀੜ ਵਿਚ ਕਿਤੇ ਗੁੰਮ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ।

ਚਲ ਫੇਰ ਸਹੀ। ਸਾਡਾ ਪੈਂਡਾ ਬਹੁਤ ਲੰਬਾ ਹੈ, ਔਖੀ ਰਾਹ ਹੈ। ਸਾਨੂੰ ਤਾਂ ਨਿਮਰਤਾ ਅਤੇ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਨਾਲ ਲੈਕੇ ਚੱਲਣ ਵਿਚ ਹੀ ਬੇਹਤਰੀ ਸਮਝਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਜੀ ਨੂੰ ਮਿਲੇ ਅਤੇ ਸਮਾਪਤੀ ਸਮਾਰੋਹ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਲਿਆਏ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਲੋਗੋ ਨਾਲ ਫੋਟੋ ਖਿਚਵਾਈ।

ਉਨਾਂ ਕਿਹਾ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਮੈਂ ਬੜੀ ਮਿਹਨਤ ਕਰਕੇ ਸਾਰਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕੀਤਾ ਸੀ ਲੇਕਿਨ ਸਾਡੇ ਪੰਜਾਬੀ ਵੀਰ ਬੱਸ ਸਬਰ ਨਹੀਂ ਕਰਦੇ। ਸਭ ਮਿਲ ਸਕਦੇ ਸੀ। ਬੱਸ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਤਾਂ ਬੜੇ ਭਲੇ ਮਾਨਸ ਬਣੇ ਰਹਿੰਦੇ ਨੇ ਜਦੋਂ ਸਮਾਂ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਬਸ ਬੇਕਾਬੂ ਹੋ ਕੇ ਸਾਰਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਹੀ ਬੇਤਰਤੀਬ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਹਾਂ ਉਤਸ਼ਾਹ ਅਤੇ ਪਿਆਰ ਜਰੂਰ ਹੈ ਲੇਕਿਨ ਥੋੜਾ ਅਨੁਸਾਸ਼ਨ ਵੀ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਕੁਲ ਮਾਲਿਕ ਮੱਤ ਦੇਵੇ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ। ਮੈਂ ਕਿਹਾ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਅਸੀਂ ਤਾ ਮਿਸ਼ਨਰੀ ਹਾਂ ਸਾਨੂੰ ਸਾਰਾ ਪੱਤਾ ਹੈ ਅਜਿਹੇ ਮੌਕੇ ਸੰਭਾਲਣ ਦੀ ਬੜੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਸ਼ਾਇਦ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਸਾਡਾ ਸਮਾਜ ਸੁਧਰ ਜਾਵੇ। ਅਸੀਂ ਕਿਹਾ ਆਪ ਜੀ ਹੀ ਸਮਾਪਤੀ ਸਮਾਰੋਹ ਦੀ ਰਸਮ ਅਦਾ ਕਰਕੇ ਇਸ ਪਵਿੱਤਰ ਮੁਹਿੰਮ ਲਈ ਖੁਦ ਸਾਨੂੰ ਥਾਪੀ ਦੇਵੋ ਤਾਂ ਜੋ ਇਸ ਨਾਲ ਅਸੀਂ ਹੋਰ ਬੇਹਤਰ ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਮਨੁੱਖੀ ਸੇਵਾ ਕਰ ਸਕੀਏ। ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦਾ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਚਿੰਨ ਲੋਗੋ। ਕੁਲਦੀਪ ਕੌਰ ਦੇ ਹੱਥੋਂ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸਾਹਿਬਾਨ ਜੀ ਨੂੰ ਪਕੜਾ ਕੇ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਅਸੀਂ ਨਵੇਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਸਾਲ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕੀਤੀ। ਮੌਕੇ ਤੇ ਹਾਜ਼ਿਰ ਪਤਵੰਤੇ ਸੱਜਣਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਕੁਲਦੀਪ ਕੌਰ ਅੱਜ ਬਿਲਕੁਲ ਵੇਖ ਰਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇੰਨੀ ਕੁ ਹੁਣ ਸਮਰੱਥ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਸਭ ਦੇ ਸਨਮੁੱਖ ਹੋ ਕੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਉਨਾਂ ਬੱਚੀ ਨੂੰ ਗਲਵਕੜੀ ਵਿਚ ਲੈਕੇ ਮਾਇਆ ਨਾਲ ਵੀ ਪਿਆਰ ਦਿੱਤਾ।ਮੈਂ ਉਨਾਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਇਹ ਰਹਿਣ ਦਿਓ। ਉਨਾਂ ਬੜੇ ਮਾਣ ਨਾਲ ਕਿਹਾ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਇਹ ਸਾਡੀ ਪਿਆਰੀ ਬੱਚੀ ਹੈ। ਮੇਰਾ ਪਿਉ ਰੂਪੀ ਫਰਜ ਬਣਦਾ ਹੈ ਮੈਂ ਤਾਂ ਪਿਆਰ ਦੇ ਰਿਹਾ ਹਾਂ।

ਇਹ ਨੌਜਵਾਨ ਬੱਚੀ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਲੋੜਵੰਦ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਹੀਣ ਇਨਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਮੁੜ ਰੌਸ਼ਨੀ ਮਿਲੇ ਇਸ ਮੁਹਿੰਮ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਬਹੁਤ ਬਹੁਤ ਧੰਨਵਾਦ।

ਮੈਨੂੰ ਬਹੁਤ ਤਸੱਲੀ ਹੋਈ ਕਿ ਸਾਡਾ 30ਵਾਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਜਾਗਰੁਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦਾ ਸਮਾਪਤੀ ਸਮਾਰੋਹ ਇਕ ਵਧੀਆ ਮਾਹੋਲ ਨਾਲ ਸੰਪਨ ਹੋਇਆ।

ਗੱਡੀ ਵਿਚ ਬੈਠਿਆਂ ਇਕ ਸੋਚ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਬੇਚੈਨ ਜਰੂਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਇਕ ਪਾਸੇ ਦੋਵੇਂ ਅੱਖਾਂ ਵਾਲੇ, ਤੰਦਰੁਸਤ ਨੌਜਵਾਨ ਸਮਾਗਮ ਦੀਆਂ ਸ਼ੈਲਫੀਆਂ ਖਿਚ ਕੇ ਸ਼ੋਸਲ ਮੀਡੀਆ ਤੇ ਪਾ ਕੇ ਫੋਕੀ ਵਾਹ ਵਾਹ ਖੱਟ ਕੇ ਜਾ ਰਹੇ ਸਨ। ਉਥੇ ਇਕ ਨੌਜਵਾਨ, ਕੁਲਦੀਪ ਕੌਰ, ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ ਮੁਹਿੰਮ ਲਈ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਰੂਪ ਆ ਕੇ ਆਪਣਾ ਬਣਦਾ ਫਰਜ ਨਿਭਾ ਕੇ ਇਸ ਆਸ ਨਾਲ ਵਾਪਿਸ ਜਾ ਰਹੀ ਸੀ ਕਿ ਪੁਨਰਜੋਤ ਮਿਸ਼ਨ ਰਾਹੀਂ ਉਹ ਸਮਾਜ ਵਾਸਤੇ ਇਕ ਨਵਾਂ ਸੰਦੇਸ਼ ਦੇ ਕੇ ਜਾ ਰਹੀ ਸੀ।

ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕਿੰਨਾ ਕ ਸਮਾਂ ਲੱਗੇਗਾ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੀਆਂ ਹੋਰ 10 ਲੱਖ ਕੁਲਦੀਪ ਕੌਰਾਂ ਨੂੰ ਮੁੜ ਰੋਸ਼ਨੀ ਮਿਲੇ ਇਸ ਦਾ ਇੰਤਜਾਮ ਕਰਨ ਦਾ। ਸ਼ਾਇਦ ਸਾਡਾ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਨੌਜਵਾਨ ਮੇਰੇ ਦਿਲ ਦੀਆਂ ਗਹਿਰਾਈਆਂ ਨੂੰ ਸਮਝ ਕੇ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਲੋੜਵੰਦਾਂ ਨੂੰ ਸੁਜਾਖਾ ਕਰਨ ਵਿਚ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਮੋਢੇ ਨਾਲ ਮੋਢਾ ਲੱਗਾ ਕੇ ਸਾਡਾ ਸਾਥ ਦੇਣਗੇ ਨਾ ਕੀ ਭੀੜ ਵਿਚ ਧੱਕਾ ਮਾਰਕੇ, ਕੁਚਲ ਕੇ ਅੱਗੇ ਨਿਕਲ ਕੇ ਸੈਲਫੀ ਖਿਚਾਉਣ ਵਿਚ ਹੀ ਖੁਸ਼ੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਗੇ। ਆਓ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਗੌਰਵਮਈ ਸਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਮੁਖ ਰੱਖ ਦੇ ਹੋਏ ਲੋੜਵੰਦ ਦੀ ਮਦਦ ਕਰਕੇ ਕੁਲ ਮਾਲਿਕ ਦੀਆਂ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰੀਏ।

ਡਾ. ਰਮੇਸ਼
ਐਮ.ਡੀ. (ਸਟੇਟ ਅਵਾਰਡੀ)

Eye Never Die, Donate Eye

आओ! कुछ नया सोचें

आजादी दामन में है, पर हाथों में कुछ नहीं।
खुशियाँ जग में हैं, पर मेरे आँगन में कुछ नहीं।।

15 अगस्त 2015 को हम भारतवासियों ने देश की आजादी की 68वीं वर्षगाँठ मनाई। यह वर्षगाँठ उस आजादी की है जिसे पाने के लिए न जाने कितने देशप्रेमियों ने अपने जीवन का बलिदान कर दिया। असंख्य राष्ट्रभक्तों ने फांसी के फंदे को हँसते हुए गले में डाल लिया या सीने में गोली खाकर स्वतंत्रता की देवी को अपनी आहुति दे दी। इस स्वतंत्रता के लिए कितनी ही माताओं की गोद सूनी हो गई और न जाने कितनी ही सुहागिनों की माँग उजड़ गई।

आसमान में उन्मुक्त हो उड़ती रंग–बिरंगी पतंगें मानो आसमान में उड़ती फ़िज़ाओं को अपने देश की आजादी की सालगिरह का संदेश दे रही थीं। हर तरफ जश्न का वातावरण था। बच्चे–बूढ़े, नर–नारी हाथ में तिरंगा लिए अपने आजाद होने का एहसास दिला रहे थे। टेलिविज़न के चैनल भी इस जश्न में शरीक हो आजादी के खास कार्यक्रम प्रसारित कर रहे थे। मोबाईल में भी आजादी के ही संदेश आ रहे थे। इस माहौल को देखकर भारतवासी होने पर गर्व से सीना चौड़ा हो जाता है परंतु जहन में एक सवाल सूई की तरह चुभता रहा कि हमारी इस प्रफुल्लता, स्वतंत्रता का भविष्य कितना उज्ज्वल है?

जिस देश में संसार के सबसे अधिक गरीब लोग रहते हों, जहाँ संसार के सबसे कुपोषित बच्चे रहते हों, जिस देश में संसार के सबसे अंधे व्यक्ति रहते हों, जहाँ भुखमरी हो तथा दो वक्त का खाना तक लोगों को नसीब न हो, उस भारत में स्वतंत्रता के मायने क्या हो सकते हैं? आज से 68 साल पहले गुलामी की जिन जंजीरों को काटने के लिए महात्मा गांधी, भगत सिंह, राजगुरु, खुदी राम, सुभाष चन्द्र बोस, सुखदेव आदि ने अपना बलिदान देकर तोड़ा था, क्या हम उनके द्वारा दी गई अनमोल कुर्बानियों के बदले आज के संदर्भ में अपने देश के लिए कुछ भी नहीं कर सकते?

कुरीतियाँ, अनपढ़ता, अंधविश्वास, अस्वस्थता, भ्रष्टाचार आदि न जाने कितनी ही गुलामी की बेड़ियाँ हमें आज भी जकड़े हुए हैं। जरा कल्पना कीजिए यदि आज हमारे सामने महात्मा गांधी होते तो वे हमें क्या संदेश देते? निश्चय ही आज हमें फिरंगियों से नहीं लड़ना है। अतः वे समाज की इन बुराईयों से लड़ने की प्रेरणा देते। जिन कुरीतियों को हमने समाज में पनपने दिया उनसे न लड़ने के लिए वे हमें अवश्य ही फटकारते। वे हमसे डपट कर पूछते कि मानव समाज और राष्ट्र की सेवा का जो मंत्र हमने देशवासियों को दिया था उसे सब भारतवासी कैसे भूल गए? हमारे आजादी के नायकों ने गुलामी के अंधकार को मिटाने के लिए सर्वस्व होम कर दिया और हम ज्योति का एक दीया तक भी न जगा पाए। आजादी का जश्न तो हम हर साल मना लेते हैं परंतु देश के लिए कुछ करने से कतराते हैं।

वास्तव में हम तो आजाद हो ही चुके हैं परंतु क्या आपने कभी सोचा है जो 30 लाख भारतवासी अंधे हैं उन्होंने 15 अगस्त का जश्न कभी भी अपनी आँखों से नहीं देखा है तो फिर उनके लिए आजादी का क्या महत्त्व है? वे तो आज भी गुलाम हैं। जी हाँ वे 30 लाख भारतवासी आज भी गुलाम है। जो अपनी इच्छानुसार चल–फिर, खा–पी नहीं सकते, दुनिया के रंग नहीं देख सकते वे गुलाम ही तो हैं। स्वामी विवेकानंद ने कहा था– "जब तक मेरे

देश का एक कुत्ता भी भूखा है, मैं चैन से सो नहीं सकता।'' देश भक्ति का ऐसा पावन आदर्श था विवेकानंद का। यदि विवेकानंद एक कुत्ते के प्रति यह भाव रख सकते थे तो क्या हम इन्सान एक इन्सान के प्रति जरा भी नहीं सोच सकते?

हमें आजादी के मायनों को आज बदलना होगा।
देश तो आजाद है, हमें खुद को आजाद करना होगा।

देश के पाँच करोड़ बीस लाख नेत्रहीनों तथा दो लाख सत्तर हजार अंधे बच्चों को नई रोशनी देकर हमें उन्हें अंधकार की गुलामी से आजाद करवाना है। यह इस दौर की सबसे अहम चुन्नौती है। नेत्रदान को हमें हथियार बनाना है इस गुलामी से लड़ने के लिए। समय के साथ देश की स्थितियाँ बदलती हैं। आज हमें अंग्रेजों से नहीं लड़ना है परंतु देश से अंधापन मिटाने की लड़ाई तो हम लड़ ही सकते हैं तथा दूसरों को भी इस लड़ाई के लिए प्रेरित कर सकते हैं। मृत्यु के बाद शरीर मिट्टी का ढेर है। क्या यह समय की माँग नहीं है कि हम देश के प्रति इतना–सा तो कर्त्तव्य निभाएँ और देश के अंधे बहन–भाईयों को स्वतंत्रता की नई सुबह दिखाएँ। यकीन मानिए, बापू, बोस, नेहरू, भगत, राजगुरू आदि आपको अपनी पंक्ति में खड़ा करेंगे।

आओ अंधत्व को मेहसूस करें
फिर सोच में कुछ परिवर्तन करें
आजादी की नई परिभाषा रचें
अपनी आँखें दान कर
नेत्रहीनों को आजाद करें
चलो कुछ परिवर्तन करें
आओ नेत्रदान करें।।

डॉ. कुलदीप सिंह

आँखें

देखिए आँखें कुछ कहना चाहती हैं, संग हमारे ये रहना चाहती हैं
दिखाए हर पल रंग नए–नए, न ये चुप रहना चाहती हैं
आंखें ही इतिहास दिखातीं, आँखें ही वर्तमान दर्शातीं
कल भी संग रहना चाहती हैं, देखिए आँखें......

चाहे आँखें होती हैं दो, पर अफसाने कहें ये सौ
कभी ये प्रीत का रंग दिखाएँ, कभी ये मीत का संग दिलाएँ
मीत संग प्रेम गीत गाना चाहती हैं, देखिए आँखें.....

कभी आँखें मासूमियत दिखाएँ, कभी दिखाएँ इन्सानियत
देख हैवानियत अश्क बन बहना चाहती हैं, देखिए आँखें......

दिल का आईना कहलाएँ, चेहरे के सब रंग दिखाएँ
बात न कोई पर्दे में कहना चाहती हैं, देखिए आँखें.....

आँखें छेडें अपने यार को, मांगे उससे अपने प्यार को
इशारों की नदिया में बहना चाहती हैं, देखिए आँखें.....

आँखों का है जादू अनूठा, पल में दिखा दें सच्चा–झूठा
चुप रहके भी बहुत कुछ कहना चाहती हैं, देखिए आँखें......

आँखें जाने पवित्र प्रेम–दर्शन, यही पहचानें अपवित्र काम–आकर्षण
सच्चाई की रिमझिम संग रहना चाहती हैं, देखिए आँखें ....

आँखें माँ की ममता दिखाएँ, आखें जहां की भव्यता सराहें
सपने बनके पलकों में रहना चाहती हैं, देखिए आँखें .....

आँखों का मोल नेत्रहीन जाने, आँखों बिन सब रंग अनजाने
सूनी आँखें सावन–सी बहना चाहती हैं, देखिए आँखें....

मौन रहके भी भाषा बन जातीं, इनके बिना दुनिया अंधी घाटी
आँखों के बिना है सब जगह उदासी, संग इनके ही दुनिया भाती
बनकर ज्योति, पलकों के पलने को महकाना चाहती हूँ, देखिए आँखें........

बनके सितारे ये टिमटिमाएँ, गर हम इन्हें दान कर जाएँ
हम चले जाएँगे जहाँ से,पर ये सदा रहना चाहती हैं
सुनिए आँखें कुछ कहना चाहती है, संग हमारे ये रहना चाहती हैं......

रजनी विजय सिंगला

शरीर की अन्धता नही मन की अन्धता बड़ा मर्ज़ हैं,
उजाला लाने के लिए नेत्रदान हम सबका फ़र्ज़ है।

ਮਨੁੱਖਾ-ਜੀਵਨ ਦਾ ਮੂਲ ਮੰਤਵ - ਅਪਣੇ ਆਤਮ-ਸਰੂਪ ਦੀ ਪਛਾਣ।

ਪਰਮ ਪਿਤਾ ਪਰਮਾਤਮਾ ਜੀ, ਜਿਸ ਜੀਵ-ਆਤਮਾ ਨੂੰ, ਅਪਣੇ ਪਾਸ ਵਾਪਿਸ ਬਲਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ, **ਉਸਦੇ ਉੱਤੇ, ਪਹਿਲੀ ਦਯਾ-ਮਿਹਰ-ਬਖਸ਼ਸ਼, ਇਨਸਾਨ ਦੇ ਤੰਦਰੁਸਤ ਜਾਮੇ ਦੀ ਕਰਦੇ ਹਨ** ਜਿਸਦੇ ਜ਼ਰੀਏ ਉਹ ਜੀਵ, ਦੁਨਿਆਵੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਨਿਭਾਉਣ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ, ਪ੍ਰਭੂ ਨਾਲ ਮਿਲਾਪ ਦੇ ਅਪਣੇ ਮਕਸਦ ਨੂੰ ਭੀ ਨਹੀਂ ਭੁੱਲਦਾ।

ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਲਮੇਰੀ ਯਾਤਰਾ ਵਿੱਚ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ-ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਜੀਵਾਂ ਨਾਲ ਉਸਨੂੰ ਵਾਸਤਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਉਸਦਾ, ਪੂਰਬਲੇ **ਜਨਮਾਂ ਦੇ ਕਰਮਾਂ ਕਾਰਣ, ਸੰਬੰਧ ਬਣਦਾ ਹੈ**, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਨਿਪਟਾਰਾ ਕਰਕੇ, ਉਸਨੇ ਵਾਪਿਸ ਅਪਣੇ ਅਸਲੀ ਘਰ ਸਚਖੰਡ ਪਹੁੰਚਣਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਭਾਵੇਂ, ਉਹ ਉਸਦੇ ਘਰ ਦੇ ਸੰਗੀ-ਸਾਥੀ ਹੋਣ, ਮਿੱਤਰ-ਸੱਜਣ ਜਾਂ ਦੁਸ਼ਮਣ ਭੀ ਕਿਉਂ ਨਾ ਹੋਣ। ਲੋਕ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਦੇ ਮਾਰੇ ਉਸਦੇ ਪਾਸ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਕਈ ਭਿਖਾਰੀ-ਮੰਗਤੇ, ਭੁੱਖੇ-ਪਿਆਸੇ, ਬੀਮਾਰ- ਅਪਹਾਜ ਅਤੇ ਕਈ ਹੋਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਭਨਾਂ ਨਾਲ ਉਸਦਾ ਪੂਰਬਲਾ ਸੰਬੰਧ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਜਿਸਨੂੰ ਧਿਆਨ ਵਿੱਚ ਰੱਖਦਾ ਹੋਇਆ, ਉਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ, ਪੂਰੀ ਤਨ-ਦੇਹੀ, ਆਦਰ ਅਤੇ ਸਤਿਕਾਰ ਨਾਲ ਸੇਵਾ ਕਰਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਜਾਣਦਾ ਹੈ ਕਿ **"ਮਿਥਿਆ ਤਨ ਨਹੀਂ ਪਰਉਪਾਕਰਾ" (4-5 ਸੁਖਮਨੀ ਸਾਹਿਬ)** ਪਰਉਪਕਾਰ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਇਸ ਨਾਸ਼ਮਾਨ ਸਰੀਰ ਦਾ ਕੋਈ ਲਾਭ ਨਹੀਂ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਲੋੜਵੰਦਾਂ ਵਲੋਂ ਮਿਲੀਆਂ ਅਸੀਸਾਂ ਹੀ ਉਸ ਲਈ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਸੌਗਾਤ ਬਣ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਉਹ ਹਰੇਕ ਕਾਮਯਾਬੀ ਦਾ ਸਿਹਰਾ ਪਰਮਾਤਮਾ ਜੀ ਨੂੰ ਹੀ ਸੌਂਪਦਾ ਹੈ। ਅਪਣੇ ਹੁਨਰ ਲਿਆਕਤ ਵਗ਼ੈਰਾ ਦਾ ਮਾਣ-ਹੰਕਾਰ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। **ਪਰ ਉਸਦਾ ਅਸਲ ਮਕਸਦ** ਤਾਂ ਉਸ ਗੁਪਤ ਸ਼ਕਤੀ ਦੀ ਖੋਜ ਕਰਨਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਿਹੜੀ ਉਸਦੇ ਅੰਦਰ ਸਥਾਪਿਤ ਹੋ ਕੇ ਉਸਦੇ ਸਾਰੇ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਉਹ ਗੁਪਤ ਸ਼ਕਤੀ ਕੁਲ ਪਰਮਾਤਮਾ ਰੂਪੀ ਸੂਰਜ ਦੀ ਇੱਕ ਕਿਰਨ ਹੈ ਜਿਸਦਾ ਨਾਮ ਹੈ ਆਤਮਾ।

ਆਤਮਾ ਦੀ ਖੋਜ ਕਰਨ ਨੂੰ ਹੀ ਅਪਣੇ ਆਤਮ-ਸਰੂਪ ਦੀ ਪਛਾਣ ਕਰਨਾ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਯੂਨਾਨ ਦੇ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਫਿਲਾਸਫਰ ਸੁਕਰਾਤ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਵੀ ਕਿਹਾ ਸੀ, **ਅਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਪਛਾਣੋ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਜਾਣ ਲੈਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਅਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਜਾਣ ਲੈਣਾ ਅਤੀ ਜਰੂਰੀ ਹੈ।**

ਤੀਸਰੀ ਪਾਤਸਾਹੀ ਸਾਹਿਬ ਸ੍ਰੀ ਗਰੂ ਅਮਰਦਾਸ ਜੀ ਨੇ ਭੀ ਏਹੀ ਫਰਮਾਇਆ ਹੈ;

ਸੋ ਜਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਜਿਨਿ ਆਪੁ ਪਛਾਤਾ॥ (ਮ. ੩ ਮਾਰੂ ਸੋਹਲੇ ਪੰਨਾ 1045)

ਸਾਡਾ ਅਸਲ ਸਰੂਪ ਇਹ ਬਾਹਰ ਦਿਖਾਈ ਦੇ ਰਿਹਾ ਸਰੀਰ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਸਾਡਾ ਅਸਲੀ ਸਰੀਰ ਸਾਡੀ ਆਤਮਾ ਹੈ। ਬਾਹਰਲੀਆਂ ਸ਼ਕਲਾਂ-ਸੂਰਤਾਂ ਅਤੇ ਸੁਭਾਵ ਅਲੱਗ-ਅਲੱਗ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਪਰੰਤੂ ਮਹਾਨ ਤੇਜੱਸਵੀ ਆਤਮ-ਸਰੂਪ ਸਾਡਾ ਸਭ ਦਾ ਇਕੋ-ਜਿਹਾ ਹੀ ਹੈ।

ਸਾਡਾ ਜੀਵਨ, ਨਾਂ ਤਾਂ ਇਸ ਜਨਮ ਨਾਲ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਨਾਂ ਹੀ ਮੌਤ ਨਾਲ ਸਮਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਉਸ ਅਨੰਤ ਜੀਵਨ ਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਹਾਂ ਜਾਂ ਪ੍ਰਗਟਾਵਾ ਹਾਂ, ਜਿਸਦਾ ਨਾਂ ਕੋਈ ਆਦਿ ਹੈ ਨਾ ਅੰਤ॥ ਸਾਡਾ ਮਕਸਦ ਉਸ ਦੀ ਖੋਜ ਕਰਨ ਦਾ ਹੈ।

ਪੁਰਾਣੇ ਜਾਂ ਵਰਤਮਾਨ ਇਤਿਹਾਸ ਵੱਲ ਝਾਤੀ ਮਾਰ ਕੇ ਦੇਖਣ ਤੋਂ ਸਪਸ਼ਟ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਮਨੁੱਖ ਨੇ ਜਲ-ਥਲ, ਆਕਾਸ਼-ਪਾਤਾਲ ਦੀਆਂ ਖੋਜਾਂ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਕਸਰ ਨਹੀਂ ਛੱਡੀ। **ਪਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਖੋਜਾਂ ਨਾਲ ਆਤਮ-ਸਰੂਪ ਦੀ ਖੋਜ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋਈ ਜਿਸ ਕਰਕੇ** ਇਸ ਜੀਵ ਨੂੰ ਦੋਬਾਰਾ ਚਉਰਾਸੀ ਲੱਖ ਜੂਨਾਂ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਦੁਖੀ ਹੋਣਾ ਪੈ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਤੋਂ ਬੜੀ ਮੁਸਕਲ ਨਾਲ ਛੁਟਕਾਰਾ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਆਪਣੇ ਆਪ ਦੀ ਪਛਾਣ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਇਹ ਜੀਵ ਅਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ

ਬਾਜੀ ਹਾਰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਤੀਸਰੀ ਪਾਤਸਾਹੀ ਦਾ ਫਰਮਾਣ ਹੈ:

ਆਪੁ ਨ ਚੀਨੈ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ॥ (ਗਓੜੀ ੫; ੩ ਪੰਨਾ ੨੩੦)

ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ, ਵਿਦਿਆ ਦੇ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਨ ਲਈ ਕਿਸੇ ਟੀਚਰ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਇਸੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਪਣੇ ਆਤਮ-ਸਰੂਪ ਦੀ ਪਛਾਣ ਕਰਨ ਲਈ ਵੀ ਕਿਸੇ ਐਸੇ ਮਹਾਂ ਪੁਰਸ਼, ਸਾਧੂ-ਸੰਤ-ਮਹਾਤਮਾ ਦੀ ਲੋੜ ਪੈਂਦੀ ਹੈ ਜਿਸਨੇ ਆਪ ਖੁਦ ਭਗਤੀ ਕਰਕੇ ਅਪਣੇ ਆਤਮ-ਸਰੂਪ ਨੂੰ ਦੇਖ ਲਿਆ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਉਹ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨਾਲ ਮਿਲਕੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਹੀ ਰੂਪ ਬਣ ਚੁੱਕਿਆ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਕੁਲ ਮਾਲਕ ਵਲੋਂ ਮੋਹਰ-ਛਾਪ ਲੱਗੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਰੂਹਾਂ ਨੂੰ ਮਾਲਕ ਨਾਲ ਮਿਲਾਉਣ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਚੁੱਕ ਸਕਦ ਹੋਵੇ।

ਇਹ ਜੀਵ ਆਪਣੇ ਆਪ ਐਸੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੀ ਖੋਜ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ, ਬਲਕਿ ਸਤਿਗੁਰੂ ਆਪ ਖੁਦ ਉਸ ਦੀ ਤਾਲਾਸ਼ ਕਰਕੇ, ਉਸ ਦੀ ਸੁਰਤ ਨੂੰ, ਅੰਦਰ ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਧੁਨੀ, ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਜੋਤੀ, ਨਾਲ ਜੋੜ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਜੀਵਾਤਮਾ ਦੇ ਅੰਗ-ਸੰਗ ਹੋ ਕੇ ਰਖਸ਼ਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ, ਭਜਨ ਕਰਵਾ ਕੇ, ਮਨ ਮਾਇਆ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਕਰਕੇ ਆਤਮਾ ਉਤੇ ਚੜੀਆ ਹੋਈਆਂ ਮੈਲਾਂ ਦਾ ਨਾਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਆਤਮਾ ਨੂੰ ਨਿਰਮਲ, ਉਜੱਵਲ ਅਤੇ ਤੇਜਸਵੀ ਸਰੂਫ ਬਣਾਂਦੇ ਹਨ ਔਰ ਸਾਨੂੰ ਕੁਲ ਮਾਲਕ ਦੇ ਨਾਲ ਮਿਲਾ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਹੀ ਸਾਡਾ ਅਸਲ ਮਕਸਦ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਭ ਕੁੱਝ ਗੁਰਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਰਜਾ ਨਾਲ ਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਐਸੀ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀ ਸਿੱਖ ਦੇ ਅੰਦਰ ਆਤਮਾ ਦੇ ਸਾਰੇ ਗੁਣ, ਜਿਵੇਂ ਸੀਲ, ਖਿਮਾ, ਸੰਤੋਖ ਵਿਵੇਕ ਨਿਮਰਤਾ ਧੀਰਜ-ਸ਼ਾਂਤੀ ਵਗੈਰਾ, ਅਪਣੇ ਆਪ ਇਸੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਜਿਵੇਂ ਦੁਧ ਨੂੰ ਉਥਾਲਾ ਦੇਣ ਤੇ ਮਲਾਈ ਉਸ ਉਪਰ ਅਪਣੇ ਆਪ ਹੀ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਅਸਲ ਸਤਸੰਗੀ ਕਹਾਉਣ ਦੇ ਯੋਗ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਪੰਚਮ ਪਾਤਿਸਾਹ ਜੀ ਦਾ ਇਸ ਪ੍ਰਥਾਏ ਫੁਰਮਾਣ ਹੈ:

ਬਿਸਰਿ ਗਈ ਸਭ ਤਾਤਿ ਪਰਾਣੀ ''ਜਬ ਤੇ ਸਾਧ ਸੰਗਤਿ ਮੋਹਿ ਪਾਣੀ ॥੧॥ ਰਗਾਓ॥

ਸਕੋ ਬੈਗਂ ਨਹੀਂ ਬਿਗਾਨਾ ਸਗਲ ਸੰਗਿ ਹਸ ਕਉ ਬਨਿਆਣੀ॥ (ਕਾਨੜਾਮ ੫ ਪੰਨਾ 1299)

''ਸਰਮਨ ਆਨ ਦੀ ਮਾਊਂਟ ''ਤੇ ਕੀਤੇ ਹੋਏ ਹਜ਼ਰਤ ਈਸਾ ਦੇ ਵਿਸ ਉਪਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਵੀ ਸਾਨੂੰ ਯਾਦ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ:

''ਐ ਗੁਰੂ ਦੇ ਪਿਆਰੇ, ਸਿੱਖ-ਸੇਵਕ-ਸਤਿਸੰਗੀਉ। ਤੁਹਾਡਾ ਨੇਕ ਜੀਵਨ ਦੁਨੀਆਂ ਵਾਸਤੇ ਚਾਨਣ ਮੁਨਾਰਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਚੀ ਪਹਾੜੀ ਆਬਾਦ ਹੋਇਆ ਸ਼ਹਿਰ, ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਦੇਖਣ ਤੋਂ ਉਹਲੇ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਸਕਦਾ (ਇਸੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਬਹੁਤ ਉੱਚੇ ਰੂਹਾਨੀ ਮੰਡਲ ਸਚਖੰਡ ਦੇ ਨਿਵਾਸੀ ਹੋ) ਸੋ ਤੁਸੀਂ ਵੀ, ਦੁਨੀਆਂ ਤੋਂ ਛੁੱਪੇ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਸਕਦੇ। ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਲੋਕ ਦੀਵਾ ਜਗਾ ਕੇ ਉਸਨੂੰ ਟੋਕਰੀ ਥੱਲੇ ਦਬਾ ਕੇ ਰੱਖਣ ਦੀ ਵਜਾਏ ਉੱਚੀ ਅਤੇ ਖੁਲ੍ਹੀ-ਜਗ੍ਹਾ ਰਖਦੇ ਹਨ ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਉਸਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਘਰ ਵਿੱਚ ਬੈਠੇ ਹਰੇਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਨੂੰ ਰੌਸ਼ਨੀ ਦਿੰਦਾ ਹੈ, ਇਸੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤੁਹਾਡਾ ਤਪ-ਤੇਜ਼ ਔਰ ਜਲਾਲ ਵੀ ਦੁਨੀਆ ਵਿੱਚ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਮਕੇ ਕਿ ਲੋਕੀ ਤੁਹਾਡੇ ਨੇਕ ਕੰਮਾਂ ਦੀ ਤਾਰੀਫ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਇਹ ਕਹਿਣ ਕਿ ਜਿਸ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਸਿੱਖ-ਸੇਵਕ-ਸਤਿਸੰਗੀ ਏਨੇ ਉਚੇ ਆਦਰਸ਼ਵਾਦੀ ਹਨ, ਉਹ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਆਪ ਖੁਦ ਕਿੰਨੇ ਕੁ ਉਚੇ ਹੋਣਗੇ।''

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ, ਸਾਨੂੰ ਐਸੀ ਅਵਸਥਾ ਵਿੱਚ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਲਈ, ਸਾਡੇ ਸਭ ਦੇ ਉੱਤੇ, ਅਪਣੀ ਅਪਾਰ-ਦਯਾ-ਮਿਹਰ-ਬਖਸ਼ਸ, ਕਰਦੇ ਹੀ ਰਹਿਣ!

ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ
ਜ਼ਿਲਾ ਰੋਪੜ (ਪੰਜਾਬ) - ਇੰਡੀਆ

हर स्वस्थ व्यक्ति जिसकी आँखें सही सलामत है, नेत्रदान की घोषण कर सकता है।

ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ (ਰਜਿ.) ਦੀ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦੀ ਰਿਪੋਰਟ

30ਵੇਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦੌਰਾਨ ਹੋਈਆਂ 30 ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ।
50 ਹਜ਼ਾਰ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਸਬੰਧੀ ਕੀਤਾ ਜਾਗਰੂਕ।
1700 ਦੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਵਾਅਦਾ ਫਾਰਮ ਭਰੇ ਗਏ।

25-08-2015

ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਵਲੋਂ ਪੰਜਾਬ ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਲੁਧਿਆਣਾ ਦੇ ਐਨ.ਐਸ.ਐਸ. ਯੂਨਿਟ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਅੱਖ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਇੱਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸੈਮੀਨਾਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਸੈਮੀਨਾਰ ਨੂੰ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਸਕੱਤਰ ਸ੍ਰੀ ਸੁਭਾਸ਼ ਮਲਿਕ, ਐਨ.ਐਸ.ਐਸ. ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਦੇ ਕੋਆਰਡੀਨੇਟਰ ਡਾ. ਹਰਮੀਤ ਸਿੰਘ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਨੇਤਰਹੀਣ ਰਵੀ ਖੁਰਾਣਾ, ਡਾ. ਆਰ.ਐਸ.ਗਿੱਲ, ਡਾ. ਅੰਜਲੀ ਸਿੱਧੂ ਅਤੇ ਡਾ. ਅਗਰਵਾਲ ਨੇ ਵੀ ਸੰਬੋਧਨ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਸੈਮੀਨਾਰ ਦੌਰਾਨ 250 ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੇ ਅੱਖ ਦਾਨ ਦੇ ਵਾਅਦਾ ਫਾਰਮ ਭਰੇ।

ਆਈ ਡੋਨੇਸ਼ਨ ਐਸੋਸਿਏਸ਼ਨ ਨਵਾ ਸ਼ਹਿਰ ਅਤੇ ਜਿਲ੍ਹਾ ਸਿਹਤ ਵਿਭਾਗ ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਨਗਰ ਨੇ 30ਵਾਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਜਾਗਰੁਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜਾ ਰਲ ਕੇ ਮਨਾਇਆ। ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦਾ ਅਰੰਭ ਜਿਲਾ ਉਪਾਯੁਕਤ ਸ. ਅਮਰ ਪ੍ਰਤਾਪ ਸਿੰਘ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦਾ ਫਾਰਮ ਭਰ ਕੇ ਕੀਤਾ ਗਿਆ।

26-08-2015

26 ਅਗਸਤ ਨੂੰ ਧਾਰਮਿਕ ਅਸਥਾਨ ਨਾਨਕਸਰ ਕਲੇਰਾਂ ਵਿਖੇ ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਗੁਰਚਰਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੀ ਰਹਿਨੁਮਾਈ ਹੇਠ ਨਸ਼ਾਬੰਦੀ ਅਤੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਸਬੰਧੀ ਸੈਮੀਨਾਰ ਹੋਇਆ। ਇਸ ਸੈਮੀਨਾਰ ਨੂੰ ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਗੁਰਚਰਨ ਸਿੰਘ ਜੀ, ਸ੍ਰੀ ਐਸ.ਆਰ. ਕਲੇਰ ਵਿਧਾਇਕ ਹਲਕਾ ਜਗਰਾਉਂ, ਸ਼੍ਰੋਮਣੀ ਕਮੇਟੀ ਮੈਂਬਰ ਭਾਈ ਗੁਰਚਰਨ ਸਿੰਘ ਗਰੇਵਾਲ ਅਤੇ ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਪਮਾਲ, ਮੀਡੀਆ ਇੰਚਾਰਜ, ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਨੇ ਵੀ ਸੰਬੋਧਨ ਕੀਤਾ।

27-08-2015

ਦਸ਼ਮੇਸ਼ ਖਾਲਸਾ ਚੈਰੀਟੇਬਲ ਹਸਪਤਾਲ, ਹੇਰਾਂ, ਜਿਲ੍ਹਾ ਲੁਧਿਆਣਾ ਵਿਖੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਗਰੂਕ ਕਰਨ ਲਈ ਸੈਮੀਨਾਰ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਸ੍ਰੀ ਜਸਵਿੰਦਰ ਵਸ਼ਿਸਟ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਗਰੂਕ ਕੀਤਾ।

28-08-2015

ਧਾਰਮਿਕ ਅਸਥਾਨ ਨਾਨਕਸਰ ਕਲੇਰਾਂ ਵਿਖੇ ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਨੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੀ ਸਲਾਨਾ ਬਰਸੀ ਮੌਕੇ ਮੈਡੀਕਲ ਕੈਂਪ ਦੌਰਾਨ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਮੁੱਫਤ ਚੈਕਅੱਪ ਕੈਂਪ ਲਗਾਇਆ ਗਿਆ। ਜਿਸ ਦੌਰਾਨ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਸੰਗਤ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਵਾਅਦਾ ਫਾਰਮ ਭਰੇ ਗਏ ਅਤੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਸਬੰਧੀ ਲਿਟਰੇਚਰ ਵੰਡਿਆ ਗਿਆ।

ਆਈ ਡੋਨੇਸ਼ਨ ਐਸੋਸੀਏਸ਼ਨ ਨਵਾਂ ਸ਼ਹਿਰ ਨੇ ਪ੍ਰਾਇਮਰੀ ਹੈਲਥ ਸੈਂਟਰ ਸੂਜੋ ਵਿਖੇ ਸੀਨੀਅਰ ਮੈਡੀਕਲ ਅਫਸਰ ਡਾ. ਰਛਪਾਲ ਸਿੰਘ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਸੈਮੀਨਾਰ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਜਿਸ ਵਿਚ ਨੇਤਰਦਾਨ ਸੰਸਥਾ ਦੇ ਮਹਾਂ ਸਚਿਵ ਰਤਨ

ਕੁਮਾਰ ਜੈਨ, ਡਾ. ਰਛਪਾਲ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਯਸ਼ਪਾਲ ਸਿੰਘ ਹਾਫਿਜ਼ਬਾਦੀ ਅਤੇ ਉਪ-ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੋਗਾ ਸਿੰਘ ਨੇ ਮਰਨ ਉਪਰੰਤ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਲਈ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਜਾਗਰੂਕ ਕੀਤਾ।

29-08-2015

ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਟਾਹਲੀਆਣਾ ਸਾਹਿਬ ਵਿਖੇ ਪੂਰਨਮਾਸ਼ੀ ਦੇ ਸ਼ੁਭ ਦਿਹਾੜੇ ਤੇ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਅੱਖਾਂ ਦੇ ਮਹੀਨਾਵਾਰ ਚੈਕਅੱਪ ਕੈਂਪ ਦੌਰਾਨ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਗਰੂਕ ਕਰਨ ਲਈ ਸੈਮੀਨਾਰ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਸੈਮੀਨਾਰ ਵਿੱਚ ਉੱਘੇ ਸਮਾਜ ਸੇਵੀ ਸ. ਕੰਵਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਜਵੰਦਾ ਨੇ ਮਰਨ ਉਪਰੰਤ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਬਾਰੇ ਚਾਨਣਾ ਪਾਇਆ।

30-08-2015

ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਸੁਪਰਸਪੈਸ਼ਿਲਟੀ ਆਈ ਕੇਅਰ ਅਤੇ ਲੇਜ਼ਰ ਸੈਂਟਰ ਬਰਾਂਚ ਰਾਏਕੋਟ ਵਿਖੇ ਐਨ.ਆਰ.ਆਈ. ਵੀਰਾਂ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਮੁੱਫਤ ਅਪ੍ਰੇਸ਼ਨ ਕੈਂਪ ਲਗਾਇਆ ਗਿਆ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਸ੍ਰੀ ਜਸਵਿੰਦਰ ਵਸ਼ਿਸਟ ਅਤੇ ਉਘੇ ਸਮਾਜ ਸੇਵੀ ਸ. ਕੰਵਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਜਵੰਦਾ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਗਰੂਕ ਕੀਤਾ।

31-08-2015

ਮਿੰਨੀ ਸਕੱਤਰੇਤ ਲੁਧਿਆਣਾ ਵਿਖੇ ਡਿਪਟੀ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਲੁਧਿਆਣਾ ਸ੍ਰੀ ਰਜਤ ਅਗਰਵਾਲ ਜੀ ਨੇ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਐਂਬੂਲੈਂਸ ਨੂੰ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਕਾਲਜਾਂ ਵਿੱਚ ਜਾ ਕੇ ਨੌਜਵਾਨ ਵਰਗ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਗਰੂਕ ਕਰਨ ਲਈ ਰਵਾਨਾ ਕੀਤਾ।

1-9-2015

ਪਿਮਜ ਹਸਪਤਾਲ ਜਲੰਧਰ ਵਿਖੇ, ਡਾ. ਰਕੇਸ਼ ਗੁਪਤਾ ਸਟੇਟ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਅਫਸਰ (ਐਨ.ਪੀ.ਸੀ.ਬੀ.) ਦੀ ਰਹਿਨੁਮਾਈ ਹੇਠ 30ਵੇਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਮੌਕੇ (ਸ੍ਰੀਮਤੀ) ਵਿਨੀ ਮਹਾਜਨ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸੈਕਰੈਟਰੀ, ਸਿਹਤ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ ਪੰਜਾਬ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਮੁਖ ਮਹਿਮਾਨ ਵਜੋਂ ਉਪਸਥਿਤ ਹੋਏ। ਸਮਾਗਮ ਦੌਰਾਨ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਸਕੱਤਰ ਸ੍ਰੀ ਸੁਭਾਸ਼ ਮਲਿਕ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਅਤੇ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੀ ਕਾਰਗੁਜਾਰੀ ਬਾਰੇ ਚਾਨਣਾ ਪਾਇਆ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਡਾ. ਸ੍ਰੀ ਭਾਗ ਮੱਲ, ਡਾਇਰੈਕਟਰ, ਸਿਹਤ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ ਪੰਜਾਬ, ਚੰਡੀਗੜ ਅਤੇ ਡਾ. ਧਰਮਵੀਰ ਚਾਲੀਆ ਅੱਖਾਂ ਦੇ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਮੁਖੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਵਿਸਥਾਰ ਪੂਰਵਕ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ ਗਈ। (ਸ੍ਰੀਮਤੀ) ਵਿਨੀ ਮਹਾਜਨ ਵਲੋਂ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੀ ਐਂਬੂਲੈਂਸ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਲਈ ਰਵਾਨਾ ਕੀਤਾ ਗਿਆ।

1-9-2015

ਮਰਿਗਾਵੰਤੀ ਜੈਨ ਮਹਿਲਾ ਮੰਡਲ, ਸੁੰਦਰ ਨਗਰ, ਬਸਤੀ ਜੋਧੇਵਾਲ ਵਿਖੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਵਾਅਦਾ ਫਾਰਮ ਭਰਨ ਬਾਰੇ ਸ੍ਰੀਮਤੀ ਉਰਮਲਾ ਦੇਵੀ ਦੀ ਰਹਿਨੁਮਾਈ ਹੇਠ ਸੈਮੀਨਾਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਜਿਸ ਵਿੱਚ 75 ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਵਾਅਦਾ ਫਾਰਮ ਭਰੇ। ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਸਕੱਤਰ ਸ੍ਰੀ ਸੁਭਾਸ਼ ਮਲਿਕ ਅਤੇ ਸੀਨੀਅਰ ਆਈ ਬੈਂਕ ਟੈਕਨੀਸ਼ੀਅਨ ਰਛਪਾਲ ਸਿੰਘ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਬਾਰੇ ਵਿਚਾਰ ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਤੇ।

2-9-2015

ਯੂਥ ਰੈੱਡ ਕਰਾਸ ਯੂਨਿਟ ਖਾਲਸਾ ਕਾਲਜ ਫਾਰ ਵਿਮੈਨ ਸਿਵਲ ਲਾਈਨ ਲੁਧਿਆਣਾ ਵਿਖੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਸੈਮੀਨਾਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਸੈਮੀਨਾਰ ਨੂੰ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਡਾ. ਮਿਸਿਜ਼ ਮੁਕਤੀ ਗਿੱਲ ਅਤੇ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਮੀਡੀਆ ਇੰਚਾਰਜ ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਪਮਾਲ ਅਤੇ ਸੀਨੀਅਰ ਆਈ ਬੈਂਕ ਟੈਕਨੀਸ਼ੀਅਨ ਰਛਪਾਲ ਸਿੰਘ ਨੇ ਵੀ ਸੰਬੋਧਨ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ 100 ਦੇ ਲਗਭਗ ਵਿਦਿਆਰਥਣਾਂ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਵਾਅਦਾ ਫਾਰਮ ਭਰੇ।

3-9-2015

ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਮਨਸੂਰਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਹਸਪਤਾਲ ਮਨਸੂਰਾਂ ਵਿਖੇ ਕੌਮੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਮੀਟਿੰਗ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਡਾ. ਸੁਰਿੰਦਰ ਕੁਮਾਰ ਗੁਪਤਾ ਆਈ ਸਰਜਨ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਮਰਨ ਉਪਰੰਤ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ ਅਤੇ ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ 15 ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਵਾਅਦਾ ਫਾਰਮ ਭਰੇ।

4-9-2015

ਪੁਨਰਜੋਤ ਬ੍ਰਾਂਚ ਫਗੜਾੜਾ ਦੇ ਕੋਆਰੀਨੇਟਰ ਸ੍ਰੀ ਅਸ਼ੋਕ ਮਹਿਰਾ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਹੇਠ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਸਬੰਧੀ ਸੈਮੀਨਾਰ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਜਿਸ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਬਲੱਡ ਬੈਂਕ ਫਗਵਾੜਾ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸ. ਮਲਕੀਤ ਸਿੰਘ ਰਘਬੋਤਰਾ ਨੇ ਕੀਤੀ। ਸੈਮੀਨਾਰ ਦੌਰਾਨ ਬੁਲਾਰਿਆਂ ਨੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚੋਂ ਨੇਤਰਹੀਣਤਾ ਦੂਰ ਕਰਨ ਲਈ ਮਰਨ ਉਪਰੰਤ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਦੀ ਲੋੜ ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ।

ਨੇਤਰਦਾਨ ਸੰਸਥਾ ਨਵਾਂ ਸ਼ਹਿਰ ਵਲੋਂ ਸਿਵਲ ਹਸਪਤਾਲ ਬੰਗਾ ਦੇ ਸੀਨੀਅਰ ਮੈਡੀਕਲ ਅਫਸਰ ਡਾ. ਰੇਨੂ ਸੂਦ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਹੇਠ ਬਾਬਾ ਗੋਲਾ ਸੀਨੀਅਰ ਸੈਕੰਡਰੀ ਸਕੂਲ ਬੰਗਾ ਵਿਖੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੈਦਾ ਕਰਨ ਲਈ ਸੈਮੀਨਾਰ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਜਿਸ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ ਦੇ ਮਾਹਿਰ ਡਾ. ਨਵਦੀਪ ਕੌਰ, ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਹਰਦੀਪ ਅਰੋੜਾ, ਸ੍ਰੀ ਰਤਨ ਕੁਮਾਰ ਜੈਨ, ਸ੍ਰੀ ਯਸ਼ਪਾਲ ਹਾਫਿਜ਼ਬਾਦੀ, ਸ. ਜੋਗਾ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਸ੍ਰੀ ਸੁਭਾਸ਼ ਅਰੋੜਾ ਨੇ ਸੰਬੋਧਨ ਕੀਤਾ।

5-9-2015

ਸ੍ਰੀ ਅਸ਼ੋਕ ਮਹਿਰਾ ਕੋਆਰਡੀਨੇਟਰ ਪੁਨਰਜੋਤ ਬਰਾਂਚ ਫਗਵਾੜਾ ਦੀ ਰਹਿਨੁਮਾਈ ਹੇਠ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਚੇਤਨਾ ਰੈਲੀ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਹ ਰੈਲੀ ਫਗਵਾੜਾ ਦੇ ਵੱਖ ਵੱਖ ਬਜ਼ਾਰਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਹੁੰਦੀ ਹੋਈ ਨਗਰ ਪਾਲਿਕਾ ਦਫਤਰ ਫਗਵਾੜਾ ਵਿਖੇ ਸਮਾਪਤ ਹੋਈ। ਇਸ ਰੈਲੀ ਵਿੱਚ ਬੈਨਰਾਂ, ਸਲੋਗਨਾਂ ਅਤੇ ਪੈਂਫਲਿਟਾਂ ਰਾਹੀਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਬਾਰੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਜਿਸ ਵਿਚ ਸ਼ਹਿਰ ਦੇ ਡੇਢ ਦਰਜਨ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੇ ਹਿੱਸਾ ਲਿਆ। ਸ਼ਹਿਰ ਨਿਵਾਸੀਆਂ ਨੇ ਇਸ ਚੇਤਨਾ ਰੈਲੀ ਨੂੰ ਭਰਵਾਂ ਹੁੰਗਾਰਾ ਦਿੱਤਾ।

6-9-2015

ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਵਲੋਂ ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਸੁਪਰਸ਼ਪੈਸ਼ਿਲਟੀ ਆਈ ਕੇਅਰ ਅਤੇ ਲੇਜ਼ਰ ਸੈਂਟਰ ਬਰਾਂਚ ਰਾਏਕੋਟ ਵਿਖੇ ਅੱਖ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਇੱਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸੈਮੀਨਾਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਸੈਮੀਨਾਰ ਨੂੰ ਸ੍ਰੀ ਜਸਵਿੰਦਰ ਵਸ਼ਿਸਟ, ਉੱਘੇ ਸਮਾਜ ਸੇਵੀ ਸ. ਕੰਵਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਜਵੰਦਾ, ਜੇ.ਆਰ. ਵੋਹਰਾ ਅਤੇ ਸੁਮੀਤ ਸਿੰਘ ਨੇ ਸੰਬੋਧਨ ਕੀਤਾ।

7-9-2015

ਪੰਜਾਬ ਕਾਲਜ ਆਫ ਟੈਕਨੀਕਲ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਬਦੋਵਾਲ ਵਿਖੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸੈਮੀਨਾਰ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਜਿਸ ਵਿੱਚ 200 ਦੇ ਲਗਭਗ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਵਾਅਦਾ ਫਾਰਮ ਭਰੇ।

ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਮੈਨੇਜਿੰਗ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਡਾ. ਰਮੇਸ਼, ਸਕੱਤਰ ਸ੍ਰੀ ਸੁਭਾਸ ਮਲਿਕ, ਪੁਨਰਜੋਤ ਬਰਾਂਚ ਫਗਵਾੜਾ ਦੇ ਕੋਆਰਡੀਨੇਟਰ ਸ੍ਰੀ ਅਸ਼ੋਕ ਮੈਹਰਾ ਅਤੇ ਡਾ. ਮਨਜੀਤ ਸਿੰਘ ਜਿਲ੍ਹਾ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਮੈਨੇਜਰ (ਐਨ.ਪੀ.ਸੀ.ਬੀ.) ਨੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਵਿਸਥਾਰ ਪੂਰਵਕ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ। ਪੰਜਾਬ ਕਾਲਜ ਆਫ ਟੈਕਨੀਕਲ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਬਦੋਵਾਲ ਦੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਯੋਗੇਸ਼ ਗੁਪਤਾ ਜੀ ਨੇ ਬੁਲਾਰਿਆਂ ਅਤੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦਾ ਧੰਨਵਾਦ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਕਾਲਜ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਵਿਚ ਹਰ ਪਖੋਂ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾਉਣ ਲਈ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਦਿਵਾਇਆ।

ਬਲਾਚੌਰ ਦੇ ਸੀਨੀਅਰ ਮੈਡੀਕਲ ਅਫਸਰ ਡਾ. ਸੁਨੀਲ ਪਾਠਕ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਬਾਬਾ ਬਲਰਾਜ ਕਾਲਜ ਬਲਾਚੌਰ ਵਿਚ ਨੇਤਰਦਾਨ ਸੰਸਥਾ ਨਵਾਂ ਸ਼ਹਿਰ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਸੈਮੀਨਾਰ ਕਰਵਾਇਆ ਗਿਆ। ਇਸ ਸੈਮੀਨਾਰ ਵਿਚ ਐਸ.ਐਮ.ਓ. ਡਾ. ਸੁਨੀਲ ਪਾਠਕ, ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਮਾਹਿਰ ਡਾਕਟਰ ਰੈਨੂ ਮਿੱਤਲ, ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਡਾ. ਪੂਨਮ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਸ੍ਰੀ ਰਤਨ ਕੁਮਾਰ ਜੈਨ, ਸ੍ਰੀ ਯਸ਼ਪਾਲ ਸਿੰਘ ਹਾਫਿਜ਼ਬਾਦੀ ਸ. ਜੋਗਾ ਸਿੰਘ ਸਾਧੜਾ ਨੇ ਮਰਨ ਉਪਰੰਤ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਬਾਰੇ ਚਾਨਣਾ ਪਾਇਆ।

8-9-2015

ਲੌਰਡ ਮਹਾਂਵੀਰ ਹੋਮੀਓਪੈਥਿਕ ਮੈਡੀਕਲ ਕਾਲਜ ਅਤੇ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਖੇ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੈਦਾ ਕਰਨ ਲਈ ਸੈਮੀਨਾਰ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਮੀਡੀਆ ਇੰਚਾਰਜ ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਬਾਰੇ ਚਾਨਣਾ ਪਾਇਆ। ਕਾਲਜ ਦੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਡਾ. ਰਵਿੰਦਰ ਕੋਛੜ ਨੇ ਵੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਬਾਰੇ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਤੇ। ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਮੇਤ 100 ਦੇ ਲਗਭਗ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਅਤੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੇ ਵਾਅਦਾ ਫਾਰਮ ਭਰੇ।

8-9-2015

30ਵੇਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦੇ ਸਮਾਪਤੀ ਸਮਾਰੋਹ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਨਗਰ ਨਿਗਮ ਲੁਧਿਆਣਾ ਦੇ ਮੇਅਰ ਸ. ਹਰਚਰਨ ਸਿੰਘ ਗੋਹਲਵੜੀਆ ਨੇ ਕੀਤੀ। ਉਨਾਂ ਸ਼ਹਿਰ ਨਿਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਦੇ ਪਵਿਤਰ ਕਾਰਜ ਵਿੱਚ ਵੱਧ ਚੜ ਕੇ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾਉਣ ਦੀ ਅਪੀਲ ਕੀਤੀ। ਸਮਾਗਮ ਨੂੰ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਮੈਨੇਜਿੰਗ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਅਤੇ ਸਕੱਤਰ ਸ੍ਰੀ ਸੁਭਾਸ ਮਲਿਕ ਨੇ ਵੀ ਸੰਬੋਧਨ ਕੀਤਾ।

30ਵੇਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦਾ ਸਮਾਪਤੀ ਸਮਾਰੋਹ ਨੇਤਰਦਾਨ ਸੰਸਥਾ ਨਵਾਂ ਸ਼ਹਿਰ ਵਲੋਂ ਬੀ.ਐਲ. ਐਮ. ਗਰਲਜ਼ ਕਾਲਜ ਰਾਹੋਂ ਰੋਡ ਵਿਖੇ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਸਮਾਰੋਹ ਵਿਚ ਡਾ. ਅਮਰਜੀਤ ਕੌਰ ਸਿਵਲ ਸਰਜਨ, ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਨਗਰ ਅਤੇ ਡਾ. ਗਿਆਨ ਚੰਦ ਸਹਾਇਕ ਸਿਵਲ ਸਰਜਨ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਤੌਰ ਤੇ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋਏ। ਡਾ. ਅਮਰਜੀਤ ਕੌਰ ਸਿਵਲ ਸਰਜਨ ਨੇ ਨੇਤਰਦਾਨ ਸੰਸਥਾ ਨਵਾਂ ਸ਼ਹਿਰ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਸਬੰਧੀ ਕੀਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਯਤਨਾਂ ਦੀ ਭਰਪੂਰ ਸ਼ਲਾਘਾ ਕੀਤੀ। ਸਮਾਰੋਹ ਨੂੰ ਕਾਲਜ ਕਮੇਟੀ ਦੇ ਸਕੱਤਰ ਸ੍ਰੀ ਵਿਨੋਦ ਭਾਰਦਵਾਜ, ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸ੍ਰੀਮਤੀ ਮਿਨਾਕਸ਼ੀ ਸ਼ਰਮਾ ਅਤੇ ਨੇਤਰਦਾਨ ਸੰਸਥਾ ਨਵਾਂ ਸ਼ਹਿਰ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਡਾ. ਜੇ.ਡੀ. ਵਰਮਾ ਨੇ ਵੀ ਸੰਬੋਧਨ ਕੀਤਾ।

ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਪਮਾਲ
ਸਹਿ ਸੰਪਾਦਕ

नेत्र दान महा कल्याण

ਕਹਾਣੀ

ਦੀਦੋ

ਡਾ. ਰਮੇਸ਼

"ਪ੍ਰੀਤੋ ਕੀ ਕਰਦੀ ਪਈ ਹੈਂ?" ਬੇਬੇ ਨੇ ਉੱਚੀ ਆਵਾਜ ਦੇ ਕੇ ਪੁੱਛਿਆ।

"ਬੇਬੇ ਮੇਰਾ ਪੇਪਰ ਹੈ ਪਰਸੋਂ ਪੜਦੀ ਹਾਂ।"

ਨੀ ਤੇਰਾ ਬਾਪੂ ਨਹੀਂ ਅਜੇ ਆਇਆ। ਜ਼ਰਾ ਬਾਹਰ ਜਾ ਕੇ ਪਤਾ ਤੇ ਕਰ ਕੇ ਆ।

"ਅੱਛਾ ਬੇਬੇ ਜਾਂਦੀ ਹਾਂ।"

ਪ੍ਰੀਤੋ ਜਿਸ ਦਾ ਨਾਂ ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ 14 ਸਾਲਾਂ ਦੀ ਕੁੜੀ, ਪੜ੍ਹਨ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਹੀ ਹੁਸ਼ਿਆਰ, ਲੇਕਿਨ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿਚ ਅਤਿਅੰਤ ਗਰੀਬੀ ਹੋਣ ਕਾਰਨ, ਆਰਥਿਕ ਪੱਖੋਂ ਕਮਜ਼ੋਰ ਵਿਚਾਰੀ ਹਮੇਸ਼ਾ ਸੋਚਾਂ ਵਿਚ ਪਈ ਰਹਿੰਦੀ ਸੀ। ਪੈਸੇ ਇੱਕਠੇ ਕਰਨ ਦੀ ਉਧੇੜ ਬੁਣ ਵਿਚ ਉਵੇਂ ਨਿਕੜੀ ਜਿਹੀ ਜਿੰਦੜੀ ਨੂੰ ਵੀ ਆਪਣੀ ਪੜ੍ਹਾਈ, ਆਪਣੇ ਨਿਕੇ ਨਿਕੇ ਨਾ ਪੂਰੇ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਸ਼ੌਕ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿਚ ਪਹਾੜਾਂ ਜਿੱਡੇ ਬੋਝ, ਪ੍ਰੀਤੋ ਨੂੰ ਇਨਾਂ ਹਾਲਾਤਾਂ ਨਾਲ ਨਿਪਟਣ ਦੀ ਆਦਤ ਜਿਹੀ ਪੈ ਗਈ ਸੀ। ਨੌਵੀਂ ਕਲਾਸ ਦੀ ਵਿਦਿਆਰਥਣ ਘਰ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪੜੀ ਲਿਖੀ ਸਖਸ਼ੀਅਤ ਸੀ।

ਪ੍ਰੀਤੋ ਜਦੋਂ ਘਰੋਂ ਨਿਕਲੀ ਦੂਰੋ ਦਾਦਾ ਤੁਰਿਆ ਆਉਂਦਾ ਨਜ਼ਰ ਆਇਆ। ਅੱਖ ਤੇ ਪੱਟੀ ਬੰਨੀ ਆਉਂਦਾ ਵੇਖ ਕੇ ਬਸ ਦਿਲ ਹੀ ਬੈਠ ਗਿਆ। ਬਾਪੂ ਕੋਲ ਪਹੁੰਚੀ, ਕਿਹਾ ਬਾਪੂ ਕੀ ਹੋਇਆ ਤੇਰੀ ਅੱਖ ਨੂੰ। ਬਾਪੂ ਕਿਹਾ ਪੁੱਤ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ, ਅੱਖ ਵਿਚ ਬਕਰੀਆਂ ਚਰਵਾਉਂਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਸਣ ਲਗ ਗਈ ਸੀ। ਸ਼ਹਿਰੋਂ ਦਵਾਈ ਲੈ ਕੇ ਆਇਆਂ। ਡਾਕਟਰ ਕਹਿੰਦਾ ਇਨਫੈਕਸ਼ਨ ਹੋ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਪੁਤਲੀ ਬਦਲਣ ਦਾ ਓਪਰੇਸ਼ਨ ਹੋਊ। ਬਸ ਦਵਾਈ ਲੈ ਕੇ ਆਇਆ ਹਾਂ। ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਪੁਤ ਮਾਲਿਕ ਭਲੀ ਕਰੂ ਤੂੰ ਫਿਕਰ ਨਾ ਕਰ।

ਪ੍ਰੀਤੋ ਦਾਦੇ ਦਾ ਹੱਥ ਫੜ ਘਰ ਅੰਦਰ ਵੜਦੀ ਹੈ। ਪ੍ਰੀਤੋ ਦੀ ਦਾਦੀ ਨੇ ਅੱਖ ਤੇ ਪੱਟੀ ਬੰਨ੍ਹੀ ਵੇਖ ਕੇ ਕਿਹਾ ਤੇਰੀ ਅੱਖ ਤੇ ਕੀ ਹੋਇਆ। ਦਾਦੇ ਨੇ ਮੰਜੇ ਤੇ ਬੈਠ ਕਿਹਾ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਠੀਕ ਹੋ ਜਾਉ ਥੋੜੀ ਸਣ ਲੱਗੀ ਹੈ। ਸਾਰਾ ਟੱਬਰ ਬਾਪੂ ਦੇ ਕੋਲ ਆ ਕੈ ਬੈਠਾ, ਬਾਪੂ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਡਾਕਟਰਾਂ ਨੇ ਤਾਂ ਮਨਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ, ਤੈਨੂੰ ਪੀ.ਜੀ.ਆਈ ਜਾਣਾ ਪਊ ਜਾਂ 50-60 ਹਜਾਰ ਦਾ ਖਰਚਾ ਪ੍ਰਈਵੇਟ ਕਰਨਾ ਪਊ। ਅਜੇ ਤਾਂ ਦਵਾਈਆਂ ਲੈ ਕੇ ਆਇਆ ਹਾਂ ਚੱਲੋ ਕੋਈ ਰਸਤਾ ਨਿਕਲ ਆਊ। ਬਾਪੂ ਨੂੰ ਖਾਣਾ ਖੁਆ ਕੇ ਬਿਸਤਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਅਤੇ ਪ੍ਰੀਤੋ ਆਪਣੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਵਿਚ ਲੱਗ ਪਈ।

ਪਰ ਪ੍ਰੀਤੋ ਦੇ ਜੇਹਨ ਦੇ ਸਵਾਲਾਂ ਦੇ ਜਵਾਬ ਉਸ ਦੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਸੀ ਉਹ ਤਾਂ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿਚ ਆਈ ਇਕ ਦਮ ਔਕੜ ਜਿਸ ਵਿਚ 50 ਹਜਾਰ ਖਰਚੇ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਿਵੇਂ ਹੋਏ ਉਸ ਦਾ ਹੱਲ ਕੱਢਣਾ ਸੀ, ਨਾ ਕਿ ਪਾਠ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਕਿਤੇ ਔਖੇ ਸਵਾਲਾਂ ਨੂੰ ਬਿਨਾ ਟਿਊਸ਼ਨ ਜਾਂ ਹੈਲਪ ਬੁੱਕਾਂ ਦੀ ਮਦਦ ਨਾਲ ਕੱਢਣਾ।

ਨਿੱਕੀ ਜਿਹੀ ਜਿੰਦ ਪ੍ਰੀਤੋ ਜਿਹੜੀ ਘਰ ਵਿਚ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਖਰਚੇ, ਹਿਸਾਬ ਕਿਤਾਬ ਅਤੇ ਹੋਰ ਪ੍ਰਬੰਧ ਦਾ ਲੇਖਾ ਜੋਖਾ ਰੱਖਦੀ ਹੈ। ਉਸਨੂੰ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਦੇ ਦੱਸੇ, ਐਵੇਂ ਹੀ ਬੋਝ ਆਪਣੇ ਸਿਰ ਤੇ ਪਾਈ ਬੈਠੀ ਸੀ। ਪ੍ਰੀਤੋ, ਜਿਵੇਂ ਕਿਸੇ ਅਦਾਰੇ ਜਾਂ ਵਿਭਾਗ ਨੂੰ ਚਲਾਉਣ ਲਈ ਵਿਓਂਤ ਬੰਦੀ ਕਰਕੇ ਬਜਟ ਬਣਾਉਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਗਰੀਬ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿਚ ਤਾਂ ਸ਼ਾਇਦ ਇਸ ਦੀ ਲੋੜ ਹੀ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦੀ ਬਸ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਹੀ ਐਨੀਆਂ ਪੈਂਦੀਆਂ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ ਜਿਵੇਂ ਅਖਾਣ ਹੈ ਇਕੋ ਪੰਡ ਚੁਕ ਲੈ ਭੰਡਾ ਭੰਡਾਰੀਆ ਦੂਜੀ ਤਿਆਰ, ਵਾਲੀ ਗੱਲ। ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਉਤਾਰ ਚੜਾਅ ਪ੍ਰੀਤੋ ਦੇ ਮਨ ਵਿਚ ਘੁੰਮ ਰਹੇ ਹਨ। ਦਾਦੇ ਦੇ ਇਲਾਜ ਲਈ ਪੈਸੇ ਕਿੱਥੋਂ ਆਉਣਗੇ, ਪ੍ਰੀਤੋ ਨੇ ਤਾਂ ਹੋਰ ਕਿਤਾਬਾਂ ਖਰੀਦਣ ਲਈ 700 ਰੁਪਏ ਬੜੀ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਨਾਲ ਇੱਕਠੇ ਕੀਤੇ ਸੀ। ਉਸ ਸੋਚਿਆ ਸੀ ਮੈਂ ਇਸ ਵਾਰ ਬੋਰਡ ਦੇ ਪੇਪਰ ਵਿਚ ਮੈਰਿਟ ਤੇ ਆਉਂਗੀ ਫੇਰ

ਮੈਨੂੰ ਵਜੀਫਾ ਮਿਲੂ ਤੇ ਮੇਰੀ ਮੈਡਮ ਕਹਿੰਦੀ ਸੀ ਤੂੰ ਫੇਰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਪੜ ਸਕੇਗੀ। ਵੱਡੀ ਅਫਸਰ ਬਣੂੰਗੀ। ਪ੍ਰੀਤੋ ਘਰ ਦੀ ਗਰੀਬੀ ਦਾ ਕਲੰਕ ਕਟ ਦਿਉਂਗੀ। ਦਾਦੇ ਨੂੰ ਬਕਰੀਆਂ ਅਤੇ ਬਾਕੀ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਦਿਹਾੜੀਆਂ ਕਰਨ ਨਹੀਂ ਜਾਣਾ ਪਊ। ਪਰ ਹੁਣ ਜੋੜੇ ਹੋਏ ਪੈਸੇ ਅੱਖ ਦੇ ਇਲਾਜ ਲਈ ਦੇਣੇ ਪੈਣਗੇ। ਇਕ ਪਾਸੇ ਦਾਦੇ ਦੀ ਅੱਖ ਅਤੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਕਿਤਾਬਾਂ। ਉਸਨੂੰ ਕੋਈ ਹਲ ਨਜ਼ਰ ਨਹੀਂ ਸੀ ਆਉਂਦਾ। ਇਕ ਹੱਲ ਜੋ ਅਕਸਰ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿਚ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਟੂੰਮਾਂ ਰੱਖ ਦਿਉ, ਜਾਂ ਫੇਰ ਇਕ ਦੋ ਬੱਕਰੀਆਂ ਵੇਚ ਦਿਉ, ਟੂੰਮਾ ਤਾਂ ਹੁਣ ਹੈ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਇਕ ਦੋ ਬੱਕਰੀਆਂ ਵੇਚਣ ਨਾਲ ਕੀ ਬਣੂ। ਜਦੋਂ ਬੱਕਰੀਆਂ ਵੇਚਣ ਦਾ ਵਿਚਾਰ ਆਇਆ ਤਾਂ ਉਸਦੇ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਦਮ ਕੰਬਣੀ ਜਿਹੀ ਛਿੜ ਗਈ ਕਿਤੇ ਮੇਰੀ ਸਭ ਤੋਂ ਪਿਆਰੀ ਲਾਡਲੀ ਬੱਕਰੀ ਦੀਦੋ ਦੀ ਵਾਰੀ ਨਾ ਕਿਤੇ ਆ ਜਾਵੇ। ਦੀਦੋ ਨਾਲ ਪ੍ਰੀਤੋ ਬਹੁਤ ਪਿਆਰ ਕਰਦੀ ਸੀ।

ਸੋਚਾਂ ਦਾ ਬੱਦਲ ਉਡਦਾ ਹੋਇਆ, ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਦੇ ਆਸਮਾਨ ਵਿਚ ਬਸ, ਬੇਡਰ ਬਣ ਇਧਰ ਉਧਰ ਭਟਕਦਾ ਹੀ ਫਿਰ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਪ੍ਰੀਤੋ ਨੂੰ ਡਰ ਜਿਹਾ ਲੱਗਣ ਲੱਗ ਪਿਆ ਸੀ ਕਿ ਹੁਣ ਦੀਦੋ ਨੂੰ ਵੇਚਣ ਕੀ ਵਾਰੀ ਆ ਗਈ ਹੈ। ਦੀਦੋ ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੀ ਸਹੇਲੀ ਜਾਂ ਆਪਣੀ ਛੋਟੀ ਭੈਣ ਵਾਂਗੂ ਹੀ ਲਗਦੀ ਸੀ। ਕਈ ਵਾਰ ਉਸ ਨਾਲ ਪ੍ਰੀਤੋ ਗੱਲਾਂ ਕਰ ਆਪਣੇ ਸਵਾਲਾਂ ਦੇ ਜਵਾਬ ਵੀ ਲੈ ਲੈਂਦੀ ਸੀ। ਬਸ ਸਮਝੋ ਗਰੀਬ ਬੰਦੇ ਦਾ ਮਨ ਪਰਚਾਵਾ। ਏਨੇ ਨੂੰ ਬੇਬੇ ਨੇ ਉੱਚੀ ਆਵਾਜ ਦੇ ਕੇ ਕਿਹਾ ਪ੍ਰੀਤੋ ਹੁਣ ਸੌਂ ਜਾ ਬਹੁਤ ਰਾਤ ਹੋ ਗਈ ਹੈ, ਹੁਣ ਕਲ ਪੜ੍ਹ ਲਵੀਂ।

ਪ੍ਰੀਤੋ ਨੇ ਕਿਹਾ ਜੀ ਬੇਬੇ। ਬੇਸ਼ਕ ਪ੍ਰੀਤੋ ਨੇ ਕਿਤਾਬਾਂ ਅਤੇ ਲਾਈਟ ਬੰਦ ਕਰਕੇ, ਸੌਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਵਿਚ ਮੰਜੇ ਤੇ ਪੈ ਗਈ ਲੇਕਿਨ ਦਾਦੇ ਦੀ ਅੱਖ ਦੇ ਇਲਾਜ ਦਾ ਮਹਿੰਗਾ ਖਰਚ ਅਤੇ ਦੀਦੋ ਦੇ ਵੇਚਣ ਦੇ ਸਵਾਲਾਂ ਦੀ ਕਿਤਾਬ ਅਜੇ ਵੀ ਖੁਲ੍ਹੀ ਸੀ।

ਨਿਆਣੀ ਜਿੰਦ ਸਵੇਰੇ ਉਠ ਤਿਆਰ ਹੋ ਸਕੂਲ ਨੂੰ ਚਲੀ ਗਈ। ਜਦੋਂ ਵੀ ਮਨ ਵਿਚ ਵੇਹਲ ਹੁੰਦੀ ਬਸ ਦਾਦੇ ਦੀ ਅੱਖ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਬਕਰੀ ਦੀਦੋ ਹੀ ਖਿਆਲ ਵਿਚ ਆਉਂਦੀ।

ਦਾਦਾ ਬੇਚਾਰਾ ਕਈ ਦਿਨ ਟੱਕਰਾਂ ਮਾਰਦਾ ਰਿਹਾ ਇਲਾਜ ਵਾਸਤੇ ਬੱਸ ਦਵਾਈਆਂ ਪਾ ਪਾ ਕੇ ਉਹ ਜਿਵੇਂ ਹੰਬ ਗਿਆ ਹੁੰਦਾ। ਇਕ ਪਾਸੇ ਬੁਢਾਪਾ, ਬਕਰੀਆਂ ਕੌਣ ਹੁਣ ਚਰਾਵੇ, ਮੈਨੂੰ ਕੋਣ ਸੰਭਾਲੂ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕੀ ਕੀ ਭੈੜੇ ਖਿਆਲ ਬਾਪੂ ਦੇ ਮਨ ਵਿਚ ਆਉਂਦੇ ਰਹੇ। ਸਵੇਰੇ ਬਾਪੂ ਘਰੋਂ ਨਿਕਲ ਜਾਇਆ ਕਰੇ ਦੇਰ ਸ਼ਾਮ ਨੂੰ ਨਿਰਾਸ਼ਾ ਹੋਇਆ ਪਹੁੰਚਿਆ ਕਰੇ। ਬਸ ਅੱਖ ਨੂੰ ਕੋਈ ਅਰਾਮ ਨਹੀਂ ਸੀ ਆ ਰਿਹਾ।

ਪ੍ਰੀਤੋ ਤਾਂ ਬਸ ਚੁਪਚਾਪ ਘਰ ਦੇ ਹਾਲਾਤ ਸਿਰਫ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰ ਰਹੀ ਸੀ। ਹੁਣ ਬਾਹਰ ਖੇਡਨ ਵੀ ਨਹੀਂ ਸੀ ਜਾਂਦੀ। ਇਕ ਸ਼ਾਮ ਦਾਦਾ ਜਦ ਘਰ ਆਇਆ ਉਸ ਦੱਸਿਆ ਮੇਰਾ ਕਲ ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਹੋਣਾ ਹੈ। ਪ੍ਰੀਤੋ ਬਹੁਤ ਡਰ ਗਈ ਸੀ ਕਿ ਹੁਣ ਦੇ ਬਚਾਏ ਪੈਸੇ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਪਿਆਰੀ ਬਕਰੀ ਦੀਦੋ ਦੀ ਵਾਰੀ ਆ ਗਈ ਹੈ।

ਦਾਦੇ ਦੀ ਅੱਖ ਜਿਆਦਾ ਜਰੂਰੀ ਹੈ। ਦਾਦਾ ਸਾਰਾ ਦਿਨ ਬੱਕਰੀਆਂ ਚਰਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਸਾਡਾ ਪਰਿਵਾਰ ਚਲਦਾ ਹੈ, ਇਕ ਵੱਡਾ ਸਵਾਲ ਹੈ ਮੇਰੇ ਸਵਾਲ ਦਾ ਕੀ ਹੈ ਮੇਰੀਆ ਕਿਤਾਬਾਂ ਫੇਰ ਆ ਜਾਣਗੀਆਂ। ਮੇਰੀ ਦੀਦੋ ਦਾ ਕੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਹੋਰ ਮਿਹਨਤ ਕਰ ਲੂੰ। ਵਜੀਫਾ ਨਾ ਮਿਲੂ ਤਾਂ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਮੇਰੇ ਸਵਾਲਾਂ ਦੇ ਜਵਾਬ ਨਾਲੋ ਦਾਦੇ ਦੇ ਸਵਾਲ ਵੱਡੇ ਨੇ ਉਨਾਂ ਦੇ ਜਵਾਬ ਜਿਆਦਾ ਜਰੂਰੀ ਨੇ। ਫੇਰ ਦਾਦੀ ਦੀ ਗੱਲ ਯਾਦ ਆ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਕੁੜੇ ਫਿਕਰ ਨਾ ਕਰਿਆ ਕਰ ਐਵੇਂ ਮਾਲਿਕ ਭੱਲੀ ਕਰੂ ਤੂੰ ਐਂਵੇ ਬੋਝਾਂ ਦੀ ਪੰਡ ਸਿਰ ਤੇ ਚੁੱਕੀ ਫਿਰਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਏਂ। ਆਪਣੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਵਲ ਖਿਆਲ ਕਰਿਆ ਕਰ।

ਦਾਦਾ ਅਗਲੀ ਸਵੇਰ ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੋਇਆ ਤਾਂ ਸਮੁੱਚੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਤੁਸੀ ਫਿਰਕ ਨਾ ਕਰੋ ਕਲ ਮੈਂ ਪੁਨਰਜੋਤ ਅੱਖ ਬੈਂਕ ਵਾਲੇ ਕੋਲ ਗਿਆ ਸੀ ਉਸ ਕਿਹਾ ਕਿ ਬਾਪੂ ਬਿਲਕੁਲ ਫਿਕਰ ਨਾ ਕਰ ਤੂੰ ਹੁਣੇ ਦਾਖਲ ਹੋ ਜਾ ਤੇਰਾ ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਬਿਲਕੁਲ ਮੁਫਤ

ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ। ਪਹਿਲਾਂ ਤਾਂ ਮੈਂ ਵੀ ਚੱਕਰ ਵਿਚ ਪੈ ਗਿਆ ਸੀ ਕਿ ਸ਼ਾਇਦ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਮਜਾਕ ਕਰ ਰਿਹੈ ਕਿ ਅੱਜ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਕਿਹੜਾ ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਮੁਫਤ ਕਰ ਦਿਉ ਲੇਕਿਨ ਬਾਅਦ ਵਿਚ ਬਾਹਰ ਬੈਠੇ ਕਈ ਹੋਰ ਮਰੀਜ ਮਿਲੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਦੀਆਂ ਪੁਤਲੀਆਂ ਦਾ ਵੀ ਬਿਲਕੁਲ ਮੁਫਤ ਇਲਾਜ ਕੀਤਾ ਹੋਇਆ ਸੀ ਅਤੇ ਉਹ ਠੀਕ ਵੇਖ ਵੀ ਰਹੇ ਸੀ। ਫੇਰ ਮੈਨੂੰ ਵੀ ਹੌਸਲਾ ਹੋਇਆ ਕਿ ਅਜੇ ਵੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਅਜਿਹੇ ਲੋਕ ਹਨ ਜੋ ਸਾਡੇ ਵਰਗੇ, ਗਰੀਬਾਂ ਲਈ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਤੁਸੀਂ ਫਿਕਰ ਨਾ ਕਰੋ ਦੋ ਦਿਨ ਉਥੇ ਦਾਖਲ ਹੋਣਾ ਹੈ। ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਵਲੋਂ ਉਨਾਂ ਦੇ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਖਾਣਾ ਅਤੇ ਰਹਿਣਾ ਵੀ ਫਰੀ ਹੈ। ਬਸ ਦੋ ਦਿਨ ਦੀ ਗੱਲ ਹੈ। ਮੈਂ ਆਇਆ। ਦਾਦਾ ਕਰਨੈਲ ਪ੍ਰੀਤੋ ਦੇ ਸਿਰ ਤੇ ਹੱਥ ਫੇਰਦਾ ਹੋਇਆ ਕਹਿ ਕੇ ਗਿਆ ਪ੍ਰੀਤੋ ਮਨ ਲਾ ਕੇ ਪੜ੍ਹੀਂ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਪੁੱਤ ਵੱਡਾ ਅਫਸਰ ਬਣਨਾ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਦੀਦੋ ਦਾ ਵੀ ਖਿਆਲ ਰੱਖੀਂ ਪੁਤ।

ਪ੍ਰੀਤੋ ਨੂੰ ਇੰਝ ਲੱਗਿਆ ਸ਼ਾਇਦ ਉਸ ਦੀ ਜਿੰਦਗੀ ਦੀ ਕਿਤਾਬ ਦੇ ਔਖੇ ਸਵਾਲਾਂ ਦਾ ਜਵਾਬ ਦਾਦਾ ਸਿਰਫ ਦੋ ਲਾਇਨ ਵਿਚ ਸਿਰ ਤੇ ਹੱਥ ਫੇਰ ਦੇ ਕੇ ਗਿਆ ਜਿਵੇਂ ਹੈਡ ਮਾਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਕਦੇ ਕਦੇ ਕਲਾਸ ਵਿਚ ਆ ਕੇ ਔਖੇ ਸੁਵਾਲਾਂ ਦਾ ਜਵਾਬ ਬਹੁਤ ਹੀ ਅਸਾਨ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਦਸ ਕੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਦੋ ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਬਾਪੂ ਕਰਨੈਲ ਖਰਾਬ ਹੋਈ ਅੱਖ ਦੀ ਪੁਤਲੀ ਬਦਲਵਾ ਕੇ ਵਾਪਿਸ ਘਰ ਪਰਤ ਆਇਆ। ਕਈ ਦਿਨ ਤੱਕ ਦਵਾਈਆਂ ਪਵਾਉਂਦਾ ਰਿਹਾ ਹੁਣ ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਬਾਪੂ ਦੀ ਅੱਖ ਠੀਕ ਹੋਣ ਲੱਗ ਪਈ ਸੀ। ਹੁਣ ਬਾਪੂ ਬੱਕਰੀਆਂ ਵੀ ਚਰਾਉਣ ਲੱਗ ਪਿਆ ਸੀ।

ਪ੍ਰੀਤੋ ਨੂੰ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਬੜੀ ਖੁਸ਼ੀ ਕਿ ਸੀ ਉਸ ਦੇ ਜਮਾ ਕੀਤੇ ਪੈਸਿਆਂ ਨਾਲ ਉਹ ਕਿਤਾਬਾਂ ਲਿਆ ਕੇ ਵਧੀਆ ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰ ਰਹੀ ਸੀ। ਉਸ ਦਾ ਲਕਸ਼ ਵਜੀਫਾ ਲੈ ਕੇ ਵੱਡਾ ਅਫਸਰ ਬਨਣ ਦੀ ਸੀ। ਬੇਸ਼ਕ ਪੈਂਡਾ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਹੈ ਲੇਕਿਨ ਦੂਰ ਜਗਦਾ ਮੰਜਿਲ ਦਾ ਦੀਵਾ ਹੁਣ ਥੋੜਾ ਬੇਹਤਰ ਨਜਰ ਆ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਉਸ ਦੀ ਲਾਡਲੀ ਦੀਦੋ ਨੂੰ ਵੀ ਕੋਈ ਖਤਰਾ ਨਹੀਂ ਸੀ ਕਿ ਉਸ ਤੋਂ ਅਲੱਗ ਹੋਵੇਗੀ। ਪੜ੍ਹਾਈ ਤੋਂ ਥੱਕਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਦੀਦੋ ਹੀ ਉਸਦੇ ਟਾਇਮ ਪਾਸ ਕਰਨ ਦਾ ਸਾਧਨ ਸੀ।

ਬਾਪੂ ਦੀ ਅੱਖ ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਬਿਲਕੁਲ ਠੀਕ ਹੋ ਗਈ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਦਾ ਬੱਦਲ ਹੌਈ ਹੌਲੀ ਪ੍ਰੀਤੋ ਦੇ ਘਰ ਦੇ ਆਸਮਾਨ ਵਿਚ ਫੱਟ ਗਿਆ।

ਪ੍ਰੀਤੋ ਦੇ ਮਨ ਵਿਚ ਇਕ ਵੱਡਾ ਸਵਾਲ ਸੀ ਜਿਸ ਦਾ ਉਸ ਨੂੰ ਜਵਾਬ ਨਹੀਂ ਸੀ ਮਿਲ ਰਿਹਾ ਕਿ ਅੱਜ ਦੇ ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਉਹ ਕਿਹੜਾ ਡਾਕਟਰ ਹਸਪਤਾਲ ਦੀ ਸੰਸਥਾ ਹੈ ਜਿਥੇ ਦਾਦੇ ਦਾ ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਮੁਫਤ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਦਾਦਾ ਸਿਰਫ ਝੂਠ ਬੋਲਦਾ ਹੈ ਸਾਡੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੇ ਕੋਈ ਹੋਰ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕੀਤਾ ਹੋਊ। ਵੈਸੇ ਤਾਂ ਪ੍ਰੀਤੋ ਵਿੱਤ ਮੰਤਰੀ ਵਾਂਗੂ ਘਰ ਦੇ ਸਾਰੇ ਆਰਥਿਕ ਪੱਖ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਣਦੀ ਸੀ। ਕਿਉਂਕਿ ਸਾਰਾ ਹਿਸਾਬ ਕਿਤਾਬ ਤਾਂ ਪ੍ਰੀਤੋ ਦੇ ਰਾਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਬਹੁਤ ਹੀ ਔਖਾ ਸਵਾਲ ਜਿਸ ਦਾ ਜਵਾਬ ਪ੍ਰੀਤੋ ਕੋਲ ਨਹੀਂ ਸੀ।

ਇਕ ਦਿਨ ਪ੍ਰੀਤੋ ਰਾਤ ਨੂੰ ਜਦੋਂ ਦਾਦੇ ਨੂੰ ਦੁੱਧ ਪਕੜਾਉਣ ਗਈ ਤਾਂ ਦਾਦੇ ਦੇ ਮੰਜੇ 'ਤੇ ਬੈਠੀ ਅਤੇ ਪੁੱਛਿਆ ਦਾਦਾ ਜੀ ਹੁਣ ਕੀ ਹਾਲ ਹੈ। ਦਾਦੇ ਨੇ ਕਿਹਾ, ਪੁੱਤ ਬਿਲਕੁਲ ਠੀਕ ਹਾਂ।

ਪ੍ਰੀਤੋ ਨੇ ਬੜੀ ਉਤਸੁਕਤਾ ਨਾਲ ਪੁੱਛਿਆ ਤੇਰਾ ਇਲਾਜ ਬਿਲਕੁਲ ਮੁਫਤ ਹੋਇਆ। ਦਾਦੇ ਨੇ ਕਿਹਾ, ਹਾਂ ਪ੍ਰੀਤੋ ਬਿਲਕੁਲ ਮੁਫਤ, ਮੇਰੀ 82 ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਹੋ ਗਈ ਮੈਂ ਬੜਾ ਤੁਰਿਆ ਫਿਰਿਆ ਹਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਮੈਨੂੰ ਵੀ ਯਕੀਨ ਨਹੀਂ ਸੀ।

ਦਾਦਾ ਜੀ ਉਹ ਕਿਹੋ ਜਿਹਾ ਡਾਕਟਰ ਹੈ, ਕਿਹੋ ਜਿਹਾ ਹਸਪਤਾਲ ਹੈ ਕਿਹੋ ਜਿਹੀ ਸੰਸਥਾ ਹੈ ਜਿਹੜੇ ਸਾਡੇ ਵਰਗੇ ਗਰੀਬਾਂ ਦਾ ਸਹਾਰਾ ਬਣਦੇ ਨੇ।

ਦਾਦੇ ਨੇ ਬੜੇ ਵਿਸਥਾਰ ਨਾਲ ਦੱਸਿਆ ਆਪ੍ਰੇਸ਼ਨ ਤੇ ਬਿਲਕੁਲ ਮੁਫਤ ਹੁੰਦਾ ਹੀ ਹੈ ਉਥੇ ਖਾਣਾ ਵੀ ਫਰੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਜਦੋਂ ਦਾਖਲ ਸੀ ਇਕ ਸੇਠਾਂ ਦਾ ਪਰਿਵਾਰ ਮੈਨੂੰ ਮਿਲਣ ਆਇਆ। ਦਾਖਿਲ ਹੋਏ ਸਾਰੇ ਮਰੀਜਾਂ

ਨੂੰ ਫਲ ਅਤੇ ਬਿਸਕੁਟ ਵੀ ਖਾਣ ਨੂੰ ਦਿੱਤੇ ਅਤੇ ਬੜਾ ਪਿਆਰ ਕਰਕੇ ਗਏ। ਉਨਾਂ ਸਾਨੂੰ ਦੱਸਿਆ ਤਾਂ ਕੁਝ ਨਹੀ ਪਰ ਕਿਹਾ ਉਹ ਪੁਤਲੀਆਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੇ ਮਰੀਜਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਅਤੇ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ ਲੈਣ ਆਏ ਹਨ। ਮੈਂ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਪੁੱਛਿਆ ਕਿ ਇਹ ਭਲੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲੇ ਕੌਣ ਹਨ। ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਪਹਿਚਾਨ ਦੱਸਣ ਤੋਂ ਮਨਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਉਨਾਂ ਸਿਰਫ ਐਨਾ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਕਈ ਵਾਰ ਅੱਖ ਦਾਨੀ ਪਰਿਵਾਰ, ਇਥੇ ਦਾਖਲ ਮਰੀਜ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਆ ਜਾਂਦੇ ਨੇ। ਥੋੜੇ ਦਿਨ ਪਹਿਲਾਂ ਇਕ ਨਾਮੀ ਪਰਿਵਾਰ ਜਿਨਾਂ ਦੇ ਪਿਤਾ ਨੇ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਸਮਾਜ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹੋਏ ਆਪਣੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕੀਤੀਆਂ ਅਤੇ ਉਨਾਂ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਨਾਲ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਦੋਬਾਰਾ ਰੌਸਨੀ ਮਿਲੀ। ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਪੁੱਛਿਆ ਮੈਨੂੰ ਕਿਸ ਦੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਵਿਚ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਈਆਂ ਹਨ ਤਾਂ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਹੱਸ ਕੇ ਮਨਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਇਹ ਦੱਸਣ ਦੀ ਮਨਾਹੀ ਹੈ। ਪ੍ਰੀਤੋ ਦੇ ਸਵਾਲਾਂ ਦਾ ਜਵਾਬ ਦਾਦਾ ਕਰਨੈਲ ਦਿੰਦਾ ਰਿਹਾ, ਪ੍ਰੀਤੋ ਵੀ ਇੱਕ ਸਿਆਣੀ ਵਿਦਿਆਰਥਣ ਵਾਂਗੂ ਦਾਦੇ ਦੇ ਜਵਾਬਾਂ ਨੂੰ ਸੁਣਦੀ ਰਿਹੀ।

ਉੱਚੀ ਆਵਾਜ ਮਾਰ ਕੇ ਬੇਬੇ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਾਦਾ ਪੋਤੀ ਗੱਪਾਂ ਮਾਰੀ ਜਾਂਦੇ ਹੋ ਬਹੁਤ ਰਾਤ ਹੋ ਗਈ। ਸੌਂ ਜਾਓ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣਾ ਹੈ।

ਪ੍ਰੀਤੋ ਬਾਪੂ ਨੂੰ ਫਤਿਹ ਬੁਲਾ ਉਠੀ ਤੇ ਜਾ ਕੇ ਮੰਜੇ ਤੇ ਪੈ ਗਈ ਪਰ ਅਜੇ ਵੀ ਪ੍ਰੀਤੋ ਦੇ ਕਈ ਸਵਾਲਾਂ ਦੇ ਜਵਾਬ ਬਾਕੀ ਸਨ।

ਪਰ ਉਸ ਨੂੰ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਸੀ ਕਿ ਦਾਦੇ ਦੇ ਇਲਾਜ ਵਿਚ ਖਰਚ ਹੋਣ ਵਾਲੀ ਜਮਾ ਪੂੰਜੀ ਕਿਤਾਬਾਂ ਲਈ ਖਰਚ ਹੋਣੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਪਿਆਰੀ ਦੀਦੋ ਨੂੰ ਹੁਣ ਵੇਚਿਆ ਨਹੀਂ ਜਉਗਾ। ਜੇਕਰ ਪ੍ਰੀਤੋ ਨੂੰ ਵਜੀਫਾ ਮਿਲ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਉਹ ਅਫਸਰ ਨਾ ਬਣ ਕੇ ਡਾਕਟਰ ਬਣਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਕੀ ਉਹ ਬਣ ਜਾਉਗੀ ਕਿ ਨਹੀਂ। ਇਹ ਇਕ ਨਵਾਂ ਸਵਾਲ ਪ੍ਰੀਤੋ ਦੇ ਜੇਹਨ ਵਿਚ ਉਤਰ ਆਇਆ ਸੀ।

ਪ੍ਰੀਤੋ ਨੂੰ ਇਹ ਅਹਿਸਾਸ ਹੋਇਆ ਜਿੱਥੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਭਲੇ ਇਨਸਾਨ ਜਿਉਂਦੇ ਜੀ ਤਾਂ ਮਨੁੱਖੀ ਸੇਵਾ ਕਰਦੇ ਹੀ ਨੇ, ਮੌਤ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮੇਰੇ ਦਾਦੇ ਵਰਗੇ ਦੀ ਜਿੰਦਗੀ ਦਾ ਡੰਗੋਰਾ ਬਣਦੇ ਹਨ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਨੂੰ ਹਰ ਪੱਖੋ ਟੁਟਣ ਤੋਂ ਬਚਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਪ੍ਰੀਤੋ ਵਰਗੀਆਂ ਹੋਣਹਾਰ ਬੱਚੀਆਂ ਨੂੰ ਸੁਪਨੇ ਸਾਕਾਰ ਕਰਨ ਦਾ ਮੌਕਾ ਦੇਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਥੇ ਮਨੁੱਖਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਦੇ ਹਨ ਉਥੇ ਦੀਦੋ ਵਰਗੀ ਬਕਰੀ ਜਿਸਨੂੰ ਸ਼ਾਇਦ ਪੈਸੇ ਲਈ ਵੇਚ ਦਿੱਤਾ ਜਾਣਾ ਸੀ ਉਸ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨੀ ਆਪਣੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਦੇ ਜਿੰਦਗੀ ਬਖਸ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਪ੍ਰੀਤੋ ਅਜਿਹੀਆਂ ਸੋਚਾਂ ਅਤੇ ਵਿਲੱਖ਼ਣ ਸਵਾਲਾਂ ਜਵਾਬਾਂ ਦੇ ਸਮੁੰਦਰ ਵਿਚ ਇਹ ਡਿੱਕ ਡੋਲੇ ਖਾਂਦੀ ਕਿਸ਼ਤੀ ਨੂੰ, ਜਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਹੁਣ ਕੁਝ ਕਰ, ਇਕ ਸਫਲ ਇਨਸਾਨ ਬਣ, ਮਨੁੱਖੀ ਸੇਵਾ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਹੋਣ ਦੇ ਸੁਪਨੇ ਲੈਂਦੀ। ਬੇਬੇ ਦੀ ਗੱਲ ਮਾਲਿਕ ਭਲੀ ਕਰੂ ਤੂੰ ਫਿਕਰ ਨਾ ਕਰ ਮਿਹਨਤ ਕਰਿਆ ਕਰ ਸਾਡੇ ਗਰੀਬਾਂ ਕੋਲ ਤਾਂ ਸਿਰਫ ਇਹੀ ਕੁਝ ਹੈ। ਵਾਰੇ ਸੋਚਦੀ ਹੋਈ ਪ੍ਰੀਤੋ ਦੀ ਅੱਖ ਲਗ ਗਈ।

ਹੁਣ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਉਡੀਕ ਹੈ ਕਿਥੇ ਉਸ ਦੀ ਬੱਚੀ ਪ੍ਰੀਤੋ ਨੂੰ ਵਜੀਫਾ ਮਿਲ ਵੱਡੀ ਹੋ ਕੇ ਸਮਾਜ ਸੇਵਾ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੈ ਅਤੇ ਹੋਰ ਪ੍ਰੀਤੋ ਅਤੇ ਦੀਦੋ ਦਾ ਭਲਾ ਹੋਉ।

ਡਾ. ਰਮੇਸ਼

ਐਮ.ਡੀ. (ਸਟੇਟ ਅਵਾਰਡੀ)

Eyes are a precious gift to mankind. A wise man utilizes the gift while alive, and after death too..

विश्व हृदय दिवस पर विशेष

दिल का मामला है

डॉ. कुलदीप सिंह

29 सितम्बर को हर वर्ष विश्व हृदय दिवस मनाया जाता है। हृदय दिवस मनाने की शुरूआत सन् 2000 में की गई थी। संसार भर के लोगों में हृदय रोगों के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से डब्ल्यू.एच.ओ. यानि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व हृदय दिवस मनाने का निर्णय लिया था। विश्व हृदय फेडरेशन के मुताबिक दुनिया में साल भर में सबसे ज्यादा मौतें दिल की बीमारियों की वजह से होती हैं। लगभग एक करोड़ तिहत्तर लाख लोग प्रत्येक वर्ष हृदय–रोगों के कारण मौत का शिकार हो रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2030 तक दिल से संबंधित बीमारियों की वजह से मरने वालों की संख्या 2 करोड़ तीस लाख प्रतिवर्ष हो जाएगी।

विश्व हृदय दिवस की अहमियत भारत के लिए किसी भी मायने में कम नहीं है क्योंकि भारत में प्रति मिनट हृदय गति रुकने यानि हार्ट अटैक या दिल की अन्य बीमारियों से चार व्यक्ति मौत के मुँह में समा जाते हैं। भारत में हर वर्ष दिल की बीमारियों से चौबीस लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है। हमारे देश में तीन करोड़ लोग दिल की गंभीर बीमारियों से पीड़ित हैं। इनमें से एक करोड़ चालीस लाख दिल के मरीज़ शहरों में रहते हैं और एक करोड़ साठ लाख लोग गाँवों में रहने वाले हैं। भारत में दिल के मरीजों की संख्या प्रतिवर्ष 25 से तीस फीसदी की दर से बढ़ रही है। हमारे देश के अस्पतालों में हर वर्ष दो लाख ओपन हार्ट सर्जरीज़ की जाती हैं।

विश्व हृदय दिवस पर हृदय से जुड़े कुछ तथ्यों को जानना भी बेहद ज़रूरी और रोचक है। एक दिन में हमारा दिल लगभग एक लाख बार धड़कता है। हमारा दिल शरीर की पचहत्तर लाख करोड़ कोशिकाओं तक खून पहुँचाता है। दिल एक दिन में जितनी ऊर्जा पैदा करता है उससे एक ट्रक 32 किलोमीटर की दूरी तय कर सकता है। औसत जीवन काल में दिल 119 करोड़ लीटर खून पम्प करता है। हमारा दायाँ फेफड़ा बाँए फेफड़े की तुलना में थोड़ा छोटा होता है ताकि दिल को जगह मिल सके।

अगर आप इस गलतफ़हमी में हैं कि दिल की बीमारी तो बड़ी उम्र में जाकर होती है तो इस खुशफहमी से बाहर आ जाईए क्योंकि वास्तविकता यह है कि भारत की 33 प्रतिशत युवा जनसंख्या को हार्ट अटैक या दिल की अन्य बीमारी होने का खतरा मँडरा रहा है। भारत में हार्ट अटैक से मरने वाले ज्यादात्तर लोगों की उम्र तीस से पच्चास वर्ष के बीच होती है। हृदय गति रूकने से होने वाली मौत के 25 प्रतिशत मामलों में मरने वाले मरीज़ की उम्र चालीस वर्ष या उससे कम होती है। हर रोज 30 वर्ष से कम उम्र के 900 लोग दिल की किसी न किसी बीमारी की वजह से दम तोड़ देते हैं।

इस सब के मायने ये हैं कि भारत दुनिया का सबसे ज्यादा युवा आबादी वाला देश होने के साथ–साथ दिल की बीमारियों से पीड़ित युवाओं का देश भी बन चुका है। यह देश के कमजोर हृदय वाले नागरिकों के लिए एक भयावह तस्वीर है परंतु इसको देखना आवश्यक हो गया है। जिस उम्र में युवा पीढ़ी भावी जीवन के लिए सपने संजोती है उस उम्र में वह दिल के रोग पाल कर बैठी है। जरा सोचिए किसी उन्नीस वर्ष की लड़की की दिल की नसें पम्प करने लायक न बची हों तो डॉक्टर भी इस स्थिति में लाचार हो जाते हैं यदि कोई हार्ट डोनोर अर्थात दिल का दान न मिले तो। इस स्थिति में दिल के ईलाज के लिए लगभग सभी विकल्प खत्म हो जाते हैं और मौत अवश्यंभावी। सौभाग्यवश हार्ट ट्राँसपलांट

द्वारा ही ऐसे दिल के रोगियों को बचाया जा सकता है और यह तभी संभव है जब समय रहते कोई दान किया हुआ दिल उपलब्ध हो।

जिस उम्र में युवा किसी को दिल दे बैठते हैं उस अल्हड़–सी आयु में ही देश के युवाओं का दिल बैठने लगा है। जो उम्र युवाओं के लिए भाग–दौड़, उछल–कूद की होती है उस उम्र में ही उनका दिल बुरी तरह हाँफने लगा है। आखिर ऐसे क्या कारण हैं कि इतनी छोटी उम्र में युवक–युवतियाँ दिल से जानलेवा रोग को लगा बैठें हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार जंक फूड तथा स्कूल–कॉलेजों की केंटीनों में बिकने वाला फास्ट फूड इसकी सबसे बड़ी वजह है।

भारत में 25 प्रतिशत हार्ट अटैक 40 वर्ष से कम उम्र के लोगों को हो रहे हैं। कार्डियोलॉजी सोसायटी ऑफ इंडिया के अनुसार नतीजे बताते हैं कि 33 प्रतिशत युवाओं को दिल की बीमारियाँ होने का खतरा है। अठारह से तैंतीस वर्ष के लोगों का खून का दौरा यानि ब्लड प्रेशर नियंत्रण से बाहर है अर्थात हाई है। हाई ब्लड प्रेशर दिल के दौरे या हृदयाघात का सबसे बड़ा कारण है। सर्वे में शामिल लोगों में से 62 प्रतिशत दिल के मरीजों को यह पता ही नहीं था कि वह हाई ब्लड प्रेशर से ग्रसित हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि भारत का युवा दिन–प्रति–दिन बीमार होता जा रहा है।

हाईपरटेंशन, खान–पान की गलत आदतें, शारीरिक परिश्रम का अभाव ब्लड प्रेशर को बढाते हैं जो हृदय रोगों का कारण बनता है। वास्तव में मूल कारण हाई ब्लड प्रेशर है जो एक किलर की भूमिका में आ गया है। भाग–दौड़ भरी जिंदगी के आदी हो चुके युवाओं के दिल कमज़ोर साबित हो रहे हैं। ऐसे में कभी–कभी हमें अपना दिमाग भी लगाना चाहिए कि एक स्वस्थ दिल के लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा साबित हो सकता है।

यह बात बहुत ही गंभीर है और एक अत्यंत चिंता का विषय है कि भारत में छोटी–सी उम्र में ही लोग हृदय रोग के शिकार हो रहें हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह आधुनिक जीवन–शैली और खाने–पीने की खराब आदतें हैं। एक बिन मांगी सलाह है कि आप दिल की दशा सुधारने के लिए आज से ही प्रयास शुरू कर दें।

वर्ल्ड हार्ट फेडरेशन के अनुसार अगर आप रोज तीस मिनट वर्क आऊट करते हैं या पैदल चलते हैं तो हृदय रोग का खतरा तीस प्रतिशत तक कम हो जाता है। हॉबर्ड विश्वविद्यालय के एक सर्वे के मुताबिक ऐसा करने से दिल की बीमारियों की संभावना चौबीस प्रतिशत कम हो जाती है। दिन में एक घंटा पैदल चलने वालों पर यह खतरा 50 प्रतिशत कम हो जाएगा। अगर धूम्रपान या शराब पीने वाले लोग अपनी इस आदत को छोड़ दें तो वह पन्द्रह दिन के अंदर दिल की बीमारियों से उतने ही सुरक्षित हो जाएंगे जितना धूम्रपान या मद्यपान न करने वाला कोई व्यक्ति होता है।

एक अध्ययन के मुताबिक सात घंटे की गहरी नींद दिल की बीमारियों को दूर रखती है अतः कम से कम सात घंटे की नींद अवश्य लें। थोड़े–थोड़े अंतराल पर पानी पीते रहने से भी दिल स्वस्थ रहता है क्योंकि इससे डिहाईड्रेसन नहीं होता और शरीर में खून सामान्य गति से बहता रहता है। दिल की बीमारियों से दूर रहने के लिए तनाव मुक्त रहना भी अति आवश्यक है क्योंकि तनाव से शरीर में पानी की कमी हो जाती है और शरीर में विषैले तत्त्व बनने लगते हैं जो हृदय को नुकसान पहुँचाते हैं।

इन आदतों को रोजमर्रा में शामिल करके दिल को स्वस्थ रख सकते हैं। आप अपने दिल की आवाज सुनें और सेहतमंद रहने के लिए अपनी जीवन शैली में सुधार अवश्य करें। ये सब करना इतना मुश्किल भी नहीं है क्योंकि दिल के लिए इतना तो किया ही जा सकता है। आखिरकार यह दिल का मामला है।

नेत्र दान से बड़ा कोई दान नहीं, जिसमें जीव निर्जीव होकर भी दूसरे के काम आ सकता है।

ਦਾਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗਾ, ਚੰਗਾ ਹੈ ਜੇ ਨੇਤਰਦਾਨ

ਨੇਤਰਦਾਨ ਦਾ ਮਤਲਬ ਸੱਜਣੋਂ, ਦਾਨ ਕਰਨੀਆਂ ਦੋਨੋਂ ਅੱਖਾਂ।
ਇਹ ਗਲ ਸੱਚ ਸੱਚ ਮੈਂ ਆਖਾਂ, ਪੱਖ ਕਿਸੇ ਦਾ ਨਾ ਮੈਂ ਰੱਖਾਂ।
ਅੱਖੋਂ ਵੱਡਾ ਦਾਨ ਨਹੀ ਜੇ, ਦਾਨ ਕਰੋ ਚਾਹੇ ਤੁਸੀਂ ਲੱਖਾਂ।
ਜਿਉਂਦੇ ਜੀਅ ਕੋਈ ਅੱਖ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦਾ, ਕਰੋੜਾਂ ਰੁਪਏ ਚਾਹੇ ਮੈਂ ਅੱਗੇ ਰੱਖਾਂ।
ਮਰਨ ਪਿੱਛੋਂ ਵੀ ਉਹੋ ਦਿੰਦਾ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਦੇਵੇ ਰੱਬ ਗਿਆਨ।
ਦਾਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗਾ......।

ਜਿਸ ਜੀਵ ਕੋਲ ਹੈ ਨਹੀਂ ਅੱਖਾਂ, ਉਹਦੇ ਬਾਰੇ ਤੁਸੀਂ ਵਿਚਾਰੋ।
ਉਹਦੇ ਵਰਗੀ ਸੂਰਤ ਕਰਕੇ, ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਝਾਤੀ ਮਾਰੋ।
ਆਪਣੇ ਉਹਦੇ ਜੀਵਨ ਦੀ ਫਿਰ, ਮੰਨ ਅੰਦਰ ਤਸਵੀਰ ਉਤਾਰੋ।
ਅੱਖਾਂ ਖੋਲ ਫਿਰ ਦੁਨੀਓਂ ਵੇਖੋ, ਫਿਰ ਦੋਹਾਂ ਨੂੰ ਤੁਸੀਂ ਨਿਹਾਰੋ।
ਅੰਤਰ ਆਤਮਾ ਜਾਗ ਜਾਵੇ ਤਾ, ਫਿਰ ਕਰਨਾ ਇਹ ਗੱਲ ਪ੍ਰਵਾਨ।
ਦਾਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗਾ......।

ਅੱਖਾਂ ਜਿਸ ਨੂੰ ਤੁਸੀਂ ਦਿਉਂਗੇ, ਉਸ ਨੂੰ ਤਾਂ ਸੰਸਾਰ ਮਿਲੇਗਾ।
ਅੱਖਾਂ ਅੱਗੇ ਬੈਠਾ ਉਸ ਨੂੰ, ਜਦ ਆਪਣਾ ਪ੍ਰਵਾਰ ਮਿਲੇਗਾ।
ਬੰਦ ਅੱਖ ਨਾਲ ਜੋ ਸੀ ਤੱਕਿਆ, ਖੁੱਲੀ ਅੱਖੀ ਦਰਬਾਰ ਮਿਲੇਗਾ।
ਜੱਗ ਵਿਚ ਵੰਡੇਗਾ ਉਹ ਰੋਟੀ, ਕਈਆਂ ਨੂੰ ਅਹਾਰ ਮਿਲੇਗਾ।
ਬੰਦ ਮਸ਼ੀਨ ਵਾਂਗੂੰ ਫਿਰ ਤੁਰੇਗਾ, ਖੁਸ਼ੀ ਖੁਸ਼ੀ ਇਕ ਇਨਸਾਨ।
ਦਾਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗਾ......।

ਸ਼ੁਕਰ ਕਰੋ ਵਿਗਿਆਨ ਦਾ ਯਾਰੋ, ਟੱਪ ਗਈ ਜੋ ਹਰ ਹੱਦ ਬੰਨਾ।
ਵਿਗਿਆਨ ਦਾ ਯੁੱਗ ਜੇ ਪਹਿਲਾਂ ਹੁੰਦਾ, ਧਰਿਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਨਾ ਰਹਿੰਦਾ ਅੰਨਾ।
ਗੰਧਾਰੀ ਆਪਣੀ ਅੱਖ ਦੇ ਦਿੰਦੀ, ਕਿਉਂ ਕਹਿੰਦੀ ਉਹ ਪੱਟੀ ਬੰਨਾਂ।
ਉਹ ਗੱਲ ਅੱਜ ਪ੍ਰਤੱਖ ਹੈ ਵੇਖੀ, ਜੋ ਸੁਣੀ ਕਦੀ ਸੀ ਕੰਨਾਂ।
ਡਾਕਟਰ ਫਿਰ ਵੀ ਡਾਕਟਰ ਰਹੇਗਾ, ਤੁਸੀ ਬਣ ਜਾਉਗੇ ਭਗਵਾਨ।
ਦਾਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗਾ......।

ਕੋਈ ਜ਼ੋਰ ਨਹੀਂ ਸਾਡਾ ਯਾਰੋ, ਜ਼ਰਾ ਸੋਚੋ ਨਾ ਲਾਓ ਦੇਰੀ ।
ਅਤੇ ਸਮੇਂ ਜਦ ਚਿੱਖਾ ਤੇ ਪੈਣਾ, ਸਭ ਕੁਝ ਹੋਣਾ ਖਾਕ ਦੀ ਢੇਰੀ।
ਅੱਖਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਲੱਗਣਾ, ਕਿਥੇ ਅੱਖ ਗਈ ਹੈ ਤਰੀ।
ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਹੀ ਸਾਂਭ ਲਓ ਇਹਨੂੰ, ਨਾ ਪਵੋ ਵਿਚ ਘੁੰਮਣ ਘੇਰੀ,
ਤੁਹਾਡੀ ਓਂਖ ਨਾਲ ਫਿਰ ਵੇਖੇਗਾ, ਵੇਖੇਗਾ ਕੋਈ ਸੁੰਦਰ ਜਹਾਨ।
ਦਾਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗਾ......।

ਇਸ ਵੇਲੇ ਵਿਚ ਗਿਣੇ ਗਏ ਨੇ, ਐਸ਼ਵਰ ਰਾਇ ਦੇ ਸੁੰਦਰ ਨੈਣ।
ਕਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਤੱਕ ਲੈਣ ਤਾਂ, ਵਾਹ-ਵਾਹ ਵਾਹ-ਵਾਹ ਵਾਹ-ਵਾਹ ਕਹਿਣ।
ਕਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਤੱਕ ਲੈਣ ਤਾਂ, ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਨੇ ਬੜੇ ਬੇਚੈਨ।
ਉਸ ਨੇ ਵੀ ਦਾਨ ਕੀਤੇ ਨੇਤਰ, ਬਾਕੀ ਫਿਰ ਕਿਉਂ ਪਿੱਛੇ ਰਹਿਣ।
"ਦੋਸ਼ੀ" ਬੇਦੋਸ਼ੀ ਸਾਰੇ ਆਵੋ, ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ ਜੇ ਕੋਈ ਪਹਿਚਾਣ।
ਦਾਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗਾ, ਚੰਗਾ ਹੈ ਜੇ ਨੇਤਰਦਾਨ।

ਸਵ: ਚਰਨਜੀਤ ਸਿੰਘ ਦੋਸ਼ੀ

ਪੁਨਰਜੋਤ ਖਬਰਨਾਮਾ

ਸ਼ਹੀਦੋਂ ਕੀ ਚਿਤਾਉਂ ਪੇ ਲਗੇਂਗੇ ਹਰ ਬਰਸ ਮੇਲੇ,
ਵਤਨ ਪੇ ਮਿਟਨੇ ਵਾਲੋਂ ਕਾ ਯਹੀ ਬਾਕੀ ਨਿਸ਼ਾਂ ਹੋਗਾ।

ਡਾ. ਰਮੇਸ਼, ਮੈਨੇਜਿੰਗ ਡਾਇਰੈਕਟਰ, ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਸ਼ਹੀਦੇ-ਏ-ਆਜ਼ਮ ਸ. ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੇ 108ਵੇਂ ਜਨਮ ਦਿਵਸ ਸਮਾਗਮ ਮੌਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਭਾਣਜੇ ਸ. ਜਗਮੋਹਨ ਸਿੰਘ ਨੂੰ ਸਨਮਾਨਿਤ ਕਰਦੇ ਹੋਏ

ਸ਼ਹੀਦ ਕੌਮਾਂ ਦਾ ਸਰਮਾਇਆ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਜਿਹੜੀਆਂ ਕੌਮਾਂ ਆਪਣੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਨੂੰ ਯਾਦ ਰਖਦੀਆਂ ਹਨ ਉਹ ਸਦਾ ਚੜਦੀ ਕਲਾ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਸ਼ਹੀਦ-ਏ-ਆਜ਼ਮ ਸ. ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦਾ 108ਵਾਂ ਜਨਮ ਦਿਹਾੜਾ ਮਨਾਉਣ ਲਈ ਡਾ: ਰਮੇਸ਼ ਮਨਸੂਰਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਉਤਸ਼ਾਹ ਸੀ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਨੂੰ ਸਫਲਤਾ ਪੂਰਵਕ ਨੇਪਰੇ ਚਾੜਣ ਲਈ ਸਟਾਫ ਦੀਆਂ ਡਿਊਟੀਆਂ ਲਗਾ ਦਿੱਤੀਆਂ ਅਤੇ 25 ਸਤੰਬਰ ਨੂੰ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਵਲੋਂ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਮਹਾਨ ਸ਼ਹੀਦ ਨੂੰ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀਆਂ ਭੇਟ ਕਰਨ ਲਈ ਉਸ ਦਾ 108ਵਾਂ ਜਨਮ ਦਿਵਸ ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਸੁਪਰਸਪੈਸ਼ਲਿਟੀ ਆਈ ਕੇਅਰ ਅਤੇ ਲੇਸਿਕ ਸੈਂਟਰ ਭਾਈ ਰਣਧੀਰ ਸਿੰਘ ਨਗਰ ਲੁਧਿਆਣਾ ਵਿਖੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਸ਼ਰਧਾ ਅਤੇ ਉਤਸ਼ਾਹ ਨਾਲ ਮਨਾਇਆ ਗਿਆ। ਵਿਲੱਖਣ ਗੱਲ ਇਹ ਸੀ ਕਿ ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਦੇ ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਲਈ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਪ੍ਰਵਾਰਕ ਮੈਂਬਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਭਾਣਜੇ ਪ੍ਰੋ: ਜਗਮੋਹਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੂੰ ਚੁਣਿਆਂ।

ਆਪਣੇ ਸੰਬੋਧਨ ਵਿਚ ਪ੍ਰੋ. ਜਗਮੋਹਨ ਸਿੰਘ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਜਨਮ ਦਿਵਸ ਅਤੇ ਸ਼ਹੀਦੀ ਦਿਹਾੜੇ ਸਾਨੂੰ ਸਭ ਧਰਮਾਂ ਨੂੰ ਰਲ ਕੇ ਮਨਾਉਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਕਿਉਂਕਿ ਸ਼ਹੀਦ ਸਭ ਦੇ ਸਾਂਝੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਬੜੇ ਅਫਸੋਸ ਨਾਲ ਕਹਿਣਾ ਪੈ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਅਜੋਕੀ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜੀ ਨਸ਼ਿਆਂ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਬੁਰਾਈਆਂ ਵਿਚ ਬੁਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਫਸੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੀ ਸੋਚ ਤੇ ਪਹਿਰਾ ਦੇਣ ਦੀ ਅਪੀਲ ਕੀਤੀ।

ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਮੈਨੇਜਿੰਗ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਡਾ: ਰਮੇਸ਼ ਐਮ.ਡੀ. ਸਟੇਟ ਅਵਾਰਡੀ ਨੇ ਸਮਾਗਮ ਨੂੰ ਸੰਬੋਧਨ ਕਰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸ: ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੀ ਕੁਰਬਾਨੀ ਬੇਮਿਸਾਲ ਹੈ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸੱਚੀ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਇਹੀ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਾਏ ਹੋਏ ਪੂਰਨਿਆਂ ਤੇ ਚਲ ਕੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਤਰੱਕੀ ਅਤੇ ਨਰੋਏ ਸਮਾਜ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾ ਕਰੀਏ।

ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਤਰਕਸ਼ੀਲ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਲੁਧਿਆਣਾ ਜੋਨ ਦੇ ਮੁੱਖੀ ਸ: ਜਸਵੰਤ ਸਿੰਘ ਜ਼ੀਰਖ, ਮੀਡੀਆ ਇੰਚਾਰਜ ਸ: ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਪਮਾਲ, ਸ੍ਰੀ ਸਤੀਸ਼ ਸੱਚਦੇਵਾ ਰੀਟਾਇਰਡ ਸਿਹਤ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਸਟੇਟ ਮੀਡੀਆ ਅਫਸਰ, ਸ੍ਰੀ ਅਸ਼ੋਕ ਕੁਮਾਰ, ਸ੍ਰੀ ਜਸਵਿੰਦਰ ਵਸ਼ਿਸ਼ਟ, ਸ੍ਰੀ ਰਛਪਾਲ ਸਿੰਘ, ਮੈਨੇਜਰ ਰਮੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਅਤੇ ਸ: ਗੁਰਨਾਮ ਸਿੰਘ ਆਦ ਨੇ ਵੀ ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਨੂੰ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀਆਂ ਭੇਟ ਕੀਤੀਆਂ।

ਸੇਵਕ ਕੋ ਸੇਵਾ ਬਨ ਆਈ

ਜਵੱਦੀ ਟਕਸਾਲ ਦੇ ਮੁੱਖੀ ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਅਮੀਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਅੱਖਾਂ ਦੇ ਮੁੱਫਤ ਚੈੱਕ ਅੱਪ ਕੈਂਪ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਕਰਨ ਉਪਰੰਤ ਕੈਂਪ ਦੇ ਮੁੱਖ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਬਾਬਾ ਸਰਬਜੋਤ ਸਿੰਘ ਡਾਂਗੋ ਨਾਲ ਖੜੇ ਵਿਖਾਈ ਦੇ ਰਹੇ ਹਨ।

ਬਾਬਾ ਸਰਬਜੋਤ ਸਿੰਘ ਡਾਂਗੋ ਵਾਲੇ ਪੂਰਨ ਤੌਰ ਤੇ ਸੇਵਾ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਹਨ ਅਤੇ ਉਹ ਗਰੀਬਾਂ ਅਤੇ ਨਿਆਸਰਿਆਂ ਦੀ ਤਨ, ਮਨ, ਅਤੇ ਧਨ ਨਾਲ ਸੇਵਾ ਕਰਨ ਲਈ ਸਦਾ ਤੱਤਪਰ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਮੰਤਵ ਨੂੰ ਮੁੱਖ ਰੱਖਕੇ ਉਹ ਹਰ ਸਾਲ ਡਾ: ਰਮੇਸ਼ ਮਨਸੂਰਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਮੁਫਤ ਕੈਂਪ ਲਗਵਾਉਂਦੇ ਹਨ।

ਇਸ ਵਾਰ 21 ਸਤੰਬਰ ਨੂੰ ਬਾਬਾ ਸਰਬਜੋਤ ਸਿੰਘ ਡਾਂਗੋ ਦੀ ਰਹਿਨੁਮਾਈ ਹੇਠ ਗੁਰਮਿਤ ਪ੍ਰਚਾਰ ਮਿਸ਼ਨ ਡਾਂਗੋ ਅਤੇ ਸਮੂੰਹ ਨਗਰ ਨਿਵਾਸੀਆਂ ਵਲੋਂ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਮੀਹਾਂ ਸਿੰਘ ਸਿਆੜ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਜਲ ਪ੍ਰਵਾਹ ਦਿਵਸ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਮੁਫਤ ਕੈਂਪ ਲਗਾਇਆ ਗਿਆ। ਕੈਂਪ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਜਵੱਦੀ ਟਕਸਾਲ ਦੇ ਮੁੱਖੀ ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਅਮੀਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਕੀਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਨਿਆਸਰਿਆਂ ਅਤੇ ਲੋੜਵੰਦਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਸੇਵਾ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸੇਵਕ ਕੋ ਸੇਵਾ ਬਨ ਆਈ ਅਤੇ ਬਿਨਾਂ ਭਾਗਾਂ ਤੋਂ ਸੇਵਾ ਵੀ ਨਸੀਬ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ ਅਤੇ ਬਾਬਾ ਸਰਬਜੋਤ ਸਿੰਘ ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਸੇਵਾ ਕਰਕੇ ਪਰਉਪਕਾਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।

ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਮੀਡੀਆ ਇੰਚਾਰਜ ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਪਮਾਲ ਨੇ ਮਰਨ ਉਪਰੰਤ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਬਾਰੇ ਚਾਨਣਾ ਪਾਇਆ।

ਕੈਂਪ ਦੌਰਾਨ ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਮਨਸੂਰਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਟੀਮ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ, ਅਮਿੱਤ ਕੁਮਾਰ, ਮਨਜੀਤ ਕੌਰ, ਲਲਿਤ ਕੁਮਾਰ ਅਤੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਿੰਘ ਬਾਜਵਾ ਨੇ 250 ਮਰੀਜ਼ਾਂ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਮੁਫਤ ਚੈੱਕ ਅੱਪ ਕੀਤਾ। ਬਾਬਾ ਸਰਬਜੋਤ ਸਿੰਘ ਵਲੋਂ 90 ਲੋੜਵੰਦ ਮਰੀਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਐਨਕਾਂ ਮੁਫਤ ਦਿੱਤੀਆਂ ਗਈਆਂ।

ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਯੂਥ ਅਕਾਲੀ ਆਗੂ ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਪੱਖੋਵਾਲ, ਇਕਬਾਲ ਸਿੰਘ ਡਾਂਗੋਂ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਮਿਲਕ ਪਲਾਂਟ, ਕੈਪਟਨ ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ, ਕੈਪਟਨ ਉਜਾਗਰ ਸਿੰਘ, ਰਘਵੀਰ ਸਿੰਘ (ਤਿੰਨੋਂ ਮੈਂਬਰ ਪੰਚਾਇਤ), ਤੇਜਵੰਤ ਸਿੰਘ ਧਾਂਦਰਾ, ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ ਬੁਜਕਰ ਰਾਮ ਸਿੰਘ ਢੈਪੱਈ, ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ ਝੋਰੜਾਂ, ਅਤੇ ਪ੍ਰਮੇਸ਼ਰਪਾਲ ਸਿੰਘ ਚੇਅਰਮੈਨ ਇੰਟਕ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਸੰਗਰੂਰ ਆਦ ਹਾਜ਼ਰ ਸਨ।

ਸੋ ਕਿਉਂ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ ਜਿਤ ਜੰਮੈ ਰਾਜਾਨ

ਲੜਕੀ ਦੇ ਜਨਮ ਦਿਨ ਤੇ ਹਰ ਸਾਲ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਕੈਂਪ ਲਗਵਾਉਣ ਦਾ ਪ੍ਰਣ

ਸ਼ਬੀਦ-ਏ-ਆਜ਼ਮ ਸ. ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਭਾਣਜੇ ਸ. ਜਗਮੋਹਨ ਸਿੰਘ ਬੱਚੀ ਗੁਰਮਿੰਦਰ ਕੌਰ ਨੂਰ ਨੂੰ ਉਸਦੇ ਦੂਸਰੇ ਜਨਮ ਦਿਨ ਤੇ ਤੋਹਫਾ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ

ਤਿੰਨ ਸਾਲ ਹੋਏ ਅਮਰ ਨਗਰ ਲੁਧਿਆਣਾ ਦੇ ਰਹਿਣ ਵਾਲੇ ਸ. ਬਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਇਕ ਬੇਸਹਾਰਾ ਬਜ਼ੁਰਗ ਮਾਤਾ ਨੂੰ ਜੋ ਅੱਖਾਂ ਦੀ ਬਿਮਾਰੀ ਤੋਂ ਪੀੜਤ ਸੀ ਨੂੰ ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਨੂੰ ਵਿਖਾਉਣ ਲਈ ਲੈ ਕੇ ਆਏ। ਬਜ਼ੁਰਗ ਮਾਤਾ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਮੇਰੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਾ ਕੋਈ ਵੀ ਮੈਨੂੰ ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ ਸੀ ਤਾਂ ਬਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਨੇ ਮੇਰੇ ਤੇ ਦਇਆ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਮੈਨੂੰ ਮੇਰੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਵਿਖਾਉਣ ਲਈ ਇਥੇ ਲੈ ਕੇ ਆਇਆ। ਡਾ: ਰਮੇਸ਼ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਮਾਤਾ ਜੀ ਤੁਹਾਡੇ ਤੇ ਬਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਨੇ ਦਇਆ ਕੀਤੀ ਹੈ ਅਤੇ ਮਾਲਕ ਇਸ ਤੇ ਦਇਆ ਕਰੇਗਾ।

ਡਾ: ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਤ ਹੋ ਕੇ ਮੈਂ (ਬਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ) ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮੁਹਿੰਮ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਵਿਚ ਜੁੜ ਗਿਆ। ਮੈਂ ਸੋਚਿਆ ਕਿ ਅਜਿਹੇ ਕਿਤਨੇ ਬਜ਼ੁਰਗ ਹੋਣਗੇ ਜੋ ਡਾਕਟਰਾਂ ਕੋਲ ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਵਿਚ ਜਾ ਕੇ ਆਪਣੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਇਲਾਜ ਨਹੀਂ ਕਰਵਾ ਸਕਦੇ। ਸੋ ਮੈਂ ਆਪਣੀ ਬੇਟੀ ਦੇ ਜਨਮ ਦਿਨ ਤੇ ਹਰ ਸਾਲ ਇਲਾਕੇ ਦੇ ਬਜ਼ੁਰਗਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਲਈ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਮੁਫਤ ਕੈਂਪ ਲਗਾਉਣ ਦਾ ਪ੍ਰਣ ਕਰ ਲਿਆ। 25 ਸਤੰਬਰ 2014 ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਬੇਟੀ ਗੁਰਮਿੰਦਰ ਕੌਰ ਨੂਰ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਜਨਮ ਦਿਨ ਤੇ ਡਾ: ਰਮੇਸ਼ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਮੁਫਤ ਅਪ੍ਰੇਸ਼ਨ ਕੈਂਪ ਲਗਾ ਕੇ ਜਨਮ ਦਿਨ ਮਨਾਇਆ ਅਤੇ ਹੁਣ 25 ਸਤੰਬਰ 2015 ਨੂੰ ਦੂਸਰਾ ਜਨਮ ਦਿਨ ਵੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਮੁਫਤ ਅਪ੍ਰੇਸ਼ਨ ਕੈਂਪ ਲਗਵਾ ਕੇ ਮਨਾਇਆ ਹੈ। ਜਿਸ ਵਿਚ ਡਾ: ਰਮੇਸ਼ ਦੀ ਟੀਮ ਵਲੋਂ 200 ਮਰੀਜ਼ਾਂ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਮੁਫਤ ਚੈੱਕ ਅੱਪ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਲੋੜ ਵੰਦਾਂ ਨੂੰ 100 ਦੇ ਲਗਭਗ ਮੁਫਤ ਐਨਕਾਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਅਤੇ 12 ਮਰੀਜ਼ ਚਿੱਟੇ ਮੋਤੀਏ ਦੇ ਲੈਂਜ਼ਾਂ ਵਾਲੇ ਮੁਫਤ ਅਪ੍ਰੇਸ਼ਨਾਂ ਲਈ ਚੁਣੇ ਗਏ।

ਜੋ ਲੋਕ ਲੜਕੀਆਂ ਨੂੰ ਕਲੰਕ ਅਤੇ ਬੋਝ ਸਮਝਦੇ ਹਨ ਇਹ ਬਿਲਕੁਲ ਗਲਤ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਲੜਕੀਆਂ ਹਰ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਲੜਕਿਆਂ ਨਾਲੋਂ ਅੱਗੇ ਹਨ। ਬੇਟੀ ਨੂਰ ਦੇ ਜਨਮ ਲੈਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਮੇਰੀ ਛੋਟੀ ਜਿਹੀ ਮੋਬਾਈਲ ਰਿਪੇਅਰ ਦੀ ਦੁਕਾਨ ਸੀ ਅਤੇ ਬੇਟੀ ਦੇ ਜਨਮ ਲੈਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਕੁਲ ਮਾਲਿਕ ਨੇ ਐਸੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕੀਤੀ ਹੈ ਕਿ ਹੁਣ ਆਪਣੀ ਬੇਟੀ ਦੇ ਨਾਂ ਤੇ ਨੂਰ ਫਰਨੀਚਰ ਸ਼ੋ ਰੂਮ ਹੈ।

ਕੁਲ ਮਾਲਿਕ ਨੂੰ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਅੱਧ ਖਿੜੀਆਂ ਕਲੀਆਂ ਨੂੰ ਕੁੱਖਾਂ ਵਿਚ ਮਾਰਨ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਸੁਮੱਤ ਬਖ਼ਸ਼ੇ ਕਿਉਂਕਿ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਵੀ ਕਿਹਾ ਹੈ, "ਸੋ ਕਿਉਂ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ ਜਿਤ ਜੰਮੇ ਰਾਜਾਨ।"

ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਪਮਾਲ

ਸਹਿ ਸੰਪਾਦਕ

30ਵੇਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦੌਰਾਨ ਨੇਤਰਦਾਨੀਆਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

25-8-2015	Bimla Devi W/o Tarsem Lal Near Railway Station, Jakhal, Distt Fatehabad (HR)	55 F
26-8-2015	Sham Lal S/o Sh. Pal Ram Garg Press Street, New Market, Rampuraphul, Distt. Bathinda	70 M
27-8-2015	Lajyawanti W/o Sh. Madan Lal St. No. 11, Opp. Khalsa School, Backside Anaj Mandi, Khanna (Ludhiana)	70 F
27-8-2015	Arun Gupta S/o Satpal Gupta Block-I, H.No. 782, B.R.S Nagar, Ludhiana	60 M
30-8-2015	Ram Lubhaya S/o Mehnga Ram Vill. Shokha Majra, Teh. Nawan Shaher, Distt. SBS Nagar	68 M
1-9-2015	Amarjeet Kaur W/o Vill. Khiala Kalan, Distt. Mansa	60 F
2-9-2015	Pushpa Rani W/o Sh. Tilak Raj B-33/5392, Saroop Nagar, Salem Tabri, Ludhiana	70 F
4-9-2015	Gurdev Singh S/o Arjun Singh Vill. Lasso, Teh Malerkotla, Distt. Sangrur	85 M
5-9-2015	Rajeev Sachdev S/o Sh. Ashok Sachdev 49/45 Harpal Nagar, Bharat Nagar, Ludhiana	36 M
5-9-2015	Sushma Jain W/o Sh. Jai Narain H.No. 466, Kanya Pathshala Road, Shastri Nagar, Jagraon (Ludhiana)	56 F
5-9-2015	Gurbax Singh S/o Gujjar Singh Vill. Datewas, Teh. Budladha, Distt. Mansa	85 M
7-9-2015	Tarlok Singh Jaggi S/o Sh. Kartar Singh NRI Colony, Doraha, Distt. Ludhiana	78 M
8-9-2015	Kaurjeet Kaur W/o Chetan Singh Karman Patti, Vill. Ghunas, Distt. Barnala	23 M
8-9-2015	Gurdev Kaur W/o Surjan Singh VIll. Bareta, Distt. Mansa	60 F
8-9-2015	Tilak Raj Girdhar S/o Mool Chand Girdhar 561-I, Urban Estate, Dugri Road, Ludhiana.	78 M

ਸਾਡੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਅਤੇ ਟੈਲੀਵਿਜ਼ਨ

ਡਾ. ਰਮੇਸ਼, ਐਮ.ਡੀ.

ਟੈਲੀਵਿਜ਼ਨ ਦੇਖਣ ਨਾਲ ਅੱਖਾਂ ‘ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਟੈਲੀਵਿਜ਼ਨ ਦੇਖਣਾ ਪਸੰਦ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਹੇਠ ਲਿਖੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਯਾਦ ਰੱਖੋ:

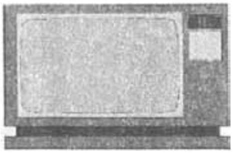

- ਟੈਲੀਵਿਜ਼ਨ ਤੋਂ ਤਿੰਨ ਮੀਟਰ (ਅੱਠ ਤੋਂ ਦਸ ਫੁੱਟ) ਦੀ ਦੂਰੀ ‘ਤੇ ਬੈਠਣਾ ਸਭ ਤੋਂ ਠੀਕ ਹੈ।
- ਉਸ ਕਮਰੇ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਜ਼ਿਆਦਾ ਰੌਸ਼ਨੀ ਹੋਣਾ ਚੰਗਾ ਹੈ।
- ਧਿਆਨ ਰੱਖੋ ਕਿ ਟੀ ਵੀ ਸਕਰੀਨ ਤੋਂ ਰੌਸ਼ਨੀ ਸਿੱਧੀ ਤੁਹਾਡੀ ਅੱਖ ਵਿੱਚ ਨਾ ਪਵੇ।
- ਧਿਆਨ ਰੱਖੋ ਕਿ ਟੀ ਵੀ ਸਕਰੀਨ ਤੋਂ ਰੋਸ਼ਨੀ ਸਿੱਧੀ ਤੁਹਾਡੀ ਅੱਖ ਵਿੱਚ ਨਾ ਪਵੇ।
- ਉਸ ਟੀ ਵੀ ਸਕਰੀਨ ਨੂੰ ਨਾ ਦੇਖੋ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਤਸਵੀਰ ਧੁੰਦਲੀ ਹੋਵੇ, ਹਿਲ ਰਹੀ ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਖ਼ਰਾਬ ਹੋਵੇ।
- ਟੀ ਵੀ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਦੇਖਦੇ ਹੋਏ ਥੋੜ੍ਹੀ-ਥੋੜ੍ਹੀ ਦੇਰ ਬਾਅਦ ਆਪਣੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਨੂੰ ਅਰਾਮ ਦਿਓ। ਉਦਾਹਰਨ ਦੇ ਤੌਰ ‘ਤੇ ਉੱਠ ਕੇ ਕਮਰੇ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਜਾ ਕੇ ਕੁਝ ਹੋਰ ਕੰਮ ਕਰੋ ਜਿਵੇਂ ਚਾਹ ਬਣਾਉਣਾ ਆਦਿ।

ਕੰਪਿਊਟਰ ਵਿਜ਼ਨ ਸਿਨਡ੍ਰੋਮ (ਸੀ ਵੀ ਐਸ)

ਇਨਸਾਨ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਘੰਟਿਆਂ ਬੱਧੀ ਕੰਪਿਊਟਰ ਨੂੰ ਦੇਖਣ ਲਈ ਨਹੀਂ ਬਣਾਈ ਗਈ। ਕੰਪਿਊਟਰ ਦਾ ਇਸਤੇਮਾਲ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਵਧਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਕੰਪਿਊਟਰ ਦੀ ਸਕਰੀਨ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਬੈਠ ਕੇ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦਾ ਸਮਾਂ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਵਧਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਾਨੂੰ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸਫਲ, ਨਿਪੁੰਨ ਅਤੇ ਅਮੀਰ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ ਪਰ ਇਸ ਦੀ ਕੀਮਤ ਹੈ—ਕੰਪਿਊਟਰ ਵਿਜ਼ਨ ਸਿਨਡ੍ਰੋਮ (ਛਡਸ਼)।

ਕੰਪਿਊਟਰ ਦਾ ਜ਼ਿਆਦਾ ਇਸਤੇਮਾਲ ਜਾਂ ਕੰਪਿਊਟਰ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਕੰਮਾਂ ਦੇ ਕਾਰਨ ਅੱਖਾਂ ਉੱਤੇ ਬਾਰ-ਬਾਰ ਜ਼ੋਰ ਪੈਣ ਨਾਲ ਅੱਖਾਂ ਅਤੇ ਨਜ਼ਰ ਦੀਆ ਪਰੇਸ਼ਾਨੀਆਂ ਨੂੰ ਸੀ ਵੀ ਐਸ (ਛਡਸ਼) ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।

ਸੀ ਵੀ ਐਸ ਦੇ ਲੱਛਣ :

1. ਅੱਖਾਂ ‘ਤੇ ਦਬਾਅ
2. ਧੁੰਦਲਾ ਦਿਖਾਈ ਦੇਣਾ
3. ਚੱਕਰ ਜਾਂ ਉਲਟੀ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ
4. ਸਿਰ ਦਰਦ
5. ਲਾਲ ਜਾਂ ਸੁੱਕੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਜਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਜਲਣ
6. ਦੂਰ ਦੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦੇਖਣ ਵਿੱਚ ਵਧੇਰੇ ਕਠਿਨਾਈ ਹੋਣਾ
7. ਰੰਗਾਂ ਨੂੰ ਦੇਖਣ ਵਿੱਚ ਬਦਲਾਅ
8. ਦੂਰ ਅਤੇ ਨੇੜੇ ਦੇਖਣ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਦੇਰ ਲੱਗਣਾ
9. ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਥਕਾਵਟ
10. ਗਰਦਨ, ਮੋਢੇ ਅਤੇ ਪਿੱਠ ਦਾ ਦਰਦ
11. ਕਦੀ-ਕਦੀ ਇੱਕ ਦੇ ਦੋ ਦਿਖਾਈ ਦੇਣਾ

ਕੰਪਿਊਟਰ ਸੰਬੰਧੀ ਸਾਰੀਆ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਨੂੰ ਰੋਕਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਠੀਕ ਵੀ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ADVANCE LUDHIANA EYE HOSPITAL
Near Doaba Petrol Pump, Amritsar Road, Kapurthala
Phone: 01822-224799, 98143-31433

ਕੰਪਿਊਟਰ ਵੀਜ਼ਨ ਸਿਨਡ੍ਰੋਮ (ਸੀ ਵੀ ਐਸ) ਤੋਂ ਬਚਣ ਲਈ ਦਸ ਸੁਝਾਅ:

ਸਕਰੀਨ ਦੀ ਦੂਰੀ: ਘੱਟ ਤੋਂ ਘੱਟ 25 ਇੰਚ

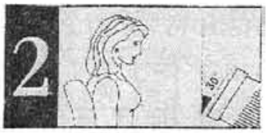

ਸਕਰੀਨ ਦਾ ਤਿਰਛਾਪਨ: ਸਕਰੀਨ ਦਾ ਉੱਪਰਲਾ ਹਿੱਸਾ ਹੇਠਲੇ ਹਿੱਸੇ ਤੋਂ ਥੋੜ੍ਹਾ ਜਿਹਾ ਵੱਧ ਦੂਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

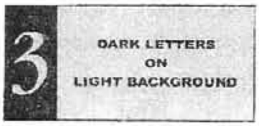

ਸਕਰੀਨ: ਸਫੇਦ ਸਕਰੀਨ ਉੱਤੇ ਕਾਲੇ ਅੱਖਰ ਹੋਣਾ ਬੇਹਤਰ ਹੈ।

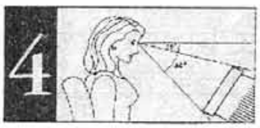

ਉਚਾਈ ਤੋਂ ਦੇਖਣ ਦਾ ਪੱਧਰ (Vertical Location): ਸਕਰੀਨ ਨੂੰ ਦੇਖਣ ਦੀ ਥਾਂ, ਅੱਖਾਂ ਦੀ ਸੇਧ ਤੋਂ 15º-50º ਹੇਠਾਂ ਹੋਣੀ ਚਾਹਦਿੀ ਹੈ।

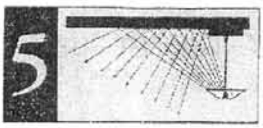

ਰੌਸ਼ਨੀ: ਛੱਤ ਤੋਂ ਤੇਜ਼ ਰੌਸ਼ਨੀ ਨਹੀਂ ਪੈਣੀ ਚਾਹੀਦੀ। ਪਰਦਿਆਂ, ਸ਼ੇਡਾਂ ਅਤੇ ਬਲਾਇੰਡਾਂ ਦਾ ਇਸਤੇਮਾਲ ਕਰੋ ਤਾਂ ਜੋ ਬਾਹਰ ਦੀ ਰਸ਼ਨੀ ਰੁਕਾਵਟ ਨਾ ਪਾਵੇ।

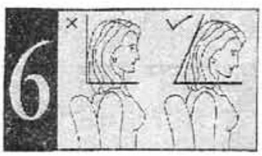

ਗਰਦਨ ਕਿਵੇਂ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ: ਕੁਰਸੀ ਵਿੱਚ ਹੱਥ ਰੱਖਣ ਦੀ ਥਾਂ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਗਰਦਨ ਥੋੜ੍ਹਾ ਜਿਹਾ ਝੁਕਾ ਕੇ ਰੱਖਣ ਨਾਲ ਥਕਾਵਟ ਘੱਟ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

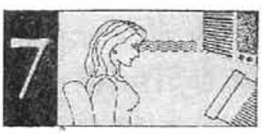

ਏ.ਸੀ. ਦੀ ਹਵਾ ਦਾ ਰੁਖ਼: ਏ ਸੀ ਦੀ ਹਵਾ ਨੂੰ ਸਿੱਧਾ ਅੱਖਾਂ 'ਤੇ ਨਾ ਪੈਣ ਦਿਓ।

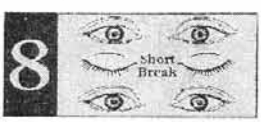

ਅਰਾਮ: ਹਰ ਵੀਹ ਮਿੰਟ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਥੋੜ੍ਹਾ ਅਰਾਮ ਕਰੋ।

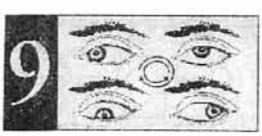

ਕਸਰਤ: ਥੋੜ੍ਹੇ-ਥੋੜ੍ਹੇ ਸਮੇਂ ਬਾਅਦ ਪਲਕ ਝਪਕਾਓ। ਅੱਖਾਂ ਬੰਦ ਕਰ ਕੇ ਗੋਲ ਦਾਇਰੇ ਵਿੱਚ ਘੁਮਾਓ। ਪਹਿਲੇ ਘੜੀ ਦੀ ਸੂਈਆਂ ਵਾਂਗ ਤੇ ਫਿਰ ਉਲਟਾ। ਲੰਮਾ ਸਾਹ ਲਵੋ ਅਤੇ ਸਾਹ ਛਡਦੇ ਹੋਏ ਅੱਖਾਂ ਖੋਲ੍ਹੋ।

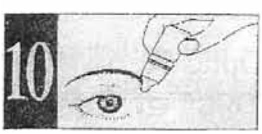

ਆਪਣੇ ਡਾਕਟਰ ਦੀ ਸਲਾਹ ਅਨੁਸਾਰ ਅੱਖਾਂ ਗਿੱਲੀਆਂ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਡ੍ਰਾਪਸ ਦਾ ਇਸਤੇਮਾਲ ਕਰੋ।

Dr. RAMESH SUPERSPECIALITY EYE & LASER CENTRE
Raikot Branch
Aggarwal Market, Near Old Bus Stand, Raikot, Ludhiana. Ph.: 01624-264433

ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮਹਾਂ ਦਾਨ - ਪਿੰਡ ਭੱਠਾ ਧੂਹਾ ਹੈ ਮਹਾਨ

ਸ. ਨਛੱਤਰ ਸਿੰਘ, ਸਾਬਕਾ ਸਰਪੰਚ, ਪਿੰਡ ਭੱਠਾ ਧੂਹਾ ਅਤੇ ਪਿੰਡ ਦੇ ਹੋਰ ਪਤਵੰਤੇ ਸੱਜਣ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਮੀਡੀਆ ਇੰਚਾਰਜ ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਪਮਾਲ ਨੂੰ ਪਿੰਡ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਵਿੱਚ ਪਾਏ ਯੋਗਦਾਨ ਬਾਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ।

ਪਿੰਡ ਭੱਠਾ ਧੂਹਾ ਲੁਧਿਆਣਾ ਤੋਂ ਸਿਧਵਾਂ ਬੇਟ ਨੂੰ ਜਾਣ ਵਾਲੀ ਸੜਕ ਤੇ ਲੁਧਿਆਣਾ ਤੋਂ 18 ਕਿਲੋਮੀਟਰ ਤੇ ਸਥਿਤ ਹੈ। ਇਹ ਪਿੰਡ 1993 ਤੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਵਿਚ ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਮਨਸੂਰਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਰਹਿਨੁਮਾਈ ਹੇਠ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਹੁਣ ਤੱਕ ਇਸ ਪਿੰਡ ਵਲੋਂ ਸਾਬਕਾ ਸਰਪੰਚ ਸ. ਨਛੱਤਰ ਸਿੰਘ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਸਦਕਾ 26 ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਹੋ ਚੁੱਕੀਆਂ ਹਨ।

ਸ. ਨਛੱਤਰ ਸਿੰਘ, ਸਾਬਕਾ ਸਰਪੰਚ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਸ. ਦਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ, ਸਾਬਕਾ ਸਰਪੰਚ, ਸ. ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ, ਸਾਬਕਾ ਪੰਚ, ਸ. ਕੁਲਵੰਤ ਸਿੰਘ ਪ੍ਰਧਾਨ, ਸ. ਸ਼ਰਨਜੀਤ ਸਿੰਘ ਸਾਹਨੀ, ਸ. ਕਰਮ ਸਿੰਘ ਬੰਗੜ, ਸ. ਗੁਰਪਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਗੁਰੀ ਅਤੇ ਸ. ਅਮਰ ਸਿੰਘ ਆਦਿ ਪਿੰਡ ਦੇ ਪਤਵੰਤੇ ਸੱਜਣ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮੁਹਿੰਮ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਬੀਬੀ ਬਲਵਿੰਦਰ ਕੌਰ ਅਤੇ ਬੀਬੀ ਅਮਰਜੀਤ ਕੌਰ ਵੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਨ ਲਈ ਮ੍ਰਿਤਕਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਵਾਰਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕਰਦੀਆਂ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ।

ਪਿੰਡ ਭੱਠਾ ਧੂਹਾ ਦੇ ਪਤਵੰਤੇ ਸੱਜਣਾ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਨਾਲ ਦਾਨ ਹੋਈਆਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾ ਵੇਰਵਾ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੈ:-

ਸਾਬਕਾ ਸਰਪੰਚ ਸ. ਨਛੱਤਰ ਸਿੰਘ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਪਿੰਡ ਭੱਠਾ ਧੂਹਾ ਵਿਚ ਇਕ 7 ਸਾਲਾ ਬੱਚੀ ਦੀ ਬੱਸ ਐਕਸੀਡੈਂਟ ਵਿਚ ਮੌਤ ਹੋ ਗਈ ਸੀ। ਉਸ ਬੱਚੀ ਦੇ ਪ੍ਰਵਾਰ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕਰਕੇ ਬੱਚੀ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਵਾਈਆਂ।

ਬੰਗੜ ਪ੍ਰਵਾਰ ਦੀ 40 ਸਾਲਾ ਸਵਰਨਜੀਤ ਕੌਰ ਪਤਨੀ ਨੇਕ ਸਿੰਘ ਦੀ ਮੌਤ ਹੋ ਗਈ ਅਤੇ ਸਸਕਾਰ ਕਰਨ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਸੀ ਤਾਂ ਪ੍ਰਵਾਰ ਨੂੰ ਸਮਝਾਇਆ ਕਿ ਇਸ ਦੀਆਂ ਦਾਨ ਹੋਈਆਂ ਅੱਖਾਂ ਨਾਲ ਦੋ ਨੇਤਰਹੀਣਾਂ ਨੂੰ ਨਜ਼ਰ ਨਸੀਬ ਹੋ ਜਾਵੇਗੀ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਵਾਈਆਂ।

ਸ. ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ ਸਰੂ ਦੀ ਲੜਕੀ ਪਰਮਜੀਤ ਕੌਰ (ਨੱਕੀ) ਜੋ 16 ਸਾਲ ਦੀ ਸੀ ਦੀ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਮੌਤ ਹੋ ਗਈ ਤਾਂ ਸ. ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ ਨੇ ਆਪਣੀ ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਘਰ ਲਿਜਾਣ ਦੀ ਬਜਾਏ ਸਿੱਧਾ ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਦੇ ਹਸਪਤਾਲ ਲਿਜਾ ਕੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕੀਤੀਆਂ।

ਸੂਬੇਦਾਰ ਲਾਲ ਸਿੰਘ ਪੜੈਣ ਵਾਲੇ ਦੀ ਲੜਕੀ ਜਿਸ ਦੀ ਉਮਰ 20 ਸਾਲ ਸੀ ਦੀ ਅਚਾਨਕ ਮੌਤ ਹੋ ਗਈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਵਾਰ ਨੂੰ ਸਮਝਾਇਆ ਅਤੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕੀਤੀਆਂ।

ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਰਪੰਚ ਨਛੱਤਰ ਸਿੰਘ ਦੇ ਮਾਮੇ ਦੇ ਲੜਕੇ ਇਆਲੀ ਖੁਰਦ ਦੇ 40 ਸਾਲਾ ਬਲੌਰ ਸਿੰਘ, ਜਿਸ ਦੀ ਮੈਡੀਸਿਟੀ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਮੌਤ ਹੋ ਗਈ ਸੀ ਦੀਆਂ ਵੀ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਵਾਈਆਂ।

ਸਰਪੰਚ ਬਲਵੀਰ ਸਿੰਘ ਬਾੜੇਵਾਲ ਡੋਗਰਾਂ ਦੀ ਅਚਾਨਕ ਮੌਤ ਹੋ ਗਈ। ਜਿਸ ਦੀ ਉਮਰ ਕੇਵਲ 21 ਸਾਲ ਦੀ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਵਾਰ ਤੇ ਬਹੁਤ ਵੱਡਾ ਕਹਿਰ ਹੋਇਆ ਸੀ ਅਤੇ ਸਸਕਾਰ ਦੀ ਸ਼ਮਸ਼ਾਨ ਘਾਟ ਵਿਚ ਬਿਲਕੁਲ ਤਿਆਰੀ ਸੀ ਤਾਂ ਨਛੱਤਰ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਸ਼ਰਨਜੀਤ ਸਾਹਨੀ ਨੇ ਮੌਕੇ ਤੇ ਜਾਕੇ ਸਸਕਾਰ ਰੋਕ ਕੇ ਸਮਝਾਇਆ ਅਤੇ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਵਾਈਆਂ।

ਸ. ਨਛੱਤਰ ਸਿੰਘ ਸਰਪੰਚ ਪਿੰਡ ਭੱਠਾ ਧੂਹਾ ਅਤੇ ਸ. ਅਮਰ ਸਿੰਘ ਦੇ ਪਿਤਾ 87 ਸਾਲਾ ਸ. ਸੁਰਜਨ ਸਿੰਘ 16 ਸਤੰਬਰ 2015 ਨੂੰ ਰਘੂਨਾਥ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਸੁਰਗਵਾਸ ਹੋ ਗਏ ਜੋ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਵੀ ਪਰਿਵਾਰ ਨੇ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਖੇ ਹੀ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਨੂੰ ਦਾਨ ਕੀਤੀਆਂ।

ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਆਈ ਸਰਜਨ ਡਾ. ਰਮੇਸ਼ ਐਮ.ਡੀ. (ਸਟੇਟ ਅਵਾਰਡੀ) ਵਲੋਂ ਹੋਰਾਂ ਪਿੰਡਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਅਪੀਲ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਪਿੰਡ ਭੱਠਾ ਧੂਹਾ ਵਲੋਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਮੁਹਿੰਮ ਵਿਚ ਪਾਏ ਜਾ ਰਹੇ ਯੋਗਦਾਨ ਤੋਂ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਲੈ ਕੇ ਵੱਧ ਤੋਂ ਵੱਧ ਅੱਖ ਦਾਨ ਕਰਵਾਉਣ ਤਾਂ ਜੋ ਦੇਸ਼ ਵਿਚੋਂ ਨੇਤਰਹੀਣਤਾ ਦੂਰ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕੇ।

ਸ. ਨਛੱਤਰ ਸਿੰਘ ਸਾਬਕਾ ਸਰਪੰਚ ਪਿੰਡ ਭੱਠਾ ਸੂਹਾ ਵਲੋਂ ਇਲਾਕਾ ਨਿਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਬੇਨਤੀ ਹੈ ਕਿ ਜੇਕਰ ਕਿਸੇ ਪ੍ਰਵਾਰ ਨੇ ਮ੍ਰਿਤਕ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਕਰਵਾਉਣੀਆਂ ਹੋਣ ਤਾਂ ਉਹ ਮੋਬਾਈਲ ਨੰ: 81988-00672 ਤੇ ਸੰਪਰਕ ਕਰਨ।

ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਪਮਾਲ, ਸਹਿ ਸੰਪਾਦਕ

नेत्रदान मरके भी ज़िंदा रहने का अनमोल वरदान है।

ਪਤਿਤਪੁਣੇ ਤੇ ਨਸ਼ਿਆਂ ਖ਼ਿਲਾਫ ਜ਼ੋਰਦਾਰ ਪ੍ਰਚਾਰ ਹੈ

ਫਿਲਮ 'ਸੋਚ' The Thinking (ਸੋਚ ਦੀ ਥਿੰਕਿੰਗ)

ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਜਦੋਂ ਤੋਂ ਹੋਂਦ ਵਿਚ ਆਇਆ ਹੈ ਆਪਣੇ ਗੁਣਾਂ ਸਦਕਾ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ 'ਚ ਚਰਚਾ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਇਸ ਧਰਤੀ ਤੇ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਗੁਰੂਆਂ, ਪੀਰਾਂ, ਪੈਗੰਬਰਾਂ, ਸੂਫੀਆਂ ਤੇ ਸ਼ਾਇਰਾਂ ਨੇ ਇਸ ਦੀ ਖੂਬਸੂਰਤੀ ਨੂੰ ਚਾਰ ਚੰਨ ਲਾਏ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਸਮਾਜਿਕ ਕੁਰੀਤੀਆਂ ਖ਼ਿਲਾਫ ਲੋਕਾਈ ਨੂੰ ਜਾਗਰੂਕ ਕਰਨ ਲਈ ਸਿੱਖੀ ਚਲਾਈ ਤੇ ਦਸਮ ਪਿਤਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਖਾਲਸਾ ਪੰਥ ਸਾਜ ਕੇ, ਲੋਕਾਈ ਨੂੰ ਹੱਕ ਸੱਚ ਲਈ ਜੂਝਣ ਦਾ ਦਾਈਆ ਬਖਸ਼ਿਆ।

ਪਰ ਅਫਸੋਸ। ਇਸ ਅਮੀਰ ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦੇ ਦੋਖੀਆਂ ਤੋਂ ਇਸ ਦੀ ਖੂਬਸੂਰਤੀ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਨਾ ਹੋਈ ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਇਸ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਵਿਚ ਮੋਰੀਆਂ ਕਰਨੀਆਂ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤੀਆਂ। ਇਥੋਂ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਬਹਾਦਰੀ, ਸਿਰੜ ਤੇ ਮਿਹਨਤ ਕਰਨ ਦੇ ਜਜਬੇ ਨੂੰ ਘੁਣ ਲਾਉਣ ਲਈ ਨਸ਼ਿਆਂ ਦਾ ਜਾਲ ਵਿਛਾਉਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਅੱਜ ਇਹਨਾਂ ਦੋਖੀਆਂ ਦੇ ਮੰਦੇ ਇਰਾਦਿਆਂ ਦਾ ਹੀ ਸਿੱਟਾ ਏ ਜੋ ਪੰਜਾਬ ਪਤਿਤਪੁਣੇ ਤੇ ਨਸ਼ਿਆਂ ਦੀ ਦਲਦਲ ਵਿਚ ਧਸਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਦਾ ਕਿਰਦਾਰ ਜਿਸ ਤੇ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਮਾਣ ਕਰਦੀ ਸੀ, ਅੱਜ ਗਿਰਾਵਟ ਦੀਆਂ ਡੂੰਘੀਆਂ ਖੱਡਾਂ ਵਿਚ ਡਿੱਗਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਬੁਰਾਈਆਂ ਆਪਣੇ ਅਰੂਜ ਤੇ ਪਹੁੰਚ ਗਈਆਂ ਨੇ।

ਇਸ ਨਿਰਾਸ਼ਾ ਭਰੇ ਆਲਮ ਨੂੰ ਵੇਖ ਕੇ ਅੱਜ ਹਰ ਸੁਹਿਰਦ ਪੰਜਾਬੀ ਚਿੰਤਾ ਦੇ ਸਮੁੰਦਰ 'ਚ ਗੋਤੇ ਖਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸੋ ਅੱਜ ਲੋੜ ਹੈ ਪੰਜਾਬੀ ਸਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਇਹਨਾਂ ਦੋਖੀਆਂ ਦੀ ਬਦਨੀਤੀ ਤੋਂ ਬਚਾਉਣ ਦੀ।

ਅੱਜ ਲੋੜ ਹੈ ਇਹਨਾਂ ਸਮਾਜਿਕ ਬੁਰਾਈਆਂ ਖ਼ਿਲਾਫ ਜੋਰਦਾਰ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਨ ਦੀ ਤੇ ਏਸੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਦੇ ਮਕਸਦ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਬਣਾਈ ਗਈ ਹੈ ਪੰਜਾਬੀ ਫਿਲਮ ਸੋਚ "ਦੀ ਥਿੰਕਿੰਗ'।

ਫਿਲਮ 'ਸੋਚ' ਉਹਨਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸੋਚ ਨੂੰ ਬਦਲ ਦੇਵੇਗੀ ਜੋ ਇਹ ਸੋਚਦੇ ਨੇ ਕਿ ਫਿਲਮਾਂ ਸਿਰਫ ਲੱਚਰਪੁਣਾ ਹੀ ਪਰੋਸਦੀਆਂ ਨੇ। ਇਹ ਫਿਲਮ ਇਹ ਸਾਬਤ ਕਰਨ ਦੇ ਸਮਰੱਥ ਹੈ ਕਿ ਜੇ ਚੰਗੇ ਵਿਸ਼ੇ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਫਿਲਮ ਬਣਾਈ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਸਮਾਜਿਕ ਬੁਰਾਈਆਂ ਖ਼ਿਲਾਫ ਜੋਰਦਾਰ ਪ੍ਰਚਾਰ ਦਾ ਸਾਧਨ ਵੀ ਸਾਬਤ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਫਿਲਮ 'ਸੋਚ' ਉਹ ਨੌਜੁਆਨ ਸਿੱਖ ਤਬਕਾ ਜੋ ਫੈਸ਼ਨ ਦੀ ਅੰਨੀ ਦੌੜ ਵਿਚ ਬਿਨਾਂ ਸੋਚੇ ਸਮਝੇ ਬਿਨਾ ਆਪਣੇ ਇਤਿਹਾਸ ਨੂੰ ਜਾਣਿਆਂ ਪਤਿਤ ਹੋ ਰਿਹਾ ਏ ਨੂੰ ਸੋਚਣ ਲਈ ਮਜਬੂਰ ਕਰੇਗੀ।

ਫਿਲਮ 'ਸੋਚ' ਇਸ ਗੱਲ ਤੇ ਵੀ ਜੋਰ ਦੇਵੇਗੀ ਕਿ ਇਕ ਗੁਰਸਿੱਖ ਦੀ ਸੋਚ ਕਿਹੋ ਜਿਹੀ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਏ ਤੇ ਧਰਮ ਤੇ ਸਮਾਜ ਪ੍ਰਤੀ ਉਸਦਾ ਕੀ ਨਜ਼ਰੀਆ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਫਿਲਮ 'ਸੋਚ' ਕੌਮ ਦੇ ਨੇਤਾਵਾਂ, ਵਿਚਵਾਨਾਂ ਤੇ ਰਹਿਨੁਮਾਵਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਫਰਜ਼ਾਂ ਤੋਂ ਜਾਣੂ ਕਰਵਾਏਗੀ।

ਫਿਲਮ 'ਸੋਚ' ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਵੀ ਆਪਣੀ ਔਲਾਦ ਦੇ ਪਾਲਣ ਪੋਸਣ ਪ੍ਰਤੀ ਵੀ ਸੁਚੇਤ ਕਰੇਗੀ। ਫਿਲਮ 'ਸੋਚ' ਦੇ ਨਿਰਮਾਤਾ ਹਨ ਸ: ਅਮਰਜੀਤ ਸਿੰਘ ਕੰਗ ਤੇ ਸਤੀਸ਼ ਨਈਅਰ, ਸ; ਸੁਖਜਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਰੰਧਾਵਾ 'ਤੇ ਕਾਰਜਕਾਰੀ ਨਿਰਮਾਤਾ ਹੈ ਰਵੀ ਦੇਵਗਨ, ਕਲਾਕਾਰ ਸੁਖਬੀਰ ਸਿੰਘ, ਹਰਪਾਲ ਸਿੰਘ, ਹਰਦੀਪ ਗਿੱਲ, ਪੂਨਮ, ਗੁਰਪ੍ਰਤਾਪ ਸਿੰਘ, ਸਤਵੰਤ ਬੱਲ, ਦਲੇਰ ਮਹਿਤਾ, ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ, ਹਰਬਿਲਾਸ ਸੰਘਾ, ਸਵਰਨ ਸਿੰਘ, ਅਸ਼ੋਕ ਸਾਨ, ਅਸ਼ੋਕ ਸਲਵਾਨ, ਮੁਨੀਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਤੇ ਅਮਰਜੀਤ ਸਿੰਘ, ਕੈਮਰਾਮੈਨ ਕੁਲਦੀਪ ਪ੍ਰਮਾਰ ਤੇ ਸੰਗੀਤ ਦਿੱਤਾ ਹੈ, ਹਰਿੰਦਰ ਸੋਹਲ ਨੇ ਗੀਤ ਤੇ ਸਬਦ ਗਾਏ ਨੇ, ਲਾਭ ਜੰਜੂਆ, ਸਾਬਰ ਕੋਟੀ, ਰੰਜਨਾ, ਹਰਿੰਦਰ ਸੋਹਲ ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ ਨੇ

ਫਿਲਮ ਦੇ ਲੇਖਕ ਤੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ਕ ਨੇ ਰੰਗਮੰਚ, ਦੂਰ ਦਰਸ਼ਨ ਰੇਡੀਓ ਤੇ ਫਿਲਮ ਦੇ ਨਾਮਵਰ ਅਦਾਕਾਰ ਤੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ਕ ਸੁਖਬੀਰ ਸਿੰਘ, ਫਿਲਮ 'ਸੋਚ' ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਵਗ ਰਹੇ ਨਸ਼ਿਆਂ ਦੇ ਛੇਵੇਂ ਦਰਿਆ ਤੋਂ ਵੀ ਨੌਜਵਾਨੀ ਨੂੰ ਜਾਗਰੂਕ ਕਰੇਗੀ।

ਫਿਲਮ ਸੋਚ ਦੇ ਬੈਨਰ ਏ ਐਮ ਆਰ ਫਿਲਮ ਤੇ ਮੈਥ ਮੂਵੀਜ ਵਲੋਂ ਤਿਆਰ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਫਿਲਮ ਸੈਂਸਰ ਪਾਸ ਹੋ ਚੁੱਕੀ ਹੈ ਜਲਦੀ ਹੀ ਸਿਨੇਮਾ ਘਰਾਂ ਦਾ ਸ਼ਿੰਗਾਰ ਬਣੇਗੀ। ਇਹ ਫਿਲਮ ਨਿਰੋਲ ਗੁਰਸਿੱਖੀ ਪ੍ਰਚਾਰ ਨਸ਼ਿਆਂ ਦੇ ਖ਼ਿਲਾਫ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਨ ਦੇ ਮਕਸਦ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਬਣਾਈ ਗਈ ਹੈ। ਜਿਸ ਵਿਚ ਹੋਰ ਵੀ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਸਮਾਜਿਕ ਕੁਰੀਤੀਆਂ ਬਾਰੇ ਚਾਨਣਾ ਪਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ।

ਰਵੀ ਦੇਵਗਨ
ਸੰਚਾਲਕ, ਬਿਰਧ ਆਸ਼ਰਮ
ਬਰਨਾਲਾ ਰੋਡ, ਰਾਏਕੋਟ (ਲੁਧਿਆਣਾ)

Make someone's future bright, donate your sight.

नेत्रदान संस्था नवांशहर की रिपोर्ट

आई डोनेशन एसोसिएसन नवांशहर तथा जिला स्वास्थ्य विभाग, शहीद भगत सिंह नगर की ओर से मृत्योपरांत नेत्रदान जागरूकता पखवाड़ा 25 अगस्त से 3 सितम्बर तक बड़ी ही लगन एवं अत्यंत उत्साह के साथ मनाया गया। इस जागरूकता पखवाड़े का आरम्भ जिला उपायुक्त स. अमर प्रताप सिंह विर्क ने अपना नेत्रदान शपथ फार्म भर कर किया। इस अवसर पर जिला उपायुक्त ने नेत्रदान संस्था के प्रधान डॉ. जे. डी. वर्मा व महासचिव रतन कुमार जैन से नेत्रदान की प्रक्रिया एवं नेत्रदान संस्था की कार्यप्रणाली से संबंधित जानकारी प्राप्त की। उन्होंने नेत्रदान अभियान में संस्था का पूरा सहयोग करने का आश्वासन दिया। इस मुहिम के पहले दिन 25 सितम्बर को जिला उपायुक्त कार्यालय के कर्मचारियों तथा जिला रैड क्रॉस सोसायटी के कर्मचारियों ने नेत्रदान का संकल्प लेते हुए नेत्रदान के फार्म भरे।

नेत्रदान पखवाड़े के अंतर्गत 28 सिमम्बर को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सुज्जों में सिनियर मेडिकल ऑफिसर रशपाल सिंह के सहयोग से सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार में नेत्रदान संस्था के महासचिव रतन कुमार जैन, निदेशक यशपाल सिंह हाफिजावादी, उप–प्रधान जोगा सिंह साधड़ा, वरिष्ठ स्वास्थ्य अधिकारी रशपाल सिंह और डॉ. गुलजार चंद ने उपस्थित जनसमूह को नेत्रदान की जानकारी दी तथा नेत्रदान के लिए प्रेरित किया।

4 सितम्बर को सिविल अस्पताल बंगा की वरिष्ठ स्वास्थ्य अधिकारी रेनू सूद के सहयोग से नेत्रदान संस्था नवांशहर ने बाबा गोला सिनियर सैंकडरी स्कूल बंगा में सेमिनार आयोजित किया। इस अवसर पर नेत्र विशेषज्ञ डॉ. नवदीप कौर, प्रिंसीपल हरदीप अरोड़ा तथा संस्था के गणमान्य सदस्यों ने छात्रों को आँखों की सँभाल और नेत्रदान की जानकारी देकर उन्हें जागरूक भी किया।

4 सितम्बर को ही अपरान्ह प्रकाश मॉडल सिनियर सैंकडरी स्कूल, राहों रोड़, नवांशहर में नेत्रदान पर सेमिनार किया गया। इस आयोजन में संस्था के सदस्यों रतन कुमार जैन, यशपाल सिंह हाफिजाबादी, जोगा सिंह साहदड़ा, सुभाष अरोड़ा एवं स्कूल के प्रिंसीपल सुखराज सिंह ने विद्यार्थियों को नेत्रदान संबंधित जानकारी देकर प्रेरणा दी।

इस नेत्रदान पखवाड़े की अगली कड़ी स्वरूप 7 सितम्बर को बलाचौर के वरिष्ठ स्वास्थ अधिकारी सुनील पाठक के सहयोग से बाबा बलराज कॉलेज में समागम एवं सेमिनार किया गया। इस अवसर पर सुनील पाठक के अतिरिक्त नेत्र विशेषज्ञ डॉ. रेनू मित्तल, प्रोफेसर (डॉ.) पूनम तथा संस्था के अधिकारियों ने विद्यार्थियों को संबोधित कर उन्हें नेत्रदान के प्रति प्रकाश किरण फैलाने के लिए उत्साहित एवं प्रेरित किया। इस अवसर पर प्रोफेसर पूनम सहित कॉलेज के बहुत से छात्रों ने नेत्रदान का प्रणकर फार्म भरे।

नेत्रदान पखवाड़े के अंतिम दिन 8 सितम्बर को बी. एल.एम. गर्ल्ज कॉलेज, राहों रोड़ में समाप्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. अमरजीत कौर सिविल सर्जन, शहीद भगत सिंह नगर मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित हुई। डॉ. ज्ञान चंद, असिसटेंट सिविल सर्जन भी इस कार्यक्रम में विशेषतिथि के रूप में शामिल हुए। इस मौके पर मेहमानों ने नेत्रदान संस्था नवांशहर के प्रयासों की खूब सराहना की। मुख्य अतिथियों के अलावा, कृपाल सिंह, बी.एल.एम. गलर्ज कॉलेज कमेटी के महासचिव विनोद भारद्वाज, प्रिंसीपल मीनाक्षी शर्मा, नेत्रदान संस्था के प्रधान डॉ. जे.डी. वर्मा, उप–प्रधान जोगा सिंह साहदड़ा, निर्देशक यशपाल सिंह हाफिजावादी, महासचिव रतन कुमार जैन, कोषाध्यक्ष मास्टर हुस लाल, डॉ. अवतार सिंह, जे.एस. गिद्दा, श्री अशोक शर्मा, सुभाष अरोड़ा आदि ने अपने विचार व्यक्त कर समाज की कर्णधार छात्राओं को समाज से अंधकार के अभिशाप को दूर करने के लिए नेत्रदान की लौ जगाकर अंधे लोगों की जिंदगी को रंगीन बनाने के लिए प्रेरित किया। इस पखवाड़े के दौरान संस्था ने नवांशहर के विभिन्न अस्पतालों, कॉलेजों, स्कूलों आदि में नेत्रदान के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए फ्लैक्स भी लगवाए।

पुनरजोत गुलदस्ता ब्यूरो

ਨੇਤਰਦਾਨ ਸੰਸਥਾ ਨਵਾਂ ਸ਼ਹਿਰ ਵਲੋਂ ਆਯੋਜਿਤ 30ਵੇਂ ਕੌਮੀ ਅੱਖ ਦਾਨ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦੇ ਸਮਾਪਤੀ ਸਮਾਰੋਹ ਮੌਕੇ ਡਾ. ਅਮਰਜੀਤ ਕੌਰ ਸਿਵਲ ਸਰਜਨ ਨਵਾਂ ਸ਼ਹਿਰ ਅਤੇ ਡਾ. ਗਿਆਨ ਚੰਦ ਸਹਾਇਕ ਸਿਵਲ ਸਰਜਨ ਸੰਸਥਾ ਦੇ ਅਹੁਦੇਦਾਰਾਂ ਨਾਲ ਅੱਖਾਂ ਦਾਨ ਸਬੰਧੀ ਪ੍ਰਚਾਰ ਸਮਗਰੀ ਜਾਰੀ ਕਰਦੇ ਹੋਏ।

ਸ਼ਹੀਦ–ਏ–ਆਜ਼ਮ ਸ. ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਜਨਮ ਦਿਵਸ ਸਮਾਰੋਹ ਮੌਕੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਭਾਣਜੇ ਸ. ਜਗਮੋਹਨ ਸਿੰਘ ਪੁਨਰਜੋਤ ਆਈ ਬੈਂਕ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦਾ ਤ੍ਰੈ–ਭਾਸ਼ਈ ਮਾਸਿਕ ਮੈਗਜ਼ੀਨ ਪੁਨਰਜੋਤ ਗੁਲਦਸਤਾ ਰਿਲੀਜ਼ ਕਰਦੇ ਹੋਏ। ਤਸਵੀਰ ਵਿਚ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਮੈਨੇਜਿੰਗ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਡਾਕਟਰ ਰਮੇਸ਼ ਐਮ.ਡੀ. (ਸਟੇਟ ਅਵਾਰਡੀ) ਵੀ ਵਿਖਾਈ ਦੇ ਰਹੇ ਹਨ।

GET RID OF YOUR GLASSES

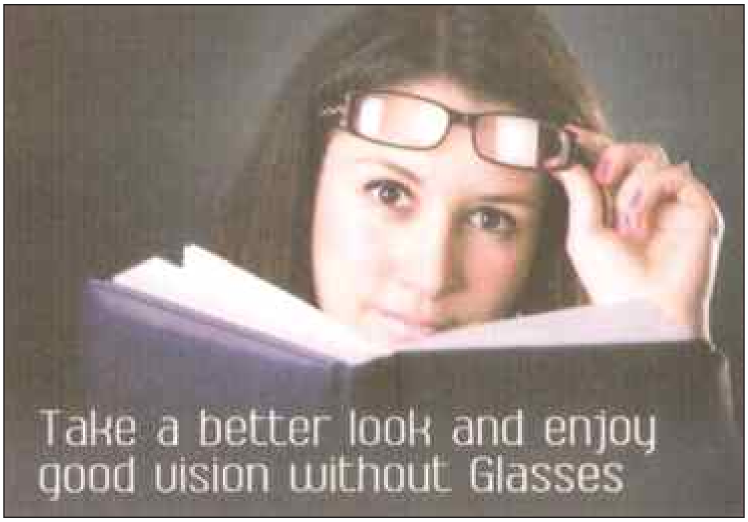

A Unique procedure personalized For your eyes.

Every eye differs from another in several ways. That's why we bring you the ZYOPTIX treatment, the personalized procedure that treat aberrations specific to your eyes.

ZYOPTIX™ Laser

ZYOPTIX™ from Technolas Perfect Vision is a superior treatment mode that frees your eyes from vision errors

- It is a unique Customized LASIK treatment, which has Wavefront and Aspheric LASIK to treat patients by reducing pre-existing aberrations and even the post LASIK higher order aberrations.
- The ZYOPTIX™ - Advance Eye Tracking Technology helps to track the movements of your eyes during treatment, achieving precision in laser treatment.
- An improved quality of vision, as compared to the quality achieved from other procedures.
- A treatment of better accuracy, safety and precision.

TECHNOLAS™
PERFECT VISION
www.technolaspv.com

To know more about the Lasik Laser the ZYOPTIX procedure.

Contact:

Dr. Ramesh Superspecialty Eye & Laser Centre
65 - A, B.R.S. Nagar, Ferozpur Road, Ludhiana.
Ph.: 0161-2464999, 9780015715, 9814331433
Email ID : rameshpunarjot@yahoo.com, www.punarjot.com, www.rameshvision.com

www.foilprintersludhiana.com